लोकोदय ग्रन्थमाला ग्रन्थाङ्क–१७२
सम्पादक एवं नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन



Lokodaya Series Title No 172

AADAMI KA ZAHAR

(Radio Dramas)

Lakshmikant Verma

Bharatiya Jnanpith

Publication

Second Edition 1969

Price Rs 4 00

शशि को,
जिसे मैं ने जब-जब
खोया है—
वह नये रूप में
मिली है।

अपनी बात



नाटक मूलत आदमी के व्यक्तित्व, विचार और व्यवहार के विरोधाभासो मे उस की अपनी निजी विवशताओ और सीमाओ के व्यंग्य की व्यंजना है। प्राय आदमी वही नही होता जो वह दीखता है, जो दीखता है वह भी नितान्त स्पष्ट सत्य होता है, जो स्पष्ट दीख पडने वाला सत्य है और जो अन्तर्मन के सूक्ष्म स्तरों का अर्जित करने वाला सत्य है, इन दोनो के सघर्ष, उत्कर्ष को मिला कर ही मानव आचरण, मर्यादा आदि का प्रारूप बनता है। नाटक इन्ही का रग प्रस्तुत कर के हमे आदमी के विभिन्न पक्षो, विभिन्न स्तरो और विरोधाभास तत्त्वो के साथ, उन की झाँकी दिखाता है। 'आदमी का जहर' के पात्र परिवार नाटको मे मुझे यही व्यंग्य की स्थिति ही प्रेरणा देता रही है। उस कथ्य मे कही-कही कुछ ऐसा है जो इन विरोधाभासो मे जन्मा हुआ सत्य —ऐसा सत्य कि हम उस से चाहे जितना भिन्न, वह हमारा अपना व्यंग्य है, जिस को हम से मुक्ति नही मिल पाती।

इस दृष्टि से यदि देखा जाय तो 'आदमी का जहर' एक विवादग्रस्त नाटक रहा है। कुछ मेरे सगे मित्रो को तो इस की नीयत अच्छी नहीं लगी थी कि यदि उन का वश चलता तो वे इस नाटक का आमन्त्रण ही न देते, साथ ही मुझे भी साहित्य के क्षेत्र मे निर्वासित करने मे कोई कसर न रखते। लेकिन इस नाटक मे व्यक्त जीवन-सत्य मेरी अपनी अनुभूतियों का तदस्य, भोगी हुई स्थितियो की अभिव्यक्ति है। 'आत्मगत यथार्थवाद' (पैटर्नेलिस्टिक ह्यूमनिज्म) और वस्तु-सत्य से उपजी हुई मानव दृष्टि [illegible]

भाम मे आज सम्पूर्ण मानवता ही टँगी हुई है। बहुत से ऐसे मूल्य हैं जो देखने मे तो मानवीय लगते है लेकिन उन के मूल में सम्पूर्ण अमानवीयता पनपा करती है। इन विरोधाभासो मे कभी-कभी आचरण मे मानव-हीनता पनपने लगती है। यह स्थिति ही नाटक लिखने की प्रेरणा देती है।

आज के सन्दर्भ में मैं समझता हूं कविता से अधिक प्रशस्त माध्यम नाटक का है। बहुत-से ऐसे तत्त्व आज विवशता की स्थिति मे काव्य के विषय-वस्तु बन गये है जब कि वे किसी अच्छे नाटक का सूत्रपात कर सकते थे। मेरे नाटक लिखने का एक यह भी कारण रहा है। जो व्यग्य और जिन स्थितियो की करुणा मुझे समय-समय पर द्रवित करती रही है वह किसी एक कविता में पूर्ण नही होती थी क्योंकि कविता की अपनी सीमाएँ है। परिवेश, अनुभूति और व्यजना का एक ही अश, एक ही विन्दु पर परिष्कृत हो कर कविता में व्यजित हो सकते है। इन की समग्रता से पूरे 'जीवन पैटर्न' को एक साथ उघार कर नही रखा जा सकता। यह काम कहानी भी नही कर सकती। इस का माध्यम तो नाटक ही हो सकता है। लेकिन नाटक की आज जो सीमाएँ रूढि रूप में बन गयी है उन को तोड कर ही आगे बढा जा सकता है। घिसे-पिटे त्रिकोणात्मक ढंग या सिनेमा की शैली में थोडा हास्य, थोडा रुदन, थोडा प्रणय और अन्त मे विवाह दिखला देने से काम नही चलेगा। इन से ऊपर उठ कर नाटक को एक नये सिरे से ग्रहण करना होगा तभी इस विधा के माध्यम से महत्त्वपूर्ण बातें कही जा सकती है अथवा इस विधा का पूर्ण लाभ उठाया जा सकता है।

तरह पालन करने वाले दारोगा की भाँति जब मैं आकाशवाणी के प्रस्तुतकर्ताओं को एक फरमाँबरदार नौकर की भाँति दोहराते सुनता हूँ तो हँसी आती है। शायद इस प्रकार की परिभाषाएँ बनाने वालो को यह नही मालूम है कि एक अच्छी ट्रेजेडी का भी उतना ही सुन्दर प्रभाव पड सकता है जितना कि एक सफल कॉमेडी का। दोनो की सफलता पर बहुत-सी बातें निर्भर होती हैं। कला के क्षेत्र मे इस प्रकार की दीवारें बनाना अज्ञानता का द्योतक है। और फिर केन्द्रीय कार्यालय के आधार पर पाण्डुलिपियो का सशोधन उस से भी ज्यादा नयी बात है। लेकिन यह मेरे एक ही नाटक के साथ शुरु शुरू मे हुआ। यदि बाद मे कभी और हुआ होता तो मेरे लिए शायद इन नाटको का लिखना भी सम्भव नही हो पाता। इस के लिए मैं अवश्य आकाशवाणी का आभारी हूँ कि उस घटना के बाद कम से कम मेरे साथ कोई और दुर्घटना नही हुई लेकिन यह प्रवृत्ति घातक है। कोई भी कृति कृतिकार के व्यक्तित्व की छाप ले कर चलती है। जो भी प्रस्तुतकर्ता उस का आदर नही करता वह कलाकार नही कहा जा सकता। फार्मूला नाटको का घिसा-पिटा नुस्खा, प्रेम को ले कर घिसे-पिटे त्रिकोणात्मक नाटको का प्रसारण अब बढ गया है। यद्यपि रेडियो नाटको का प्रस्तुतीकरण भी नाट्य-विशेषज्ञो द्वारा होता है, फिर भी यह मानना पडेगा कि रेडियो नाटको के स्तर मे दिन-पर-दिन एक प्रकार की गिरावट आ गयी है। प्रयोगो की सम्भावना तो नष्ट हो ही गयी है साथ ही नाटकीयता को केवल 'चमत्कार' और '[illegible]' के रूप मे अवतरित किया जाने लगा है।

मै ने रेडियो माध्यम की श्रेष्ठता और उस की क्षमता को स्वीकार किया है और फिर मै ने बहुत कम इस बात की कोशिश की है कि रेडियो के लिए लिखे गये नाटक को जबरदस्ती मच के लिए अभिनेय बना कर एक साथ दो शिकार करूँ। मच और रेडियो यह दोनो भिन्न है और जो नाटककार रेडियो के लिए रेडियो के माध्यम को स्वीकार नही करता अथवा मच के लिए मच की सीमाओ और सम्भावनाओ का पूरा प्रयोग नही करता वह गलती करता है। आज भी हिन्दी मे ऐसे बहुत-से लेखक है जो लिखते स्टेज के लिए है लेकिन प्रसारित करते है रेडियो पर या मूलत लिखते रेडियो के लिए है और फिर उस [illegible] [illegible] बना देते है—मै इन दोनो को अस्वीकार करता हूँ यद्यपि [illegible]

हत्या हो जाती है, किसी भी माध्यम का पूरा प्रयोग नही हो पाता । आधे मन से लिखे गये ऐसे नाटक प्राय मंच पर और रेडियो पर दोनो जगह असफल ही होते है । जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं ने सदैव इन दोनो माध्यमो को अलग-अलग रखा है । साथ ही मेरी दृष्टि यह भी रही है कि जिस माध्यम के लिए लिखा जाये उस का पूरा-पूरा उपयोग हो ही जाना चाहिए । इस दृष्टि से मैं ने जितने भी नाटक रेडियो के लिए लिखे हैं वे शायद मच के लिए वदले भी नही जा सकते ।

मैं ने इन नाटको मे नये प्रयोग या किसी नयी दिशा का सयोजन उस की आन्तरिक रचना के विरुद्ध नही किया है । जो भी है वह उस की अपनी रचना-शक्ति से ओत-प्रोत हो कर ही आ पाया है । आशा है यह रुचिसम्पन्न पाठको को अच्छा लगेगा ।

अन्त मे मैं भारतीय ज्ञानपीठ की अध्यक्षा श्रीमती रमा जैन तथा भाई लक्ष्मीचन्द्र जैन का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होने अपनी व्यस्तता के वावजूद इसे प्रकाशित करने का कष्ट किया है । यो तो आज सव कुछ छापने की सुविधा है किन्तु जैसा मैं चाहता था वैसा छापने की चेष्टा की गयी है इस के लिए मैं पुन आभारी हूँ । 'मैं सेतुमच के उन कलाकारो का भी आभारी हूँ जिन्होने पाण्डुलिपि तैयार करने में नाटको को ढूँढने, काटने, चिपकाने से ले कर उन को पाण्डुलिपि के रूप मे तयार करने में विशेष सहायता दी है ।

—लक्ष्मीकान्त वर्मा

क्रम

आदमी का ज़हर

पात्र

कामेश्वर

नरेन्द्र

डॉ० पाल

डॉ० अदारकर

भरद्वाज

मिसेज़ कल्पना

महादेव

शरन

महिम

शशि

वैद्य

[शरन का कमरा जिस में तीन व्यक्ति बैठे हैं। कमरा साधारण-सा। कुछ सोफ की ओर काठ की कुरसियाँ ही हैं, कमरे में एक रेडियो है, एक किनारे तिपाई पर फोन रखा हुआ है, ऐसा लगता है जैसे तीनों बैठे-बैठे ऊब गये हैं।]

कामेश्वर — न जाने कब आयेंगे हज़रत? मीटिङ् इसी लिए उन के घर पर बुलायी गयी थी, लेकिन वाह रे आदमी! ऐसा गायब हुआ जैसे गधे के सिर से सींग। जैसे हम लोगों को और कुछ काम ही नहीं है। सुनिए नरेन्द्र जी, भई मैं तो बाज आया तुम्हारी पशु-रक्षिणी-समिति से। अगर यही रवैया रहा तो मैं इस्तीफ़ा दे दूँगा। पशु-रक्षिणी-समिति के लिए मैं पशु बनने के लिए तैयार नहीं। बुला लिया घर पर और खुद का पता नहीं।

नरेन्द्र — और घर भी क्या है! यह काठ की बेडौल कुरसियाँ, ये गन्दे बच्चे, यह फूहड़ कमरा। डीसेन्सी तो है ही नहीं उस आदमी में! देखा नहीं है? ढीला-ढाला कुरता पहने, मुँह में पान दबाये, चप्पलें चटखाता घूमता है। साहित्यकार बनता है। पशु-रक्षिणी-समिति का संयोजक यदि हम लोगों ने न बनाया होता तो कौन पूछता? या कोई नामलेवा?

[फोन की घण्टी बजती है]

डॉ० पाल — हलो येस! पशु-रक्षिणी-समिति का ऑफ़िस यही है। डॉ० पाल स्पीकिङ्। हलो! हलो। अच्छा, अच्छा, कोई खास बात नहीं है। कौन शरनजी? उन हज़रत का क्या ठिकाना? बड़ा ही ग़ैर-ज़िम्मेदार आदमी है। जो आदमी खुद नहीं समझता उसे कौन समझा सकता है। खैर कोई बात नहीं, थैंक यू।

कामेश्वर — कौन-सा पाल साहब?

डॉ० पाल   मि० खन्ना थे। नरेन्द्र के बारे में पूछ रहे थे। कहते थे पाल, एक किताब के अनुवाद का वादा कर के गये थे लेकिन आज तक शक्ल नहीं दिखलाई पड़ी। एडवान्स भी ला गये हैं।

कामेश्वर · कैसे गैर-जिम्मेदार आदमी को पशु-रक्षिणी-समिति का संयोजक चुन लिया है, सारी समिति की कार्यविधि ही खटाई में पड़ी है

नरेन्द्र   आप ने ही तो उसे सिर चढ़ा रखा है कामेश्वरजी। कुल हाई स्कूल पास, शुद्ध हिन्दी भी तो नहीं आती लेकिन हजरत को मुगालता है कि अँगरेजी भी उन्हें आती है। उस दिन जाँ पाल सार्त्र का नाम उच्चारण कर रहा था जीन पाल सार्त्र और दावा है

डॉ० पाल   दावा है [खीज कर] मैं कहता हूँ मि० नरेन्द्र, दावा है न। फिर परेशानी तुम्हें क्यों होती है? अभी भी समझ जाओ मि० नरेन्द्र। फायदा क्या, जिन्दगी-भर गलत ही उच्चारण करते रह जाओगे।

कामेश्वर · डा० पाल! यह तुम्हारी कौन-सी आदत है जो [illegible] किसी को बात करता है तो उसे जाने दो। [illegible] है कि शुद्ध उच्चारण नहीं आता वह [illegible] छोड़ क्यों न दे?

पाल   जी! आप का [illegible] शब्द का उच्चारण आ गया और नरेन्द्र ने [illegible] [illegible] से वह पर आप बुद्धिमान हो गये। [illegible] खन्ना की गाना [illegible], [illegible] [illegible] बन गया है।

[रेडियो खोलने की आवाज]

रेडियो-ध्वनि

मौसमी खबरें। पिछले कई दिनों से शहर में आंधी-तूफान का जोर छाया हुआ है यहां तक कि आधा शहर ही अन्धकार और पानी में डूब गया है। इस समय तक दस इंच बारिश हो चुकी है, आदमी तो मुसीबत में है ही, पशुओं के भी जान के लाले पड़ गये हैं। पशुओं की रक्षा के लिए स्थानीय पशु-रक्षिणी-समिति की एक विशेष बैठक हो रही है। समिति का कहना है कि वह शीघ्र ही पशुओं की रक्षा की कोई विस्तृत योजना प्रस्तुत करेगी खबर है कि एक आदमी ने एक कुत्ते को दांत काट लिया है। आदमी-द्वारा काटे गये कुत्ते ने आध घण्टे में तीन आदमियों पर हमला किया और तीनों जख्मी हैं। जिले के अधिकारी उस कुत्ते को पकड़ना चाहते हैं लेकिन उस आदमी की भी तलाश जारी है। आप को आगाह किया जाता है कि उसे पनाह देना अपराध है। शिनाख्त नहीं मिल रही है। शहर में आतंक-सा फैला हुआ है। आदमी और कुत्ते दोनों की तलाश है, दोनों ही गायब हैं। खबरें खत्म हुईं। यह आकाशवाणी है। अब आप साज-संगीत का एक रेकॉर्ड सुनिए।

नरेन्द्र — क्या आदमी ने कुत्ते को काट लिया? आदमी का जहर? मैं तो कहता हूं ऐसे आदमी को शूट कर देना चाहिए, क्यों कामेश्वरजी?

कामेश्वर — लेकिन यह क्या मजाक है कि आदमी और कुत्ते को काटे, क्यों डा० पाल?

डॉ० पाल — हो सकता है कामेश्वरजी, यह भी हो सकता है। कुत्तों के काटने से आदमी परेशान हो गया होगा। उस का धीरज टूट गया होगा, उस का सब कुछ खो गया होगा तब, तब मजबूर हो कर आदमी ने कुत्ते को काटा होगा।

नरेन्द्र   जो भी हो, चाहे जो तर्क डॉ० पाल दें या कामेश्वरजी, आप कहें, मैं तो कहूँगा अगर आदमी का इतना पतन हो जाये कि वह कुत्तों को काटने लगे तो जरूरी है कि ऐसे आदमी को खत्म कर दिया जाये।

डॉ० पाल   खत्म कर दिया जाये! पर आदमी खत्म नहीं होता कामेश्वरजी, इसे आप तो जानते हैं कि नहीं?

नरेन्द्र   खूब जानता हूँ। लेकिन नैतिकता न रहने पर आदमी कुत्ते से भी बदतर हो जाता है, कामेश्वरजी!

डॉ० पाल   कौन जाने मि० नरेन्द्र, हो सकता है आदमी ने कुत्ते को महज अपनी नैतिक रक्षा के लिए ही काटा हो!

नरेन्द्र   जरा धीरे बोलिए आप लोग। यह भीतर से आवाज कैसी आ रही है? कौन है? अरे यह क्या बक रहा है? [अन्दर से आती हुई आवाज]

[illegible]   छोड़ो छोड़ दो मुझे मैं कहता हूँ छोड़ दो यह समाज यह नैतिकता यह, तुम, यह तुम्हारी आकृतियाँ [सिसकते हुए] मुझे यह परछाइयाँ क्या घेरे हैं यह तो मेरी नहीं अपरिचित परछाइयाँ मुझे इनसे दूर जाने दो दूर दूर दूर बहुत दूर हट जाओ!

यह किसी की आवाज तो नहीं है। लगता है कोई पागल है, लेकिन यह

नरेन्द्र नानसेन्स मैं कहता हूँ यह सब-कुछ नही महज़ एक वहम है आप का ।

[मोटर की आवाज]

नरेन्द्र लीजिए अदारकर साहब भी आ गये । आइए-आइए डॉक्टर साहब ! कहिए खैरियत तो है ? उफ, आप तो काफी भीग गये है ।

डॉ० अदारकर कहिए । सयोजकजी गायब है न ? मै पहले से जानता था । पशु-रक्षिणी-समिति का जनाजा दफनाने गये होगे हजरत ! अगर आप लोग भी तैयार हो तो यह किस्सा ही खत्म कर दिया जाये । टेलीफोन काट दीजिए । फाइल्स उठा ले जाइए । काम करना है तो किसी दूसरे के हाथ मे दीजिए । शरन-जैसो से कुछ नही हो सकता ।

कामेश्वर मेरा खयाल है डॉ० अदारकर ।

डॉ० अदारकर आप का खयाल-ही-खयाल है कामेश्वरजी, मैं कहता हूँ शरन — शरन निहायत निकम्मा आदमी है, जो आदमी चौबीस घण्टे यही कहता रहता है—बीवी बीमार है, बच्चे बीमार है, पैसे नही है, तबीयत ठीक नही है, उस के बूते का यह सब काम नही है । वह निकम्मा रहा है और रहेगा ।

डॉ० पाल ऐसा क्यो कहते है डॉक्टर साहब । अपनी तकलीफ आदमी अपनो ही से तो कहता है, हम सब भी तो एक परिवार के समान है ।

नरेन्द्र देखिए साहब यह परिवार-वरिवार वाली बात आप अपने ही तक रखिए, यही तो सारे दोष का कारण है ।

डॉ० अदारकर हाँ जी, नरेन्द्रजी बिलकुल ठीक कहते है । अभी उस दिन शरन मेरे पास आया था, बोला बीस रुपये की सख्त जरूरत है । एक हफ्ते मे दे दूँगा । मुझे भी तरस आ गया । निकाल कर दे दिये । एक हफ्ते बाद जब पैसा नही मिला तो फिर मैं ने तकाजा किया ।

डॉ० पाल — आखिर यह भी तो सोचिए वह आदमी वेकार है। किसी काम का सिलसिला नही है। आमदनी का जरिया नही है, जमाना इतना बुरा है।

डॉ० अदारकर — अजी यह सब कहने की बातें होती हैं पाल साहब ! मैं कहता हूं जब आमदनी नही है तो खर्च करने की जरूरत ही क्या है ? जब जमाने की हालत खराब है तो जमाने के साथ चलो। मत करो डॉक्टरी दवा। क्या होमियोपैथी की दवा खराब है ? उसी की गोलियाँ खिलाओ। क्या जरूरत ज्यादाकी।

डॉ० पाल — आदमी की मजबूरी ही उस की सब से बड़ी ज़रूरत होती है डॉक्टर साहब।

डॉ० अदारकर — मजबूरी कोई ओढ़ी-बिछायी नही जाती पाल साहब ! वह हटायी जाती है। क्यों नरेन्द्रजी ?

नरेन्द्र — निकम्मा आदमी मजबूरी क्या हटायेगा, उसे तो सिर्फ शिकायत करना आता है।

डॉ० पाल — हटाइए, मेरा एक सुझाव है। शरन का एक नाटक अभी-अभी रेडियो से आयेगा, उस के पीछे उस की आलोचना करने से बेहतर है उस नाटक को ही सुना जाये। अभी तो कोरम भी नहीं पूरा हुआ है।

अदारकर — हाँ-हाँ, क्यो नही, चला लो रेडियो। बेचारे को शादी मे मिला है, तुम फायदा उठा लो और भाई, मैं तो चला।

जाइएगा कैसे ? बारिश भी ऐसी हो रही है कि लगता है घर जाना मुश्किल होगा।

नरेन्द्र — बोर दोनो ही हालत में होना है, बाहर जा कर या शरन का नाटक सुन कर। चलिए ज़रा नाटक ही सुनें।

रेडियो-ध्वनि ·

अभी आप साज़-सगीत के अन्तर्गत रेकॉर्ड सुन रहे थे। यह

आकाशवाणी है। लीजिए अब आप हमारे नाटक आयोजन के अन्तर्गत गगनजी का लिखा हुआ यह नाटक सुनिए 'टूटा आदमी'।

[दरवाजा खटखटाने की ध्वनि]

शनि — जाने कहाँ चले गये हैं ? जानते हैं आजकल तकाजे वालों का तांता लगा रहता है, फिर भी आप हैं कि बस गायब ! आज इस संस्था की मीटिंग् है। कल गोष्ठी है। फलाँ बीमार है। ढिकाँ के घर शादी है। कितना बरदाश्त करूँ ? कहाँ तक बरदाश्त करूँ ?

[दरवाजा खटखटाने की ध्वनि]

शनि — कौन है ? बोलते क्यों नहीं ? आधी रात को खट-खट लगा रखा है। कह तो दिया महिमजी का कुछ ठिकाना नहीं कब आवें, [दरवाजा खोलते हुए] अरे यह तो आप ही है, आज इतनी जल्दी ! मैं ने तो तय कर लिया था कि आज दरवाजा नहीं खोलूँगी।

महिम — तुम्हारे तय करने से क्या होता है ? मेरी किस्मत तो तेज है, जानती हो महिम की किस्मत जहाँ और मानों में खराब है, वहाँ इस माने में तेज भी।

शशि — हे भगवान् ! कहाँ है इन की किस्मत जो तेज होगी ?

महिम — भगवान् बेचारे को कोस रही हो ! कोसो, ठीक ही है। भई, मैं तो किसी को भी कोसने की स्थिति में नहीं हूँ ! भगवान् ने तो मेरे साथ न्याय ही किया है ! हाँ, अन्याय तुम्हारे साथ हुआ है ! महिम के साथ इस माने में कोई अन्याय नहीं हुआ है।

शशि — आप का मतलब ?

महिम — यही शशि, मेरा भाग्य तो बड़ा ही अच्छा था, हर हालत में अच्छा था जो तुम्हारी-जैसी पत्नी मिल गयी। रही तुम्हारी

किस्मत, वह जरूर ही ख़राब रही होगी, नही तो मुझ-जैसा पति तुम्हें क्यो मिलता।

शशि — फिर वही बातें शुरू कर दी। यह सब आप अपनी उसी चण्डाल-चौकड़ी को सुनाया कीजिए जो आप को मन से न चाहते हुए भी चाहने का अभिनय करते हैं। मुंह पर तारीफ करते हैं पीठ पीछे जाने क्या-क्या कहते हैं।

महिम — अच्छा तो यह बात है। जाने दो शशि। वह मुझे बेवकूफ समझते हैं तो समझने दो उन्हें। हम लोगो को दुनिया को बेवकूफ समझना चाहिए। लाओ तो लुगी कहाँ है। कपड़े बदल लूं।

शशि — लुगी नही है।

महिम — क्यो, क्या हो गयी ?

शशि — बन्दर उठा ले गया। चिथडे-चिथडे कर के रख गया है।

महिम — अच्छा खैर तौलिया तो ले आओ।

शशि — खूब बात करते हैं आप। तौलिया घर में कहाँ है ? कुछ पता है ? आज छह महीने से तौलिया घर में नही है।

महिम — खैर मानता हूं। अच्छा अपनी कोई साड़ी ही दे दो।

बस यही है जो पहने हूं। लेखक की पत्नी हूं न, इस से ज्यादा जरूरत क्या है ?

ठीक ही तो है शशि, खैर यह पाजामा ही पहन कर सो जाऊंगा। कल सुबह रामेश्वर ही के यहां तो जाना है। हां कोई खत तो नही आया था ?

शशि — उन्ही डॉक्टर साहब का है। लिखा है, "मै आप को खानदानी शरीफ समझता हूं। यही समझ कर उस दिन बीस रुपये दिये थे। तीन खत छोड चुका हूं लेकिन आप ने कोई जवाब नहीं दिया है। वायदे करते जाते है पर पैसा देने का नाम नहीं लेते।

सच कहता हूँ अगर इस खत के बाद भी रुपया नही मिला तो कानूनी काररवाई करूँगा ।" मैं कहती हूँ क्यो लेते हो रुपये ?

महिम तुम बीमार थी । बच्चे बीमार थे । क्या करता शशि ?

शशि तो सुन लो मैं कहे देती हूँ । बच्चे अगर मरते हो तो मर जाने दो । मेरी लाश के लिए अगर कफन न मिले तो उधार ले कर कफन देने की कोशिश मत करो लेकिन मैं सच कहती हूँ, यह बातें न तुम खुद सुनो और न मुझे सुनाओ ।

[सिसकने की आवाज]

महिम शशि शशि ••कितनी कमजोर हो तुम शशि ? किसी के कहने से मैं नीच खानदान का नही हो जाऊँगा । फिर ये सब तो अपने शुभचिन्तक हैं । इन की बात का क्या बुरा मानना ।

शशि शुभचिन्तक हैं । आप दुनिया को दुनिया के रूप में क्यो नहीं देखते । क्यो नही समझते कि दुनिया दुनिया है । मैं सच कहती हूँ महिम, इन शुभचिन्तको से अगर दुनिया को छुटकारा मिल जायें तो दुनिया सुधर जाये । ये शुभचिन्तक वडे खतरनाक होते है ।

महिम बन्द करो यह बातें शशि । मेरा जी घबरा रहा है । बची-खुची आस्था तो शेष रहने दो । इसे तोडने की कोशिश मत करो । इस के टूटते ही मैं पागल हो जाऊँगा । बिलकुल पागल ।

[सहसा रेडियो बन्द हो जाता है । बारिश और तूफान की ध्वनियाँ गूँजने लगती हैं ।]

डॉ० पाल क्या बात है ? ओह आप कैप्टेन भरद्वाजजी, ऐसे आ गये कि पता ही नही चला । रेडियो क्यो एकदम से बन्द हो गया ?

डा० भरद्वाज ह ह ह बन्द हो गया तो बन्द हो जाने दो । अशिक्षित लोगो की दवदान है । अपनी ही आत्मकथा लिखी है । फिलासफी छाँटना चाहते हैं । जदन को आदर्श बनाना चाहते है । ठगी और

बेईमानी को भावुकता मे छिपाना चाहते है। शरन स्वयं जसा है, वैसा ही पात्र भी बनाता है। मै कहता हूँ क्या अन्तर है शरन मे और इस नाटक के महिम में।

नरेन्द्र — कमबख्त नाटक लिखने चले है। नाटक की टेकनीक तक तो मालूम नही। दो पात्र इतनी देर से बक-बक बक-बक लगाये है, बीच मे कोई घटना ही नही घटती। ऐक्शन तो है ही नही सिर्फ डायलॉग पर नाटक चलाना चाहते है। यह महिम नाम का पात्र बिलकुल शरन का अवतार है अवतार

कामेश्वर — जाने क्या लिखता है यह शख्स। नाटक जीवन की घटना से लेना चाहिए। यह कोई घटना है ? यह तो मानसिक विक्षिप्तता, पागलपन है।

डॉ० पाल — यही तो नाटक है

डॉ० अदारकर — चुप रहो जी। माना कि तुम नाटक लिखते हो पर तुम्हें भी नाटक लिखना नही आता। तुम्हारी भाषा मे तो इतनी गलतियाँ होती हैं कि । फिर भी कोई आदर्श, कोई ऊँची बात तो नाटक में कहनी ही चाहिए न ? यह कोई नाटक

नरेन्द्र — मैं तो कहता हूँ अदारकर साहब, नाटक और आत्म-कथा मे अन्तर है। यह जो कुछ आप ने सुना यह नाटक नही आत्म-कथा है।

८ — आत्मकथा' "यानी सेल्फ कन्फेशन उहूँ "हूँ ' देखिए यह सब नाटक में नही होना चाहिए। यह कन्फेशन हमेशा किसी मजिस्ट्रेट के सामने होने चाहिए।

[फ़ोन की घण्टी बजती है]

नरेन्द्र — हलो " ओह कल्पना जी शरनजी को पूछ रही हैं ' बड़ी देर से बैठे हुए हम लोग तो उन्ही का इन्तजार कर रहे जी घर में अजी कई बार कोशिश की कोई बोल ही नही रहा।

कभी-कभी कोई पागल की तरह चीखता-चिल्लाता है। लगता है मिसेज शरन घर में है। लेकिन आप तो जानती है''''शायद वह परदा करती है, जी ? क्या नफरत—नफरत करती है ? 'एक ही बात हुई' मैं ने शरीफाना अन्दाज़ में कहा था, खैर, हाँ-हाँ'' आइए न आप के बिना तो कोरम ही नही पूरा होगा।

[एक बच्चे का प्रवेश]

डॉ० भदारकर लीजिए साहब, घर सन्नाटे में नही है, यह देखिए शरनजी के जानशीन आ गये। यही तो है शरनजी का भविष्य।

नरेन्द्र बाप से भी बढ़ कर बेटा। वही वही चाल''वही ढाल। पैण्ट मे बटन नदारद। कमीज़ की बाहे खुली। आस्तीनें फटी। क्यो जी कहाँ गये तुम्हारे पापा ?

बालक जी पापा तो सुबह के बाहर गये है अभी आये नही। कहा था ऑफिस खोल देना।

नरेन्द्र अच्छा तो यह बात है। जरा इधर तो आओ। तुम्हारे पास कितनी कमीजें है ?

बालक जी मुझे नही मालूम, माताजी जानती है।

डॉ० भदारकर और तुम्हारी माताजी कहाँ है ?

बालक जी घर मे है, बीमार के पास।

नरेन्द्र अच्छा बेटे, तुम बड़े होगे तो क्या करोगे ?

कामेश्वर यह क्या है जी नरेन्द्र ? तुम लोग इस बच्चे को क्यो परेशान करते हो ? जो कहना हो शरन को कहो।

नरेन्द्र बड़ी ममता है आप की बच्चो के प्रति, जानते भी हैं कामेश्वरजी, मिसेज कल्पना ने 'आज' के विमेन्स कॉलम में क्या लिखा है ?

कामेश्वर कुछ भी लिखा हो नरेन्द्र। तुम्हें अपने विचार से मतलब होना चाहिए। कल्पनाजी के विचार ले कर तुम क्या करोगे ?

नरेन्द्र वाह ! हम स्कॉलर हैं। हमें हर-एक का विचार जानना चाहिए। और फिर कल्पनाजी ! 'आह 'ह' ह 'क्या कहने है ? क्या विचार हैं उन के ? मैं कहता हूँ बच्चे काफी हद तक एक न्यूसेन्स होते हैं ' कहिए ? नही होते ? ''

डॉ० अदारकर न्यूसेन्स ? अजी वह तो कल्पनाजी की बहस है। मेरे तो एक दर्जन बच्चे हैं। मैं तो कभी परवाह ही नही करता। रही शरन की बात, खाली आदमी करेगा क्या ? उस के बच्चे भी विक्षिप्त न्यूराटिक और न्यूसेन्स होगे ही !

भरद्वाज न्यूसेन्स ? डॉ० अदारकर ! न्यूसेन्स नसल तो फौरन बन्द कर देनी चाहिए, राष्ट्र को नौजवानो की जरूरत है, नौजवानो की ! न्यूसेन्स पैदा हो कर क्या होगे ?

डॉ० पाल वाह, वाह कप्तान साहब वाह ! कहे जाइए ''आप लोग महान् हैं। एकेडिमेशियन है। मॉडर्न है लेकिन, शायद आदमी नही हैं।

नरेन्द्र : ओह फैण्टैस्टिक नानसेन्स !

डॉ० पाल मैं कहता हूँ आप लोगो के पास कुछ और विषय नही है क्या सारा बहस शरन ही को ले कर होगा या

इस से ज्यादा दिलचस्प विषय और कहाँ मिलेगा ? फ्यूडल और इण्डस्ट्रियल एज के काम्पलेक्सेज का आदमी है शरन '। जू में रखने लायक है जू में।

तुम कुछ कम बोला करो मि० नरेन्द्र ! जितना कुछ पढा है उसे हर जगह उगलना क्यो चाहते हो ? नही हजम कर पाते या बदहजमी होती है तो भाई पढना बन्द कर दो लेकिन यह क्या है

[भीतर से फिर आवाज़ आती है।]

पुरुष-स्वर खोल दो, खोल दो मेरे ये बन्धन, ये जजीरें, ये हथकडियाँ, ये घूरती हुई आँखें यह सब मुझ से नही सहा जाता। मेरी दुश्मनी

आदमी ने नही है, नही है। कोई तो सुनो, मै प्यासा हूँ, मुझे प्यास लगी है, लेकिन तुम मुझे पानी क्यो नही देते ? क्यो नही मेरी बेचैनी समझते ? क्यो नही मेरी तकलीफ समझते ? समझते न ' 'मझते ?

नन्द . यह क्या हो रहा है घर मे। कहाँ से चुन-चुन कर लोग इकट्ठा किये है घर है या पागलखाना ?

भरद्वाज ओह ! यह बात है। मै जानता हूँ क्या है। जरा क्षमा कीजिएगा मै अभी आया ! यह शरन तो बहुत खतरनाक आदमी लगता है।

[बैकग्राउण्ड मे]

[बढे हुए गले मे] नायक सिह ! नायक सिह [ताली बजाता है] ओ नायक सिह !

नायक सिह जी हुजूर !

भरद्वाज सिपाही तैयार है [कान में कनफुस्की के स्वर में] चुपचाप इस घर को घेर लो। कड़ा पहरा रखो।

बाबरचर क्या बात है कप्तान साहेब ? आप जरूरत से ज्यादा परेशान हैं।

भरद्वाज जी [कुछ छिपाते हुए] कोई बात नही, कोई बात नही। मि० पाल, रेडियो तो ऑन कीजिए। जरा देखिए तो शहर की क्या हालत है। बारिश तो ऐसी है जैसे प्रलय की।

डो० पाल रेडियो बन्द नही है कप्तान साहब लेकिन ''

[रेडियो-ध्वनि]

यह आप के शहर का रेडियो है। हमारा ट्रान्समिटर मौसम की खराबी से बन्द हो गया था आँधी-तूफान इतने जोर का चल रहा है कि कुछ भी ठिकाना नही कब क्या हो जाये। हम आप को शरनजी का नाटक 'टूटा आदमी' सुना रहे थे। आगे का ... सुनिए

शशि : मैं कहती हूँ आखिर अपने मित्र प्रकाशक मि० खन्ना से कहते क्यों नहीं ? आज साल-भर हो गये। अनुवाद के साथ दो किताबें और भी पड़ी हैं। आखिर'

महिम : प्रकाशक नहीं वह हमारे मित्र हैं शशि !

शशि : मित्र ! मित्र ! सभी तो आप के मित्र हैं। दो-चार से दुश्मनी भी कीजिए तो शायद कुछ काम चले।

महिम : बकवास से फायदा क्या ? चलो अपना काम करो। हमारा-तुम्हारा झगड़ना ठीक नहीं।

शशि : ठीक है ! सुनिए जैसे राजनीति से इस्तीफा दे कर अलग हो गये हैं उसी तरह साहित्य से भी इस्तीफा दे दीजिए। अब मैं थक गयी हूँ। जब तक बात अपने तक थी ठीक था। अब इस का असर बच्चों पर पड़ रहा है। यदि यह केवल अभाव में पलेंगे तो इन में विकृतियाँ आयेंगी और और

महिम : इस्तीफा दे दूँ ! साहित्य का क्षेत्र छोड़ दूँ ! फिर बचेगा क्या ? क्या शेष रहेगा ? क्या आधार होगा ? किस के बूते पर जीऊँगा शशि ? इसे भी सोचा है ? कभी इस पर भी ध्यान दिया है ?

बहुत कुछ बचेगा—तुम्हारा पिता का रूप-जीवन, पति का स्नेह, भरा-पूरा घर, अभावों से मुक्त सन्तान, स्वस्थ जीवन

और इस के अतिरिक्त, इस के अतिरिक्त भी कुछ बचेगा

और क्या ? साहित्यकार से बड़ा है यह सब कुछ। अपनी अहम्मन्यता में डूब कर साहित्यकार साधारण जीवन नहीं जी पाता, वह असाधारण की खोज में अपने को तोड़ डालता है।

महिम : नहीं, नहीं ऐसा नहीं हो सकता शशि ! साहित्य मेरी आत्मोपलब्धि है वह मेरी अहम्मन्यता नहीं है ! वह मेरा प्रमाद नहीं है। वह अहकार नहीं है। नहीं है नहीं है ।

शशि — वह आप का जो कुछ भी हो, जीवन नहीं। हमारे जीवन में और उस में विरोध है। कहीं इतनी बड़ी खाई है कि उस में हमारा सब कुछ बिखर जाता है। जो आप का साहित्यकार का क्षेत्र है वह शायद इतना संकीर्ण है कि उस में मैं नहीं आ सकती। यह परिवार नहीं आ सकता। यह घर नहीं आ सकता।

महिम — यह सब उस में ही है शशि, मेरी पीड़ा केवल मुझ तक ही नहीं है वह सब की हो जाती है। वे सभी मेरी पीड़ा में भाग लेते हैं जो मेरी रचना पढ़ते हैं। वे सभी मेरे जीवन में भाग लेते हैं जो मेरा साहित्य पढ़ते हैं। मेरा परिवार इतना बड़ा है शशि, कि वह इस घर में नहीं आ पाता। यह घर छोटा है। इतना छोटा कि

शशि — घर का छोटा होना ही तो बुरा है। बहुत बुरा है। छोटे घरों में मस्तक झुका कर चलने वाला परिवार होता है। चौखट के जख्मों से मस्तक पक जाते हैं। कभी-कभी दिमाग भी खराब हो जाता है।

[शशि के प्रस्थान की ध्वनि]

महिम — छोटा घर, छोटा परिवार, मस्तक झुका कर चलने वाली नसल· चौखट के जख्मों से पका हुआ मस्तक। नहीं। नहीं। ऐसा नहीं होगा [छोटे बच्चे के रोने की आवाज़, बच्चे को गोद में लेता हुआ] नहीं, नहीं, तुम्हें चीखने नहीं दूँगा, तुम्हें बौना नहीं बनने दूँगा [बच्चा चीखना बन्द कर देता है] लेकिन करूँगा क्या?

शशि — क्या हो गया है तुम्हें।

महिम — ऐसे क्यों पूछती हो? यही तो दुःख है शशि, कुछ हो जो नहीं होता है दूर होना चाहिए न।

शशि — [illegible]। क्या हो गया है आप को? कुछ भी तो नहीं कहा [illegible] जाने क्यों इतनी बात आज मेरे

मुँह से निकल गयी। लेकिन मैं भी तो मजबूर थी। आशाएँ जब टूटती हैं तो विश्वास भी बिखर जाता है। धैर्य अपना साहस छोड देता है।

महिम साहस? तुम्हारा साहस यदि टूट जायेगा शशि, तो मेरी आगे शक्ति ही टूट जायेगी। शशि, मुझ से मेरे सपने छीन लो। आग लगा दो उन में। उन की ध्वस्त राख पर हमें नये सिरे से ले चलो। समझ लो मैं निष्क्रिय हूँ। अकर्मण्य हूँ।

शशि लेकिन यह तुम कह क्या रहे हो। मैं तुम्हारे सपने नही छीनना चाहती। तुम्हारे शुभचिन्तक मुझ से भी बडे है। वह ससार की बातें सोचते हैं। विश्व-कल्याण की बातें सोचते हैं। वह अधिक बुद्धिमान् हैं। मै छोटी हूँ। मेरे सपने छोटे हैं, बहुत छोटे उतने ही छोटे जितनी मैं स्वय हूँ।

महिम नही शशि, तुम्हारे छोटे-छोटे सपनो का बडा महत्त्व है क्योकि उन के छोटे चौखट नही हैं। सिर में जख्म पैदा करने वाली सम्भावनाएँ नही है। दिमाग़ को पकाने वाली असमर्थता नही हैं, उस मे अपूर्णता की आग नही है। महत्त्वाकाक्षा की जलती विभीषिका नही है। उस में वह लघुता है जो पूर्ण है, अपने में ही भरी-पूरी है। वह बडप्पन नही है जो सदैव अधूरा ही रहता है।

[रेडियो सहसा बन्द होता है और तुरत ही फिर ध्वनि आती है]

हम माफी चाहते हैं, जिस कुत्ते को आज सुबह एक पागल और विक्षिप्त आदमी ने काटा था आज दोपहर को उसी कुत्ते ने शहर के बहुत बडे समाज सेवी 'सेवा समाज' के प्रधान श्री अभिजात-चन्द्र को काट लिया था। अभी-अभी हमें उन के देहावसान का समाचार मिला है। हम अपना कार्यक्रम पन्द्रह मिनिट के लिए स्थगित करते है और इस बीच दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए आप के सामने गीता-पाठ होगा।

[गीता का श्लोक   बैकग्राउण्ड में लगातार गीता-ध्वनि]

नरेन्द्र — बन्द भी करो यार। अजीब लोग है, गीता से क्या होगा ? यह मौन का प्रोग्राम मुझे नही रुचता।

कामेश्वर — मौन का प्रोग्राम और गीता ? नरेन्द्र ने ठीक कहा, बन्द भी करो, यह गीता बहुत सुन चुका।

नरेन्द्र — और गीता भी उस के लिए जो तमाम जिन्दगी समाजसेवी रहने के बाद भी समाज का मतलब नही जान सका होगा, समाज की उत्पत्ति, विकास, पतन, परिवर्तन इस के बारे में अभिलाषचन्द्र क्या जानेंगे ?

कामेश्वर — यह तो तुम्हारा एकेडेमिक विवाद है नरेन्द्र, लेकिन मैं समझता हूँ एकेडेमिशियन न होते हुए भी आदमी आदमी के काम आ सकता है।

डॉ० पाल — जी, क्या खूब कहा आप ने कामेश्वरजी, आदमी आदमी के काम आये इस के लिए जरूरी है कि आदमी आदमी को जाने, आदमी बिना आदमी की संवेदना जाने उस का सेवक बने यह मेरी समझ मे नही आता।

नरेन्द्र — मै तो कहता हूँ बिना एकेडेमिक ज्ञान के कोई साइण्टिफिक ज्ञान नही आ सकता और बिना साइण्टिफिक ज्ञान के आदमी आदमी की संवेदना जान ही नही सकता।

डॉ० कामेश्वर — आ गये न आप लोग दिमागी फितूर पर। देखिए मैं कुछ काम की बातें करना चाहता हूँ। मेरी बात मान लीजिए, शरनजी अब इस समय आप से नही मिलेंगे। मैं उन को जानता हूँ, उन की नस नस पहचानता हूँ, जब कुल तीन रुपये के लिए वह मुझे इतना नाच नचा सकते हैं तब यह तो कच्चा चिट्ठा उधेड कर बात करने की मीटिंग है, इस से वह हमेशा दामन बचायेंगे। [illegible]

[बाहर मोटर की आवाज सुनाई पड़ती है]

नरेन्द्र — वह लीजिए मिसेज कल्पना भी आ गयी । लीजिए डॉक्टर साहब, अब तो मीटिङ् का कोरम भी पूरा हो गया जल्दी निर्णय कीजिए । मुझे आज अनन्त के यहाँ डिनर पर जाना है । बारिश की यह हालत है । पर भाई, मैं तो अँगरेज आदमी हूँ । जहाँ बात हुआ चला जाऊँगा ।

[मिसेज कल्पना का प्रवेश]

नरेन्द्र — ओह नमस्कार कल्पनाजी, आइए, इधर आइए । [मुग्ध भाव से]

कामेश्वर — नमस्कार [आदरसूचक]

डॉ० पाल — नमस्कार कल्पनाजी । [उपेक्षाभाव]

डॉ० अदारकर — नमस्कार ' [अकड़ के साथ]

मि० कल्पना — ओह 'नमस्कार नमस्कार' नमस्कार माफ कीजिएगा मुझे बड़ी देरी हो गयी । मेरे हस्बेण्ड मि० राम का बड़ा लड़का आया था । जानते हैं सौतेला लड़का ठहरा । कर्टसी में कुछ न-कुछ करना पड़ता है । एक तूफान खड़ा कर दिया उस ने । मि० राम को ब्लडप्रेशर की बीमारी है । उत्तेजना से उन की तकलीफ बढ़ गयी । उसी में देर हो गयी ।

अब तो ठीक है तबीयत ! क्या बताऊँ मुझे यहाँ से सीधे डिनर में जाना है नहीं तो अभी देख आता । किसी वक्त आऊँगा ।

मि० कल्पना — मैं ने सिविल अस्पताल से नर्स बुलवा दी है । वह देखभाल कर रही है । क्या करें ? पब्लिक लाइफ में तो इतने इंगेजमेण्ट्स रहते हैं कि

भरद्वाज — इंगेजमेण्ट्स । पब्लिक इंगेजमेण्ट्स । मैडम, पब्लिक मीन्स कॉमन मैन । और पब्लिक इंगेजमेण्ट

[सब लोग हँस पड़ते हैं]

डॉ० पाल — खूब ! मानता हूँ कप्तान साहेब, क्या सेन्स ऑव ह्यूमर पाया है आप ने ! वाह ! वैसे मिसेज़ कल्पना करती भी क्या ? नर्स से ज्यादा आराम आप मिस्टर राम को नहीं पहुँचा पाती । वह तो सिर्फ गँवार बीवियाँ ही कर पाती हैं ।

मि० कल्पना — ओह यस ! आप ठीक कहते है डॉ० पाल ! वह नौकरो की तरह अटेण्ड करती हैं । मै क्या बताऊँ मैं तो बैलेन्स रखती हूँ । क्या करूँ, रखना पड़ता है । कोई बीमार है ठीक है, दवा कर दो । इस से ज्यादा कर भी क्या सकते हैं ?

नरेन्द्र — ठीक तो है आप का कहना मिसेज़ कल्पना, आप हमेशा बैलेन्स मेण्टेन करती है । अभी आज ही आप का वह लेख पढ़ा है 'चाइल्ड, ए न्यूनेन्स' बड़ा ही अच्छा है बहुत ही साइण्टिफिक और माडर्न है

पोस्टमास्टर — मै थोडा असहमत हूँ · ·

मि० कल्पना — अच्छा इट इज ए न्यूज़ । बच्चे तो कभी-कभी न्यूसेन्स ही नही ऐण्टीसोशल भी साबित होते है, जैसे मि० राम का बड़ा लड़का ! और देखिए वैसे तो हम पशु के प्रति भी उदार है ।

नरेन्द्र — जी हाँ ! आप बिलकुल ठीक कहती है । एकेडेमिक व्यू यही है ।

डॉ० ... — सर साहब, अब तो मीटिङ् की कारवाई शुरू करनी चाहिए

[फोन की घण्टी बजती है]

नरेन्द्र — कौन मि० शरन जी जी मै हूँ नरेन्द्र । कौन शरनजी ? अरे साहब, वह मिल जाये तो मुसीबत ही न हल हो जाये । लेकिन घबराइए नहीं सब ठीक हो जायेगा । क्यों पानी में कष्ट करेंगे ? ... सब वालण्टियर्स जानवरों की रक्षा के लिए तैनात हो जायेंगे । हमी आदमी तो अपनी जान बचा ही लेता है । आप उन की फिक्र कीजिए । जानवर बेचारे तो बेज़बान होते है । उन

की रक्षा कीजिए। छोडिए आदमी की चिन्ता।

डॉ० पाल जरा खामोश हो जाइए। रेडियो से खबरें आ रही है।

रेडियो-ध्वनि '

जैसा कि अभी आप को बताया गया, मौसम बहुत खराब है, सैकडो पेड शहर में गिर पडे है, सडक और रास्ते की सारी स्थितियाँ खराब हैं, ट्रैफिक बन्द है, आदमी का आना जाना बन्द है। रोशनियाँ बुझ गयी है, पुराने मकान गिर रहे है, नदी की बाढ का गन्दा पानी घरो में घुसा जा रहा है, डॉक्टरों का कहना है कि इस बाढ, इस पानी और गन्दगी में बडे जहरीले बैक्टेरिया होते है, डिफ्थीरिया का रोग फैलता है, पहला अटैक गले पर होता है, आदमी की जबान बन्द हो जाती है, आदमी घुट घुट कर मर जाता है, आप से प्रार्थना है आप अपनी नालियों से होशियार रहिए ताकि पानी घर में न फैलने पाये। यह आकाशवाणी है। खबरें खत्म हुई। शरनजी का ड्रामा जहाँ तक आप सुन चुके है, उस के आगे से सुनिए

महिम छोटा घर छोटा परिवार। मस्तक झुका कर चलने वाली नसल, चौखट के जख्मो से पका हुआ मस्तक और उस मस्तक मे छोटी-छोटी बातें। पडोसी के घर की नकल, बाबुआ की रिश्वत, साहब को सलाम, बेयरे की टिप, इन सब का जितना गहरा सम्बन्ध है।

शि जाने भी दो उन बातो को, उस घडी मेरी कुछ तबीयत ही खराब गयी थी, मुँह से यह बातें निकल ही गयी, गुजरी बात को ढोने से फायदा !

महिम : बात ढोने की बात नही है शशि, बात समझने की है। तुम सब को मेरी वजह से तकलीफ है न। काश मैं भी साधारण आदमी होता। कितने आराम से रहते। [रुककर] नहीं, नहा शशि, मैं इन सब को छोडूंगा, एक रास्ता निकालूंगा।

[illegible] रास्ता कोई नही है। रास्ता वही है जिस से तुम चल रहे हो, वही ठीक है।

[illegible] लेकिन मैं शायद अब साहित्य नही लिख सकता क्योकि मैं अभावो में जी रहा हूँ, मैं इन झूठी सामाजिक सेवाओ का जो अभिनय करता हूँ वह भी व्यर्थ है क्योकि उस में मेरी पूर्णता नही है, मैं तिलांजलि दूँगा अपनी समस्त कल्पनाओ को, साहित्य को, रचना को

[बाहर से आती हुई कुण्डी खटखटाने की आवाज़]

पहली आवाज क्या कर रहे हैं हजरत, आखिर आज इतनी देर क्यो हो रही है ?

दूसरी आवाज कौन जाने सोपर्मिन कर रहे हो

तीसरी आवाज कोई कविता लिख रहे होगे

चौथी आवाज अरे ऐसे लिक्खाड़ होते तो

पाँचवी आवाज तो शेक्सपियर हो जाते

समवेत अभी किस से कम हैं।

[समवेत हँसी। घृणा तिरस्कार से भरी हुई। भीतर की आवाज]

[illegible] फिर वही आवाज। फिर वही, व्यंग्य। फिर भी वही ताने।

[illegible] तो क्या हुआ ? अभी तक यह ताने सहते आये है, और भी सहेंगे। इन सब तानो को सार्थक बनाना होगा। सार्थक होके रहेंगे

[illegible] हाँ, क्या इन व्यंग्यो से घृणा नही टपकती इन मे अपमान नही झलकता। लेकिन फिर भी मैं इस का विरोध नही करना चाहता क्योंकि ये मेरे अन्तिम विश्वास रहे है – इन्हें मैं छोड़ना चाहता हूँ – इन मे उलझना नही चाहता – इन्हें काट कर

निकल जाना चाहता हूँ।

शशि — तो फिर इन से मुँह क्यो छिपाते हो ? क्यो नही इन का सामना करते, इन का जवाब देते ?

महिम — क्योकि ये मेरी कमज़ोरियाँ हैं शशि, बहुत बडी कमज़ोरी।

शशि — तब इन्हें रोकना पडेगा। इन को इन की सीमाएँ बतानी होगी।

महिम — मत सुनो शशि, इन की बातें मत सुनो, यह महज़ बकना जानते है, इन का कुसूर नही है

शशि — लेकिन मुझे सुनना ही पडेगा आवाज़ जब घर की चहार-दीवारी पार कर के आँगन तक गूँजने लगे, घृणा जब बरसने लगे तब उसे रोकने मे कर्त्तव्य है। इस घर की मैं मालकिन हूँ। इसे मैं रोकूँगी !

महिम — नही ! नही शशि, इन्हें मत रोको ! मै फिर कहता हूँ, ये मेरे अन्तिम विश्वास हैं ! ये मेरी असमर्थता हैं ! मै इन से उलझना नही चाहता ! ये मेरे शुभचिन्तक हैं !
[बाहर से]

१ आवाज़ — श श''''श सुनो, सुनो भीतर नाटक का रिहर्सल हो रहा है।

२ आवाज़ — रिहर्सल ? यह क्या कहते हो ! बीवी कर्कशा होगी यह नाटक नही है !

३ आवाज़ — अरे मियाँ, सही सलामत चलो, यह बला यहाँ भी आने वाली है।

चौथी आवाज़ — ह ह ह क्या खूब फरमाया जनाब ने, यहाँ क्यो आयेगी

पाँचवी आवाज़ — आप की अक्ल नापने

समवेत हँसी — ह ह ह ह

[भीतर से]

शशि — वापस आ जाओ शशि शशि वापस आ जाओ।

[बाहर से]

पहली आवाज — शशिजी ओह शशि भाभी

दूसरी आवाज — जी, नमस्ते।

तीसरी आवाज — नमस्ते जी।

चौथी आवाज — ओह भाभीजी, नमस्ते।

पाँचवीं आवाज — आप बोलती क्यों नही, कुछ तो कहिए

शशि — और भी कुछ कहिए। घावों पर इतना नमक छिड़किए कि हम पागल हो जायें, जख्मों को कुरेदिए कि खून हो जायें। आप मित्र हैं न? यह तो आप का फर्ज है।

[भीतर से]

शशि — मेरे साहस की परीक्षा मत लो शशि। वापस आ जाओ। वापस।

[लम्बा मौन]

शशि — आप लोग भी चुप हो गये, कहिए "कहिए न, इतना कहिए कि मेरे अन्धे कूएँ से कान आप की सारी बातें सुन लें। मेरा धीरज तिलमिला उठे। आप सब शुभचिन्तक हैं न, आशीर्वाद दीजिए। बोलिए, लेकिन आप नही बोलेंगे, मैं जानती हूँ आप नही बोल सकते क्योंकि आप में कही कायरता भी है शायद इसी लिए आप खामोश है लेकिन यह अधूरापन बड़ा ही कटु है, दिल में गुबार रखना ठीक नही, वह इसलिए आज-जैसा अवसर आप को फिर कभी नही मिलेगा सच मानिए आप लोगों की खामोशी मुझे

खलती है

पहली आवाज़ शशि भाभी भा भा भाभी

शशि हाँ, हाँ आप कांप क्यो रहे हैं। मैं मात्र स्त्री हूँ, केवल स्त्री, मुझ से क्या डरना। मैं तो वही हूँ जो किसी उपन्यास, कहानी, नाटक मे चित्रित होती हूँ। जिस के अग-अग के रस के लिए कवि, नाटककार, उपन्यासकार बनना पडता है। फिर आप मुझ से डरते क्यो हैं ? कह डालिए।

[भीतर से]

महिम आगे कुछ मत कहना शशि, बिलकुल नही। आगे कुछ मत कहना। ये सब मेरे शुभचिन्तक हैं। शुभचिन्तक

[बाहर से]

शशि लेकिन मैं एक अन्तिम वाक्य कहे बिना नही रह सकती। मैं कहूँगी क्योकि वह मेरा अधिकार है। क्योकि यह आवाजें अपनी सीमा लांघ कर मेरे आँगन मे गूँज रही हैं।

[भीतर से]

महिम सारा ज़हर निचोडने की क्या यही अवधि है शशि, और और

[बाहर से]

और वह यह कि आप सब लोग मेरे घर से चले जाइए। कृपा कर के चले जाइए। आप लोगो का घर बहुत बडा है लेकिन आप बौने लोग हैं। मेरा घर बहुत छोटा है लेकिन....

[महिम भीतर से बाहर आ जाता है, सब लोग उठ कर चले जाते हैं।]

पहली आवाज चलिए खन्नाजी '

...ना आवाज	चलिए
...नरी आवाज	चलिए साहब !
...री आवाज	और क्या
...हिम	उफ् ! कितना अकेला हूँ मैं । शशि, तुम ने मुझे अकेला कर दिया । तुम ने अपने घर के चौखटे और छोटे कर दिये । आंगन में तुम ने धुएँ के बादल बिखेर दिये । मेरा आधार ही नष्ट कर दिया ।
...शि	आधार मनुष्य ढूँढ निकालता है । आधार मैं ढूँढूँगी, विश्वास ...न मे नही, आदमी में मिलेगा, मिलेगा मिलेगा

[समाप्ति-सूचक संगीत और उद्घोषणा]

अभी आप शरनजी-द्वारा लिखित नाटक 'टूटा आदमी' सुन रहे थे । इस समय रात के आठ बजा चाहते हैं और अब आप सुगम संगीत के रेकॉर्ड सुनिए ।

चलो बकवास बन्द हुई । क्या था इस नाटक में ? बकवास ।

बकवास भी एक बहुत बड़ा यथार्थ है नरेन्द्रजी, आदमी जब टूटता है, अपना आधार खो चुकता है तब

तब वह काम का नही रह जाता, बकवासी हो जाता है, शरन जैसा हो जाता है या यूँ कहें महिम-जैसा हो जाता है ।

अपनी कमज़ोरियों को छिपाने का यह एक बहाना है, अपनी कमज़ोरियों पर मुलम्मा चढ़ाया करता है, हीरो बनना चाहता है ।

जब आदमी कही से भी सहानुभूति नही पाता तब वह अपने शरीर पर बनावटी ज़ख्म पैदा कर के दूसरों की त्रस्त कल्पना से सहानुभूति निचोड़ना चाहता है । वही महिम ने किया है, वही शरन करता है ।

कामेश्वर : लेकिन नरेन्द्रजी, ड्रामा तो कम्प्लीट है। इस में कमी क्या है?

नरेन्द्र : कमी! क्या कहते हैं कामेश्वरजी? इस में लैक ऑव विजन है।

डॉ० अदारकर : और सामाजिक चोरी है। मैं कहता हूँ साहित्यकार को कौन-सा सुरखाब का पर लगा है? वह कोई भी अन्य काम क्यो नही करता? सिनेमा के पोस्टर लिखे। दवा बेचनेवाला के लटके क्यो नही लिखता? खासी आमदनी होती है, साहब, सौ-सौ पेज के जासूसी उपन्यासो के दो-दो सौ रुपये मिलते हैं। साहित्यकार क्यो नही लिखता इसे?

मि० कल्पना : देखिए आप लोग इतने पर्सनल क्यो हो जाते हैं – मुझे डिस्ट्रिक्ट फ्लड रिलीफ कॅमिटी की एक मीटिङ् में जाना है। पन्द्रह मिनिट का समय और है। मीटिङ् की कारवाई जल्द शुरू कीजए।

डॉ० अदारकर : मैं तो कभी से कह रहा हूँ। मेरे खयाल में एक प्रस्ताव पास कर के हम नये आदमी का चुनाव कर लें।

मि० कल्पना : देखिए प्रोसिडियोर की गलती मत कीजिए! पहले शरणजी के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव पास कर लीजिए, फिर पशु-रक्षिणी-समिति के नये सयोजक का प्रश्न उठता है।

।मे : मेरा खयाल है श्रीमती कल्पना को ही चुन लीजिए'

० कल्पना : देखिए बात यह है कि मेरे पास वैसे ही पाँच कुत्ते हैं। बुल डॉग है, एक हाउण्ड है, एक एलसेशियन है, एक पहाड़ी कुतिया है। और फिर मिस्टर राम का भी स्वास्थ्य ठीक नही रहता। आप क्या समझते हैं, इतना करने के बाद भी मेरे पास पशु-रक्षिणी-समिति के कार्य के लिए समय बचा रहेगा?

नरेन्द्र : वैसे तो मैं ही इस काम को ले लेता लेकिन इस के लिए तो

आदमी का जन्म

ऐसा आदमी चाहिए जिस में थोडी मिशनरी स्पिरिट हो ।

वामनकर — यह आप कह रहे हैं मिस्टर नरेन्द्र, मैं ने तो वैसे तय किया है कि इस साल मैं केवल लिखने का काम करूँगा । सिर्फ क्रीएशन ।

डॉ० पाल — अच्छा ' तो

नरेन्द्र — मि० पाल को क्यो न चुन लिया जाये ।

डॉ० पाल — जी मै इस संस्था से इस्तीफा देना चाहता हूँ । वैसे मैं समझता हूँ, डॉ० अदारकर को यह काम दीजिए । वही सजीदगी से करेंगे ।

डॉ० अदारकर — आप तो कमाल करते हैं पाल साहब, मवेशी-डॉक्टर होने के नाते मैं तो यह नित्य प्रति करता हूँ । रह गये आप लोग, सो अब यह काम आप का है ।

मि० कल्पना — देखिए वैसे मै यह काम स्वीकार लेती । लेकिन हमारे सेवा-समाज के मन्त्री महोदय नही रहे । मुझे उन का काम सँभालना ही पडेगा ।

नही अदारकर साहब, आप आइए भी, क्या रखा है इस में !

यदि मैं यह न ग्रहण करूँ तो शायद ज्यादा अच्छी तरह काम कर सकूँगा ।

नही-नही अदारकर साहब, इस साल हमारे शहर में अखिल भारतीय पशु-सम्मेलन होगा । आप रहेंगे तो बडा काम बन जायेगा ।

नही, नही साहब ।

ठीक है, मैं थोडी देर के लिए आप की बात माने लेता हूँ । लेकिन डॉक्टर साहब, आप यह बताइए कि सिवा आप के पशु और आदमी मे सम्बन्ध-समानता कौन स्थापित करेगा ?

नरेन्द्र	हटाइए भी साहब ! चलिए किसी को भी मन्त्री बनाइए ! लेकिन फिर इस के बाद क्या होगा ?
मि० कल्पना	यह कैसे हो सकता है। पहले शरनजी के ख़िलाफ़ प्रस्ताव रखिए।
डॉ० अदारकर	जी प्रस्ताव यो है— पशु-रक्षिणी-समिति की यह बैठक शरनजी की कार्यविधि के प्रति असन्तोष प्रकट करती है और उन के विरुद्ध यह प्रस्ताव।
नरेन्द्र	यह लीजिए थिंक ऑव द डेविल · ही इज देयर ···
मि० कल्पना	कौन मि० शरन ?
कामेश्वर	लगता है सुबह का भूला शाम को घर लौटा है।
मि० कल्पना	· फेमिली के लिए तो कुछ फीलिङ् ही नहीं है ··ही इज ए
डॉ० पाल	चलिए आये भी तो वैद्यराज को ले कर ··
	[शरन प्रवेश करता है पीछे-पीछे वैद्यजी और उस के पीछे एक पानवाला]
शरन	चले आओ, महादेव पनवाडो · चले भी आओ · [भीतर जा कर] वैद्यजी आज दो दिन हो गये होश ही नहीं आया इसे, जब कभी होश आता है तो बस [सहसा मरीज़ को होश आ जाता है] कौन कहता है मैं ने कुत्ते को काटा है वह सब गलत है मुझे छोड़ो मुझे छोड़ दो, यह पानी यह बाढ़ यह तूफ़ान ···यह नाली से घुसता हुआ गन्दा पानी, यह सब मेरी जान ले कर रहेंगे मेरी ···मेरी····जान ·जान ले कर ···
वैद्य	आप बाहर जायें, मैं देखता हूँ

[शरन बाहर आ जाता है]

शरन — तो महादेव ! तुम ने मुझे पान खिलाया है। लेकिन आज जरूरत ही ऐसी आ पड़ी है। यह रहा रेडियो। उठा ले जाओ। मैं रुपया भी नही लेता लेकिन घर में एक मरीज है।

महादेव — जैसी मरजी सरकार, मैं ने तो कहा था हुजूर पैसा ले जायें।

शरन — ठीक है। ठीक ही तो है। लाओ रुपये ! लो यह रेडियो ले जाओ।

कामेश्वर — अजीब आदमी है। हम लोगो से बात ही नही करता। स्नॉब कहीं का।

[illegible] — चलिए डॉक्टर साहब

मि० कल्पना — ऑल हम्बग ह्वॉट् इज दिस

डॉ० पाल — नाटक का एक पहलू है कल्पनाजी, नाटक का।

महादेव — यह लीजिए सरकार, पूरे डेढ़ सौ है। गिन लें हुजूर !

[इधर मुड़ कर]

शरन — कामेश्वरजी, मिसेज कल्पना डॉ पाल

डॉ० [illegible] — जी हाँ ! हम सभी है। शायद आप को याद न हो। आज आप ने मीटिङ् बुलायी थी। सारी बातो पर विचार करने के बाद हम सब एक साथ इस राय पर पहुँचे है कि आप पत्र-रक्षिणी-समिति का काम नही कर सकते। इस लिए हम आप से महज इतना ही चाहते है कि आप अपना चार्ज दे दीजिए।

[महादेव का प्रवेश]

महादेव — सरकार ' सरकार '''

शरन — तुम महादेव ' तुम लौट आये ?

महादेव — ' नदी का पानी मेरे घर में घुस आया है हुजूर, रेडियो यहीं रख लें। घर की दीवारें गिर रही है।

शरन — तुम्हारी मरजी, रख दो। और सुनो प्लग भी लगा दो। '' 'बाबू' लोग रेडियो सुन रहे थे न। ' लगा दो इसे

[वैद्यजी घबरा कर जाते हुए]

वैद्य — कुछ नही हो सकता 'कोई नही बचा सकता, वात, पित्त, कफ, किसी का विकार नही है फिर भी आदमी पागल हो जाये, कुछ समझ में नही आता '

शरन — . वैद्यजी वैद्यजी,

वैद्य — ब्रेन 'हामोराज' है, दिमाग की नस फट गयी है, कुछ नही हो सकता शरनजी, रोगी मर गया है''''

रेडियो-ध्वनि

रात के साढे दस बज चुके हैं। स्पेशल न्यूज बुलेटिन के समाचार सुनिए .

विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि जिस आदमी ने कुत्ते को काट लिया था वह इस समय इसी शहर के एक साहित्यकार के घर में है। सी० आई० डी० सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० [illegible] ने उस साहित्यकार का घर घेर लिया है, साहित्यकार को ऐसे खतरनाक जुर्म करने के लिए गिरफ्तार किया जायगा।

कुत्ता अस्पताल में है, कुत्ते की हेल्थ बुलेटिन में डॉक्टरों ने कहा है कि अभी आदमी के जहर का प्रभाव बहुत [illegible]। दरअसल आदमी का जहरीला खून और कुत्ते का [illegible]

आदमी का [illegible]

मिल जाता है तो यह ज़हर बड़ा खतरनाक साबित होता है। कुत्ते की जिन्दगी ख़तरे में है, आदमी के बारे में पता नही नदी में बाढ़ बड़े ज़ोर की है शहर का गन्दा पानी शहर से बाहर नही निकल पा रहा है, हेल्थ आफिसर का कहना है कि हर नागरिक को घर की नालियों के प्रति सावधान रहना चाहिए।

डॉ० भण्डारकर — मि० शरन! आप को चाहिए कि लाश को जल्द से जल्द बाहर कर दें। ज़हर घर में भी फैल सकता है।

शरन — ज़हर तो फैल चुका डॉक्टर, आदमी मर गया है

[अन्दर से डरी हुई सिसकियाँ सुनाई देती हैं, क्षण-भर सन्नाटा, फिर अकस्मात् पुलिस लॉरी के आने की ध्वनि]

भरद्वाज — मि० शरन, आप हिरासत में हैं। नायक सिंह, आप को लॉरी में बिठाओ।

डा० पाल — मगर क्यों? क्या किया है शरनजी ने?

भरद्वाज — इन्होंने खतरनाक जुर्म किया है। इन्होने उस पागल आदमी को पनाह दे रखी थी जिस से सारे शहर के पागल हो जाने का खतरा था। उस को देखते ही शूट कर देने का हुक्म था

मि० दारूवाला — [चीख कर] और इन्होंने उस को अपने घर में छिपा रखा था। हाउ इर्रेस्पॉन्सिबल! अपनी फेमिली तक की सीक्योरिटी का खयाल नही इस आदमी को।

[तुरन्त] हाँ, वह आदमी किसी बच्चे को ही काट खाता तो?

[दबी हुई मुस्कराहट से] हाँ, मिसेज कल्पना! जुर्म तो मुझ से हो गया। बात यह थी कि मैं भूल गया था कि मैं पशु-

रक्षिणी-समिति का सयोजक हूँ, पशुओं को पनाह देने का अधिकारी था, पागल आदमी की रक्षा करने का नही ।

मि० कल्पना — मि० शरन, चूँकि अब वह सस्था मेरे हाथ में सौंपी गयी है अत अब आप उस पर व्यग्य करने पर उतारू हो गये है ।

नरेन्द्र — नान्सेन्स । शरनजी, अपनी कटुता सस्था के गले में क्यों मढ़ते है ? सस्था का विधान पशुओं की रक्षा करने का आदेश देता है, पर आदमी की रक्षा करने की मनाही तो नही करता ।

डॉ० पाल — नही नरेन्द्रजी ! समिति का विधान आदमी की रक्षा करने की मनाही कहाँ करता है, वह तो सिर्फ यही आग्रह करता है कि पहले आदमी को पशु बनाओ तब उस की रक्षा करो, बिना पशु बनाये उस की रक्षा करना खतरनाक है ।

मि० कल्पना — लेकिन डॉ० पाल

डॉ० पाल — नही मिसेज कल्पना, आप इसे केवल अपनी सस्था पर ही न लें । सभी का आग्रह इसी बात पर है । सभी आदमी की रक्षा का दायित्व लेते हैं, पर रक्षा के पहले आदमी को पशु बनाना चाहते हैं ।

[बाहर से आती हुई लाउडस्पीकर की आवाज]

आवाज — बहस का कैसा अजीब मौका चुना है आप लोगों ने । आप लोग शायद भूल रहे है कि मि० शरन हिरासत में है, और उन्हें अभी लॉरी पर बिठा कर ले जाने के लिए मैं बाध्य हूँ । मि० शरन, आप लॉरी में बैठने की

डॉ० अदारकर — पर ठहरिए । पहले इस कागज पर दस्तखत कर दीजिए । मि० शरन, आप के इस्तीफा देने के पहले ही हम ने प्रस्ताव पास कर दिया था कि कि

नरेन्द्र — कि आप पशु-रक्षिणी-समिति के सयोजक के योग्य नहीं और

डॉ० दास

केवल मिसेज कल्पना ही उस महान् दायित्व को सँभाल सकती है।

शरन

लाइए दस्तखत कर दूँ। [दस्तखत करता है] बधाई, मिसेज कल्पना! नहीं-नहीं इसे व्यंग्य मे न लें। मैं सचमुच अपनी असमर्थता पहचानता हूँ। बात यह है मिसेज कल्पना कि आप और आप के पति मि० राम करुणा को नकाब की तरह ओढ सकते हैं। जब चाहे उतार कर आराम कर सकते हैं। मुझ से यह नहीं हो पाता। इसी लिए, शायद मैं इस संस्था के अयोग्य हूँ, इसी के लिए नहीं, इस सारी व्यवस्था में 'मिसफिट' हूँ।

डॉ० भटनागर

आप 'मिसफिट' हैं इस लिए आप तमाम दुनिया पर ऐसी व्यवस्था लादना चाहते हैं कि आदमी कुत्तों को काटे और अपना जहर फैलाये!

शरन

अपना नहीं, आप लोगों का। इस श्रद्धा और करुणा के नक़ाब के नीचे आप के जहरीले दाँत हैं। और जो आदमी से ज्यादा उन पशुओं को मात देते हैं जो पूँछ हिला कर आप के इर्द-गिर्द चक्कर लगायें। और आज से नहीं, सदियों से जिस ने आदमी की तरह तन कर आप का नकाब चीर फेंकने की कोशिश की है उसे जमीन में गड़वा कर आप ने उस पर कुत्ते छोड़े हैं। [बहुत तेज पड़ कर रुँधे हुए गले मे] और मैं सिर्फ कहना चाहता हूँ कि अगर सदियों तक आदमी आतंक को चुपचाप पीता रहा है तो यह शर्म की बात है और आज अगर उस की प्रतिक्रिया मे पागल हो कर उलट कर वह कुत्ते को काट बैठा तो यह बेहतर है, उस चुपचाप घुटते जाने से, उस निस्सहाय घुटन से

[बिलकुल घबरा कर] शरन पागल तो नहीं हो गया। ओह! मैं इस की बातें नहीं सुनना चाहती। मैं फेन्ट हो जाऊँगी।

यह आकाशवाणी है। सार्वजनिक रूप से यह सूचित किया जाता है कि नगर में आयी बाढ़ के कारण सभी नाले भर गये हैं और नगर का निचला भाग पूर्ण रूप से जलमग्न हो गया है। गन्दा पानी बढ़ता जा रहा है। अतः हर नागरिक को पूरी सावधानी रखनी चाहिए, घरों के दरवाजे बन्द रखने चाहिए और अपनी एवं सम्पत्ति की रक्षा स्वयं करनी चाहिए

भरद्वाज [अधीरता से] मि० शरन !

शरन मैं तैयार हूँ मि० भरद्वाज ! पर पहले उस आदमी की लाश तो बाहर निकालिए। घर में लाश सड़ रही है।

भरद्वाज उस की फ़िक्र छोड़िए। वह हमारा काम है। उस की चिन्ता नहीं। आप पहले लॉरी में बैठें।

शरन उस की चिन्ता नहीं ! ठीक है, सचमुच तो आप को जिन्दा आदमियों की है। सचमुच ना आप को मुझ से है। जहर तो मन में फैल रहा है ? क्या [हँसता है] चलिए, अब आप लोग जाएँ, मैं आप सब का आभारी हूँ।

[क्षण भर सन्नाटा छाया रहता है। फिर जाता कुर्सी के स्वर और पुलिस लॉरी के स्टार्ट होने और चलने का दूर जाता हुआ स्वर]

■

उस रात के बाद

पात्र

प्रकाश आयु छब्बीस वर्ष

रतन आयु बाईस वर्ष

सन्तोष आयु पचास वर्ष

विनोद आयु साठ वर्ष

विकास आयु साठ वर्ष

कौशल्या : पैंतालीस वर्ष

मिसेज़ चन्द्रा . चालीस वर्ष

(सुधा)

अतिमा तीस वर्ष

कला . तीस वर्ष

[रात और तूफ़ानी रात। एक रात! तेज़ हवा के झकोरों के साथ दरवाज़े और खिड़कियों के पल्लों की एक दूसरे से टकराने की आवाज़ें। रिमझिम-रिमझिम बारिश में बदल जाती है। बहुत दूर से रेल की सीटी सुनाई देती है। एक तेज़ गाड़ी जैसे बहुत दूर तीव्र गति से किसी पुल से गुज़र जाती है और सारा वातावरण थर्रा जाता है। घड़ी में बारह की घण्टियाँ बजती हैं। सहसा दरवाज़े पर खटखट की आवाज़]

मि० चन्द्रा (सहसा) — कौन? [एक तेज़ हवा का झोंका गुज़र जाता है और एक सन्नाटा भर कर मिसेज़ चन्द्रा फिर बैठ जाती है] कोई नहीं है। यह मेरी ही परछाइयाँ हैं जो मुझे ही डरा रही हैं। [फिर दरवाज़े से खटखटाने की आवाज़ आती है, मिसेज़ चन्द्रा चौंक जाती है।] कौन है? [फिर एक हवा-भरे सन्नाटे में] यह खिड़कियाँ हैं, आपस में ही टकरा कर एक दूसरे का परिहास-सा कर रही हैं। [फिर एक गाड़ी दूर पुल से गुज़र जाती है] फिर तीसरा बजा है [illegible] इस पुल से [illegible] रात ही रात यह गाड़ी गुज़रती है। [illegible] गया, पर वह [illegible] [आराम [illegible] की ध्वनि] [illegible]

[दूर दरवाजे पर दस्तकें]

जाने क्या हुआ है मुझे ? एक अजीब वहम है, बार-बार [illegible] लगता है जैसे कोई दरवाजे की कुण्डी खटखटा रहा है।

[दूर दरवाजे पर दस्तकें]

लेकिन कोई नहीं है सिर्फ मेरा वहम है सिर्फ वहम

[फिर वहां दरवाजे की दस्तकें]

वहम, महज वहम सिर्फ वहम

[फिर दरवाजे पर दस्तक]

कौन है ? कोई है क्या

[उठ कर दरवाजे तक जाती है। फर्श पर उस के पैरों की आवाज गूँज जाती है, फिर वह दरवाजा खोलता है]

कौन हो तुम लोग। इस तूफान में यहाँ क्यों आये हो। [illegible]। तुम दोनों तो काँप रहे हो लगता है [illegible] और [illegible] में पानी भीग गये हो। [illegible] मुँह क्या [illegible] रहे हो, चले आओ, अन्दर चले आओ न! [illegible] [[illegible] भीतर चले आते हैं [illegible] दरवाजा बन्द कर [illegible] फिर कुछ सोच कर कहती है] तुम दोनों पति-पत्नी हो न!

रतन — नहीं सिर्फ दोस्त हैं हम लोग।

मि० चन्द्रा — दोस्त... दोस्त! क्या कहा है ? [[illegible]] [illegible] बनाते हो, [illegible] नौजवान [illegible] और [illegible] यह दोनों सिर्फ [illegible] नहीं हो सकते। और फिर [illegible] पर [illegible] भी है [illegible] नहीं [illegible] कौन हो ?

अनिमा — जी, हम लोग सहपाठी हैं।

मि० चन्द्रा — सहपाठी [illegible] और [illegible] [illegible] सहपाठी [illegible]

[illegible]

बने हुए मकान की ही ओर भटक गये, [illegible] है, लगता है, जैसे वनवास में हमें हमारी माँ मिल गयी हो

रतन — वनवास, वनवास, कैसा, और माँ, कैसी माँ

अतिमा — तो तुम इसे वनवास नहीं मानते रतन, यह वनवास तुम्हें नहीं लगता।

रतन — मुझे तो जाड़ा लग रहा है अतिमा, बड़ी ठण्डक है।

मि० चन्द्रा — बड़ी ठण्डक है, है न, यह लो यह सूट पहन लो

रतन — जी, रहने भी दीजिए, मेरा काम चल जायेगा

मि० चन्द्रा — काम चल जायेगा, काम कैसे चल जायेगा, आधी रात को बारिश में भीगते हुए [जैसे भूली बातें याद करती हुई] बिलकुल ऐसी ही रात थी वह आँधी और तूफ़ान में डूबी हुई रात

अतिमा — आँधी और तूफ़ानों में डूबी हुई रात

मि० चन्द्रा — तुम लोग यहीं अँगीठी के पास बैठो मैं अभी आयी अभी आयी अभी आयी

[फेड आउट]

[[illegible] की आवाज़ के साथ पानी उबलने की ध्वनियाँ। मिसेज़ चन्द्रा किचन में चाय तैयार कर रही हैं। [illegible] के गुंजन की ध्वनियाँ [illegible] लगती हैं, स्मृतियों की तीव्रता के साथ [illegible] और पानी के उबलने की गति में भी [illegible] आ जाती है, प्यालों की [illegible] के साथ [illegible] जाती है]

मि० चन्द्रा — [illegible]

में भीगी थी। इसी तरह उन्होंने हमें कपड़े दिये थे, अपने हाथ से उन्होंने चाय बनायी थी, प्रकाश ने कहा था

[फ्लश बैक]

प्रकाश : रमा, जाने क्यों आज तुम्हें देख कर मां कुछ बोली नहीं, लगता है

रमा : लगता क्या है प्रकाश, मां ... मां जो होती है न ... !

मां : मां ... [एक रहस्यात्मक हंसी] मैं मां नहीं हूँ प्रकाश ... प्रकाश

प्रकाश : मां, मां यह तुम क्या कहती हो ... ? मैं ने जिसे आज तक

मां : मैं ठीक कहती हूँ, मैं तुम्हारी मां नहीं हूँ, आज यही बताने के लिए मैं ने दोनों को यहाँ बुलाया है, मेरे पास आ जाओ ... और नजदीक आ जाओ ... और नजदीक

प्रकाश : फिर तुम कौन हो मां

मां : एक ऐसी ही रात में अनायास ही मरते मरते बची एक [illegible] हूँ तुम्हारी मां, [illegible] जाने दो

प्रकाश : मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है मां, मैं तो यहाँ तुम्हारी हालत सुन कर आया था, [illegible] पास [illegible] ही बतलाया

नहीं जानते कि कला कौन है ? और सुधा [illegible]

सुधा — जी, मैं क्या जानूँ [illegible]

माँ — लेकिन तुम्हें जानना चाहिए, [illegible] जानना चाहिए जिन से तुम दोनों अपरिचित हो

सुधा — हमें आशीर्वाद दो माँ, अतीत के [illegible] क्या करेंगे हमें भविष्य के [illegible] दो ।

माँ — ह ह ह ह भविष्य के [illegible] ? भविष्य के [illegible] भी नहीं मिले हैं म उन में वंचित रही हूँ, [illegible] तुम ले सकोगी [illegible]

सुधा — मैं यह सब कुछ नहीं जानती

प्रकाश — सुधा, तुम भी [illegible], अपनी [illegible] [illegible] मत जाओ, [illegible]

मां — हैं [illegible], [illegible] आज [illegible] ।

प्रमोद — नहीं, मैं नहीं जाऊँगा मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दोऽऽ [प्रमोद को बड़ी तेज खाँसी आती है, खाँसते-खाँसते वह बेहोश हो कर जैसे थक जाता है]

माँ — इतना मना किया था किन्तु मानते ही नहीं, सेनेटोरियम से भाग कर यहाँ आये हैं, जिन्दगी के व्यंग्यों को अस्वीकार करते हैं

प्रकाश — जिन्दगी के व्यंग्य क्या ?

माँ — सब कुछ आज ही जान लोगे, मैं जो बताना चाहती हूँ क्या तुम उसे नहीं सुनोगे ?

प्रकाश — सुनूँगा माँ, लेकिन यह अपरिचित क्षयोवृद्ध रोगी ...

माँ — रोगी जो लोग जिन्दगी की कटुता को रोष से साथ नहीं स्वीकार करते हैं वही रोगी होते हैं, प्रमोद ने भी जिन्दगी की कटुता को चिन्ता के साथ स्वीकार किया है, इसी लिए यह गिरे हुए हैं, टूटे हुए हैं, चिन्तित और परेशान हैं

प्रकाश — लेकिन इन की चिन्ता का कारण क्या है ?

है मुझे, वही नौका मूड जो मैंने [illegible] [illegible] [illegible]
ही भयानक नहीं है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] और अनिमा, वही नौका मूड है [illegible] [illegible] [illegible],
वही समय कितनी अजीब बात है [illegible], लगता है
मैं खुद ही अपना बीता हुआ जीवन देख रही [illegible] लगता
है

[बाहर फिर दरवाजा खटकता है।]

अरी, यह चाय भी तैयार हो गयी [illegible] [illegible] [illegible] भी
कोई चीज निकालूँ, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]
गरीब इनसान [illegible] यह लोग भी, [illegible] [illegible] [illegible] जाने कहाँ
[illegible] पड़े हैं

[[illegible] फिर [illegible] का [illegible] आता है और [illegible]
[illegible] का [illegible] आता है।]

मि० [illegible] कौन?

[illegible] [illegible]

जिसे यह नहीं जानने दिया कि उन के ऊपर कि[illegible]
मनहूस छाया है, तुम आज उसी को जानने आये हो, [illegible]
जख्म को छेड़ने आये हो निकल जाओ यहाँ से

विकान्त मैं तो चला जाऊँगा लेकिन उस रात के बाद मैं [illegible]
ने सिर्फ जीने की कोशिश की है और मौत ने मेरे [illegible]
काली परछाईं की तरह घेरा है। मैं ने जीवन को [illegible]
कस कर रखना चाहा है और जिन्दगी एक रिसती रेत की
तरह मेरी मुट्ठियों से निसकती रही है तुम्हें याद है उस
रात दूर शहर से दूर, उस निराले रेतीले [illegible] पर जब
मैं तुम्हें साथ ले कर उतरा था। सारी दुनिया को [illegible]
हम ने साथ साथ चलने का वायदा किया, समाज, [illegible]
सब का विरोध किया था, तुम तुम शायद नहीं मानोगी,
उस रात के बाद से मैं बदल गया था।

मि० चन्दा उस रात के बाद से ही मुझे लगा था कि तुम आदमी नहीं
पशु से भी गिरे गुज़रे हो, बिल्कुल गिरे-गुज़रे [illegible],
दाग़िल हीन, [illegible] जब तुम [illegible] में रहे थे तब
[illegible] लग रहा था कि तुम [illegible]
[illegible] हो [illegible]
है, नहीं [illegible] है, नहीं [illegible] है, लेकिन मैं [illegible]
बिल्कुल अच्छी, नहीं था '

[illegible] मैं उन सब बातों [illegible] आता है [illegible]
[illegible]

मि० चन्दा है, है, ? [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

आत्मा का [illegible]

बाद जब मैं निराधार निरवलम्ब चल पड़ी थी, तो जाने क्यों ट्रेन भी मीलों लम्बी यात्रा के बाद मैं यहीं उतर गयी थी, क्यों उतर गयी थी इस का कारण मैं पिछले तीन वर्षों से खोज रही हूँ, जानना चाहती हूँ लेकिन नहीं जान पाती, जिन्दगी की इस मोड़ को मैं पहचानती हूँ लेकिन वह रात नहीं भूल सकती, यह सुनसान निराला स्टेशन और इस के बरामदे में यों ही बारिश और तूफान में अकेली मैं और वह रातों-रात बरसी घण्टों बाद किसी ने दरवाजा खोला, एक रोशनी अन्धकार में रेंगती हुई आयी, उस ने मुझे छू दिया

[फ्लैश बैक]

तुम कौन हो बोलती क्यों नहीं, बोलो

मोम-जैसा ... ओ तुम ... तुम अभी बैठी नहीं [illegible] जाओ, सर्दी लग रही है ? अंगीठी जला दूँ, नहीं ! अच्छा अच्छा, तो यह कम्बल ओढ़ लो ... [illegible] कितनी [illegible] हो तुम [illegible] किसी बिस्तर सामान के चल पड़ी हो, और किस के यहाँ जाओगी ... बोलो भी ... कुछ बोलती क्यों नहीं ?

मि० चन्द्रा : किसी के यहाँ नहीं

प्रकाश : किसी के यहाँ नहीं ? हूँ ... यह भी खूब रही, तो फिर तुम यहाँ उतरी किस लिए हो

मि० चन्द्रा : मुझे कुछ नहीं मालूम, बस उतर पड़ी हूँ

प्रकाश : ओह ! यह बात है ! क्या किसी [illegible] की शिकार हो ? लगता है तुम्हारे प्रेमी ने तुम्हें [illegible] । [illegible] [illegible]

मि० चन्द्रा : [illegible]

प्रकाश : [illegible]

मि० चन्द्रा : [illegible]

चाहिए, पता नहीं कहाँ प्रमोद पत्र [illegible] होगा मन कला, क्या तुम्हें उन की कभी भी याद [illegible]।

कला — तुम्हें हो क्या गया है, यह सब क्या कह [illegible]

डॉ० मन्नोद — आज तीन साल हो गये हैं इस नाटक को [illegible], सोचा [illegible] उस का अन्तिम दृश्य क्या होगा, [illegible] में होगा, पता नहीं।

कला — [illegible] पर फिर बातें होंगी, [illegible] रहा है

[फेड आउट]

मि० चन्ना — पता नहीं प्रकाश ने कितनी सहानुभूति [illegible] [illegible] जायगा, [illegible] [illegible]

[फ्लैश बैक]

कौशल्या — मैं ने तुम से बार-बार कहा है प्रमोद, अपनी [illegible] प्रकाश पर मत पड़ने दो, [illegible] ने [illegible] कला ने तुम्हें, लेकिन [illegible] के लिए न तुम्हें [illegible] बदला लेना चाहिए न मुझे। जिन्दगी में [illegible] भावना [illegible] बड़ी कठिनाई से आते हैं, मैं उन्हें नष्ट नहीं [illegible] है वह जिन्दगी ही [illegible] मैं [illegible] प्रमोद बाबू !

प्रमोद — लेकिन मैं, भावनाओं से [illegible] जीवन की पूर्णता में [illegible] भी विश्वास [illegible] भी विश्वास करता हूँ, तुम

[illegible] — [illegible]

[illegible] — [illegible]

[illegible] — [illegible]

सुधा — लेकिन लेकिन माँ, यह अतिमा ... यह मेरी ...

माँ — इसे मुझे दे दो, जीवन में मैं ने और कुछ नहीं किया है ... केवल भविष्य में विश्वास ... कर ही ... को ... की है

प्रमोद — [खाँसते हुए] ... भी ... यह ... भी ... यह बात, मेरी साँसें फूल रही हैं [... लगता है]

सुधा — माँ

माँ — प्रमोद बाबू

प्रमोद — मेरे नजदीक आओ और नजदीक आओ ... रहा है प्रकाश प्रकाश प्रकाश

सुधा — ... प्रमोद बाबू!

[illegible] [ब्रेंध म] विराम

प्रकाश — इस रात के बाद तुम ने जिन्दगी को नये अन्दाज से शुरू किया था हुआ, आज इस रात के बाद से हम भी जिन्दगी को नये तरीके से शुरू करने दो 'आओ, आओ [illegible] आओ आओ [illegible] आओ'

[illegible] — य[illegible] गया [illegible] हो

प्रकाश — कुछ नहीं, [illegible] आवाज [illegible] रहा है।

[illegible] — [illegible], पानी अभी [illegible], चाय तैयार [illegible] हूँ [illegible] यहीं म

[[illegible] आवाज [illegible] जाती है।]

आकाशगंगा की छाया में

मधु — सर्दी है। खिडकियाँ बन्द कर दो अमित !

अमित — शाल ओढ लो मधु, सर्दी तेज है। कही टेम्प्रेचर न बढ जाये।

मधु — अब टेम्प्रेचर बढने-घटने का डर मालूम नही होता अमित वैसे अब तो बता दो हम कहाँ जा रहे हैं ?

अमित — कुछ नही मधु, बस ज़रा भुवाली मे डॉक्टरो को दिखा ले, एक शक है दिमाग में दूर हो जाये घबराने की बात नही है। सब ठीक हो जायेगा।

मधु — [व्यंग्य से] सब ठीक हो जायेगा ह ह''' ह [सहमा रुक कर] सुनो अमित मुझे बीच वाली बर्थ पर सो जाने दो।

अमित — क्यो ?

मधु — वहाँ हवा कम लगेगी, ज़रा-सा सहारा दो।

अमित — सहारा [व्यंग्य] ठीक है, उठो।

[ट्रेन की स्पीड तेज हो जाती है, मधु उठती है और गिर पड़ती है]

अमित — मधु मधु मधु बेहोश हो गयी, उठा कर बर्थ पर लिटा दूँ।

[उठा कर बर्थ पर लिटा देता है]

अमित — यह जिन्दगियाँ जैसे झेलने मे भी बन रहती है, दग मे कुछ ऐसा है जिसे झेला नही जा सकता, कुछ अजीब है मन, यही मधु तो है आज से दस वर्ष पूर्व लगता था सोम और पद्म को गला कर इस का सारा जिस्म रचा गया था

[मधु को जैसे थोडा-थोड़ा होश आता है लेकिन अर्धमूर्छित दशा में कुछ बडबडाती-सी कहती है।]

मधु — शिरीष नही नही शिरीष '' मेरी शकल मत देखो, मत देखो यह रूप, यह शरीर, यह सब सारे शृगारों के वावजूद ' सारे शृगारो के वावजूद ' शिरीष शिरीष

[मधु फिर वेहोश हो जाती है, एक मूर्च्छना मे जैसे उसे विस्मृत घटनाएँ याद हो आती हैं। उल्लासपूर्ण संगीत वजने लगता है'''सहसा सगीत जो नस-नस में हर्ष, उल्लास और उन्माद भर देता है।]

[फ्लैश वेक]

शिरीष — मधु ।

मधु — क्या है ।

शिरीष — यह चाँदनी यह ठण्डी रेत ' उधर सामने के ढहते कगार यह सब कैसा लगता है

मधु — [शोखी के साथ] वहुत अच्छा ''

शिरीष — जादू-जैसा ?

मधु — सपना-जैसा ? विलकुल झिलमिले सपने-जैसा [शिरीष चुप हो जाता है]

मधु — तुम चुप क्यो हो गये शिरीष' '

शिरीष — जाने क्यो मेरी नज़र तुम्हारे वालो में उलझ गयी'''

मधु — नही तो तुम तो मेरी घडी की तरफ देख रहे थे, तुम वात वना रहे हो

शिरीष — हूँ आख़िर घडी की तरफ देखना गुनाह है क्या ?

मधु — नही लगता है यह घडी तुम्हे खटकती है

शिरीष — क्यो ? इस घडी वेचारी ने क्या किया है ?

मधु — शादी मे इसे अमित ने दिया था न,

शिरीष — वही अपनी प्रयोगशाला में·· आकाशगंगा की छाया में मैं भूल गया था, आज मुझे फिर जाना है

मधु — लेकिन

शिरीष — लेकिन कुछ नही मधु, मुझे जाना है, मैं जाता हूँ

मधु — ठहरो मैं भी चलती हूँ, तुम्हारे साथ ही चलूँगी, चलो।

शिरीष — नही तुम घर जाओ

मधु — मैं भी प्रयोगशाला में ही जाऊँगी चलो '

[चेंज़ ओवर]

मधु — अमित अमित '

अमित — [नींद से जगते हुए] क्या है मधु ?

मधु — देखो अमित, तुम बिलकुल मेरे पास रहो ··मेरे नज़दीक।

अमित — क्यो ··? बात क्या है मधु '

मधु — लगता है अमित, कि जैसे शीशे के उस पार से शिरीष, शशि, और जाने किस-किस की शकलें मेरे एक दम पास आ रही हैं ' उन की व्यग्य-भरी हँसी बन्द कर दो अमित उस सामने वाले आईने पर परदा डाल दो परदा '

अमित — तुम्हें वहम हो गया है लगता है तुम ने कोई खौफनाक सपना देखा है ···खैर कोई बात नही, मैं तुम्हारे नज़दीक आ जाता हूँ चलो सो जाओ !

मधु — नींद भी तो नही आती अमित आँखें बन्द कर लेती हूँ तो अजीब भयानक सपने मुझे आ कर घेर लेते हैं और आँखें खोलती हूँ तो यह सामने का आईना अजीब-अजीब शक्लें दिखाता है

अमित — तुम भूल जाओ सारा सब कुछ ' शिरीष, शशि, चाचाजी

आत्मा का [illegible]

सब को त्याग दो ' सब की तसवीरें दिमाग मे तुम्हारे घूमती हैं मधु, आईने में कुछ भी नही है।

मधु तुम तो मेरी बात ही नही समझते अमित 'मै कहती हूँ '' यहाँ आओ वह आईना तुम देखो ' देखो है न वह शिरीष की शकल''''बिलकुल वैसी ही शकल उस में दिखाई देती है

अमित अच्छा-अच्छा होगा भाई मान लिया ' लेकिन अब तो तुम सो जाओ '''आँखें बन्द कर लो ' 'बिलकुल बन्द कर लो, तुम्हें कुछ नही दिखाई देगा '' ।

मधु [आँखें बन्द करती है लेकिन फिर चीख पड़ती है] नही ''' नही '''मुझे किसी की कृपा नही चाहिए किसी की कृपा नही चाहिए ।

अमित [मधु को जगाते हुए] मधु ''मधु''' होश में आओ मधु ' '

मधु सारे नियम तुम ने इतने कठोर बना दिये है अमित, कि मुझ से उन का निभना कठिन है अभी-अभी मै ने तुम्हारे कहने से अपनी आँखें बन्द कर ली थी कि सहसा शशि का वही जला हुआ चेहरा मेरे सामने आ गया मेरे रोंगटे खड़े हो गये मुझे लगा जैसे उस की आँखें मुझे निगलने को दौड़ी आ रही हैं''''बोलो-बोलो अमित, ऐसा क्यो होता है क्या शशि का कोई पत्र आया है इधर ?

अमित जब इलाहाबाद से चले थे उसी दिन शाम को शशि का पत्र मेरे पास आया था, लेकिन उस में कोई खास बात तो ऐसी नही थी '

मधु मुझे तुम ने क्यो नही बताया

अमित इस लिए कि तुम फिजूल उस में उलझ जाती वही पुरानी बातें शिरीष शशि ' मैं तुम '

मधु — लेकिन शशि की याद आते ही मुझे भय-सा क्यों लगने लगता है ?

अमित — वह तुम्हारी कमजोरी है मधु 'यह लो ''यह स्लीपिङ् डोज ''लो ''तुम थोडा-सा पी लो और सो जाओ ''

मधु — इस दवा से नीद मुझे नही आती अमित !

अमित — आज नीद आ जायेगी। क्योकि तुम्हारा टेम्प्रेचर आज कम है ''

मधु — अब कम हो कर भी क्या करेगा' ' खैर लाओ। लेकिन मैं जानती हूँ नीद नही आयेगी ''

[प्रयोगशाला का दृश्य। मशीनो की कुछ ध्वनियाँ]

मधु — तो शशि आज भी जिन्दा है ? विवाह के आज पाँच वर्ष बाद तुम ने मुझे यह बताया कि तुम्हारे मन मे शशि की गहरी छाप है'''शायद तुम उसे ही अपना स्वप्न, अपना सत्य समझते हो' 'मैं बीच में यो ही आ पडी हूँ ''

शिरीष — मै आज से पाँच वर्ष पहले जब तुम से मिला था तो मेरे मन में कोई दुविधा नही थी। शशि के प्रति मेरा आकर्षण नही रहा था'''

मधु — लेकिन वह आकर्षण आज पाँच साल बाद क्यो जागा है ? क्यो नहीं तुम अपने अन्तर की इस आवाज को पहले सुन सके थे ' आज तुम्हारी आवाज में पछतावा क्यो बोल रहा है ?

[शिरी]ष — पछतावा नही मधु, शायद मेरी कायरता बोल रही है मुझ में साहस की कमी थी एक जमाने में शशि ही मेरे लिए सर्वस्व थी ''आकाशगगा मे तैरते नक्षत्रो को देखते-देखते हम तमाम रात बिता देते थे प्रयोगशाला की छत पर उन नक्षत्रों की दौड-धूप मे, उन की छाया में जैसे एक धूल-भरा ससार था जो सहसा उठा, उगा और खामोश हो गया।

मधु	फिर क्या हुआ ? [व्यग्यपूर्ण स्वर में]
शिरीष	होता क्या ! घटना ने सब कुछ बदल दिया आज से पाँच साल पहले की वह रात ••
	[फ्लैश बैक]
शशि	मैं देख रही हूँ शिरीष, वह वहाँ। उस क्षितिज से वह धूमकेतु उठा है। तुम ठीक कहते हो। तीन घण्टे तक तो यह अपनी विलक्षण ज्योति से चमकता रहा है, इस की रोशनी और तेज होती जा रही है और तेज। लेकिन यह फिर डूब रहा है, शिरीष, डूब रहा है•••
	[एक अत्यन्त करुणाजनक तीव्र गति वाला सगीत]
शिरीष	अब उस मशीन के पास से हट जाओ शशि मैं पिछले दस वर्षों से उसे हर पाँच वर्ष के बाद इसी तरह उभरते देख रहा हूँ ••पाँच वर्ष में एक ही बार यह दिखाई पडता है, लेकिन जब यह डूबने लगता है तो जाने क्या हो जाता है इस मशीन को। यह एकदम गरम हो जाती है ••यह काबू में नही रहती !
शशि	लेकिन आज कुछ नही होगा शिरीष, क्योकि मेरी आँखो में डूबने वाले सपने नही है, मै आज इसे डूबते हुए देखूँगी •• देखूँगी कि वह कैसे धीरे-धीरे इस आकाशगगा में डूब जाता है। डूबने दो इसे डूब जाने दो।•••
	[मशीन की आवाज तेज हो जाती है]
शिरीष	मशीन काबू के बाहर जा रही है शशि, मशीन से दूर हट जाओ • हट जाओ ••
शशि	मै देख रही हूँ शिरीष •उस अग्नि-पिण्ड का रग बदलता आ रहा है एक दम से लाल, लाल से पीला, पीले से नीला, नीले से बैगनी उफ् कितना सुन्दर रग है लगता है लगता

है जैसे एक रग दूसरे मे मिलता जा रहा है। कोई एक-दूसरे से अलग नही है। सब एक-दूसरे मे मिलते जा रहे हैं अनन्त, अबाध और तेज गति से

[एक अत्यन्त करुण तीव्र गति वाला सगीत]

शिरीष : [घबराकर] शशि···वहाँ से हट जाओ मशीन में आग लग गयी है शशि, दूर हटो हटो····

शशि और यह घना अन्धकार जो प्रकाश-पिण्ड के पीछे पीछे आ रहा है। लगता है जैसे समूची आकाशगगा की छाया है, जो उसे निगल लेती' लगता है, जैसे उस की घनी चादर एक-दम तीव्र गति से उस पर छायी जा रही है चलो रोको उसे···रोको

[सहसा चीख कर बचाओ-बचाओ, सगीत और तेज हो जाता है लगता है एक भूकम्प-सा आ गया है सारा वातावरण झनझना जाता है सारी दिशाएँ गूँज जाती है।]

शिरीष शशि 'शशि'

शशि इस बढते अन्धकार को रोको शिरीष वह उगता हुआ धूम-केतु जो प्रत्येक पांच वर्ष के बाद निकलता है सहसा इस अन्धकार की गोद में समा जाता है। जाने कितनी शक्ति है इस अन्धकार में जो इतने प्रचण्ड और प्रदीप्त प्रकाश-पिण्ड को यूँ ही निगल लेता है। बचाओ बचाओ बचाओ

[सहसा सारा वातावरण झनझना कर टूट जाता है, एक मरघट-जैसी शान्ति छा जाती है शिरीष शशि शशि कहता हुआ समीप आता है, शशि के जले हुए चेहरे को देख कर चीख पड़ता है, शशि धीरे-धीरे कराहती रहती है।]

[फ्लैश बैक · समाप्त]

शिरीष · हर पांच वर्ष बाद इसी प्रकार यह धूमकेतु निकलता है आ

आदमी का ...

फिर निकलेगा 'आज मैं इसे देखूँगा, अन्त तक देखूँगा ''
देखूँगा कि कैसे वह प्रकाश-पिण्ड एक दम अन्धकार के गर्भ मे समा जाता है

मधु — नही नही शिरीष, ऐसा न करना। सुनो, मैं तुम से कह रही थी

शिरीष — क्या कह रही थी तुम ' ?

मधु — यही शिरीष कि शशि नही आ रही है, शायद अमित आने वाला है, चाचाजी का कोई सन्देशा होगा।

शिरीष — अमित आने वाला है ?

[वाहर कुण्डी खटखटाने की आवाज]

शिरीष — [कुछ तेज रूप में] कौन ? कौन है ? वोलते क्यो नही ?

अमित — [व्यग्य के स्वर में हँसते हुए] कोई बात नही डियर ' तुम नाराज़ भी होते हो तो वडे वैज्ञानिक ढग से, तीन रीडिङ् लेने के वाद'''

शिरीष — ओह तो तुम हो अमित, कहो, आज इतनी रात को इस प्रयोग-शाला में कैसे ?

मधु — मैं जानती थी आज तुम जरूर आओगे अमित, अखवार में पढा था कि आकाशगगा के नक्षत्रो की सख्या तुम ने गिन ली है ''पढा था कि आकाशगगा के रहस्य का उद्घाटन तुम करने वाले हो ''सोचा, लगे हाथ तुम से पूछती चलूं। वैसे तुम वस आकाशगगा के हो हो के रह जाओगे, है न !

शिरीष — क्या मतलव ? तुम कहना क्या चाहते हो ''?

अमित — कुछ नही'''पर हाँ ' मधु को इस प्रयोगशाला से तुम दूर ही रखो ''यही कमरा है यही जगह है जव पहली वार आकाशगगा की ओर घूरते-घूरते तुम्हारी मशीन में आग लग गयी थी और मशीन के फट जाने से शशि का चेहरा

है जैसे एक रग दूसरे मे मिलता जा रहा है। कोई एक-दूसरे से अलग नही है। सब एक-दूसरे मे मिलते जा रहे हैं अनन्त, अबाध और तेज गति से

[एक अत्यन्त करुण तीव्र गति वाला सगीत]

शिरीष : [घबराकर] शशि'''वहाँ से हट जाओ मशीन में आग लग गयी है शशि, दूर हटो हटो''''

शशि और यह घना अन्धकार जो प्रकाश-पिण्ड के पीछे पीछे आ रहा है। लगता है जैसे समूची आकाशगगा की छाया है, जो उसे निगल लेती' 'लगता है, जैसे उस की घनी चादर एक-दम तीव्र गति से उस पर छायी जा रही है चलो रोको उसे'''रोको '

[सहसा चीख कर बचाओ-बचाओ, सगीत और तेज हो जाता है ' लगता है एक भूकम्प-सा आ गया है सारा वातावरण झनझना जाता है सारी दिशाएँ गूँज जाती है।]

शिरीष शशि ' शशि

शशि इस बढते अन्धकार को रोको शिरीष वह उगता हुआ धूम-केतु जो प्रत्येक पांच वर्ष के बाद निकलता है सहसा इस अन्धकार की गोद में समा जाता है। जाने कितनी शक्ति है इस अन्धकार में जो इतने प्रचण्ड और प्रदीप्त प्रकाश-पिण्ड को यूँ ही निगल लेता है। बचाओ बचाओ बचाओ

[सहसा सारा वातावरण झनझना कर टूट जाता है, एक मरघट-जैसी शान्ति छा जाती है शिरीष शशि-शशि कहता हुआ समीप आता है, शशि के जले हुए चेहरे को देख कर चीख पड़ता है, शशि धीरे-धीरे कराहती रहती है।]

[फ्लैश बैक समाप्त]

शिरीष हर पांच वर्ष बाद इसी प्रकार यह धूमकेतु निकलता है 'आ'

फिर निकलेगा 'आज मै इसे देखूँगा, अन्त तक देखूँगा' देखूँगा कि कैसे वह प्रकाश-पिण्ड एक दम अन्धकार के गर्भ में समा जाता है

मधु — नही नहीं शिरीष, ऐसा न करना। सुनो, मै तुम से कह रही थी

शिरीष — क्या कह रही थी तुम ?

मधु — यही शिरीष कि शशि नही आ रही है, शायद अमित आने वाला है, चाचाजी का कोई सन्देशा होगा।

शिरीष — अमित आने वाला है ?

[बाहर कुण्डी खटखटाने की आवाज]

शिरीष — [कुछ तेज रूप में] कौन ? कौन है ? बोलते क्यो नही ?

अमित — [व्यग्य के स्वर में हँसते हुए] कोई बात नही डियर ' तुम नाराज़ भी होते हो तो बडे वैज्ञानिक ढग से, तीन रीडिङ् लेने के बाद···

शिरीष — ओह् तो तुम हो अमित, कहो, आज इतनी रात को इस प्रयोगशाला में कैसे ?

मधु — मैं जानती थी आज तुम जरूर आओगे अमित, अखबार में पढा था कि आकाशगगा के नक्षत्रो की सख्या तुम ने गिन ली है ··पढा था कि आकाशगगा के रहस्य का उद्घाटन तुम करने वाले हो ··सोचा, लगे हाथ तुम से पूछती चलूँ। वैसे तुम बस आकाशगगा के ही हो के रह जाओगे, है न।

शिरीष — क्या मतलब ? तुम कहना क्या चाहते हो ··?

अमित — कुछ नही ··पर हाँ 'मधु को इस प्रयोगशाला से तुम दूर ही रखो यही कमरा है' यही जगह है जब पहली बार आकाशगगा की ओर घूरते-घूरते तुम्हारी मशीन में आग लग गयी थी और मशीन के फट जाने से शशि का चेहरा

जल गया था। आकाशगंगा के नक्षत्र तो जहाँ के तहाँ रह गये थे। लेकिन शशि उस का अभिशाप अभी तक भोग रही है ··

मधु — लेकिन शशि के लिए तुम क्यों बेचैन हो ?

शिरीष — पुरानी बातें सुना के मुझे डराना चाहती हो मधु, जाने दो

अमित — मैं तुम्हें यह सुनाने नहीं आया, सिर्फ शशि का पता पूछने आया हूँ, कहाँ है वह कैसी है ··कभी-कभी उस से भी

शिरीष — मुझे नहीं मालूम कि वह कहाँ है

अमित — जिस के बगैर तुम एक मिनिट नहीं रह सकते थे, उस का पता भी नहीं है तुम्हारे पास, दुनिया बड़ी तेजी से बदलती है··तुम नहीं जानते शायद ··

शिरीष — और मैं जानना भी नहीं चाहता अमित

मधु — जानने की जरूरत भी क्या है ?

अमित — जरूरत है है है है खैर · कई महीने हुए शशि मुझे मिली थी। उस का जला हुआ कुरूप चेहरा देख कर पहले तो मैं पहचान नहीं पाया लेकिन वह मुझे पहचान गयी। मेरे पास आ कर उस ने नमस्कार किया बोली मुझे पहचानते हैं आप, मैं खुद दुविधा में पड़ गया फिर साहस कर के सोचा, जब मैं नहीं ही पहचान पाया तो फिर

[illegible]रीष — तो फिर उस ने तुम से बताया कि वह शशि है शायद उस ने तुम्हें यह भी बताया कि मैं बहुत बुरा आदमी हूँ, क्योंकि मैं ने उस से विवाह नहीं किया, क्यों कि मैं ने उस के रूप का अपमान किया यही न !

अमित — यह सब तो उस ने कुछ नहीं कहा, लेकिन मैं ने [illegible] अनुमान लगा लिया था। मैं जानता था कि तुम [illegible] नैतिक साहस नहीं हो सकता क्योंकि तुम आकाशगंगा [illegible]

ज्योति का लेखा-जोखा लेने वाले आदमी हो, तुम को इस धरती और मिट्टी की सुविधा-असुविधा से क्या काम ?

मधु — चुप रहो अमित, क्या बके जा रहे हो ?

शिरीष — मैं ''मैं मजबूर था अमित बेहद मजबूर'''शायद''' बेबस ''

अमित — हाँ बेबसी भी तो कई प्रकार की होती है शिरीष, लेकिन शायद ऐसी ही किसी बेबसी को स्वर्ग भी कहते हैं'' खैर जाने दो इन बातों को, मैं देखता हूँ कि शशि की तसवीर अब भी तुम ने अपनी प्रयोगशाला में लगवा रखी है, आखिर ''

शिरीष — आखिर तुम्हें आपत्ति हो ही गयी न आकाशगंगा के नक्षत्रों का प्रयोग मेरे जीवन में सब से अमूल्य वस्तु है अमित ' शशि ने मुझे इस कार्य में जो योग दिया था मैं उसे कभी भी भुला नहीं सकता। शायद वह मेरे जीवन की सब से महान् स्मृति है '

मधु — शिरीष !

अमित — ठीक कहता हूँ ''स्मृतियाँ रखना ही शायद सभ्यता की सब से बड़ी निशानी है, हम सब सभ्य हैं क्योंकि हम अपनी-अपनी स्मृतियों में आज भी अपने पूर्वजों का इतिहास जिन्दा रखे हैं शशि की स्मृति सजीव रखी है 'वैसे सभ्य होने में तुम्हारे भी कोई कसर नहीं है।

शिरीष — व्यंग्य करने की तुम्हारी आदत आज भी वैसी ही है अमित '' तुम बात नहीं समझते, काश कि तुम यह जान पाते कि अच्छे से अच्छा आदमी कभी बेबस मजबूरियों में इतना बुरा लगने लगता है कि

अमित — कि वह बुरा भी नहीं लगता यही न !

शिरीष — हूँऽ ' तुम चाहो तो इस तरह से भी कह सकते हो लेकिन'''

अमित — लेकिन मेरे साथ यह बात नही है। बुरा लगने वाला आदमी मुझे बुरा ही लगता है, मैं आदमी की कोई भी मजबूरी ऐसी नही मानता जो उसे कायर बना दे और

शिरीष — खैर छोडो इन बातो को मधु, इन्हे घर ले जाओ, मैं एक घण्टे बाद आऊँगा, जाओ अमित, घर आ कर तुम से रात-भर बातें करूँगा··

मधु — चलो अमित, घर चलें।

[फ्लैश बैक समाप्त]

[धीरे-धीरे ट्रेन रुकती है। धक्का लगने से मधु फिर जग जाती है]

मधु — अमित

अमित — क्या है मधु ?

मधु — यह डिब्बे की खिडकियाँ बन्द कर दो, जाने क्या हुआ है, मुझे लगता है जैसे तुम उस खिडकी से कूद कर बाहर जा रहे हो।

अमित — तुम पागल तो नही हो गयी हो

मधु — नही अमित, लगता है जैसे मेरा विश्वास टूट रहा है

अमित — मैं कही नही जा रहा हूँ मधु' मैं कही नही जाऊँगा, तुम सो जाओ··· सो जाओ न।

मधु — मुझे नीद लगती है तो भयानक सपने परेशान करते हैं, जागती हूँ तो लगता है, तुम खिडकी से कूद कर मुझे छोड कर भाग जाना चाहते हो···

अमित — आँखें बन्द कर के सो जाओ सो जाओ मधु, पिछली बातें भूल जाओ।

मधु — कैसे भूल जाऊँ। अतीत तो भूत बन कर मेरे पीछे पडा है

[फ्लैश बैक]

मधु — लेकिन तुम्हें यहाँ बुलाया किस ने था ?

अमित — अपने स्वार्थ ने' 'पाँच वर्ष हो चुके थे, तुम ने भी तो मुझे नही भुलाया था ''तुम्हारे प्रत्येक खत में मुझे एक विचित्र प्रकार की पीडा-मिश्रित वेदना दिखती थी। लगता था जैसे तुम अनायास ही किसी पिंजरे में कैद हो, वार-वार तुम उस पिंजरे की विवशता को जबरदस्ती ओढना चाहती हो '' लेकिन '

मधु — लेकिन यह सब होते हुए भी मै ने किसी पत्र में यह तो नही लिखा था कि तुम यहाँ आ जाओ, मै ने यह तो नही कहा था कि तुम शिरीष से जो मन में आये वह वातें करो ''

अमित — मै ने कोई विशेष बात नही की। मैं ने उसे वार-वार केवल यही वतलाया कि तुम उस की किसी भी हालत से नही हो सकती'''उस ने कहा, नही वह मुझे बहुत चाहती है ''मेरी पत्नी है ''मै ने कहा 'तुम ने कभी मधु का उदास चेहरा देखा है कभी उस की आत्मा की पीडा को पहचानने की कोशिश की है, कभी उस की डवडवायी आंखो को देखा है, उस की प्यासी आत्मा, कुतूहलपूर्ण नेत्र 'कम्पित अधर '' एक नितान्त तडपती प्यास ''।

मधु — वस-वस वन्द करो वन्द करो यह सारा प्रलाप। तुम ' तुम ने यह सब क्या किया ' क्यो किया'''तुम को मैं ने अपना विश्वास दिया था अपनी श्रद्धा दी थी' 'अपनी पूजा दी थी इस लिए नही अमित, कि तुम मुझे कलकित करो इस लिए भी नही कि तुम उस का वदला अपनी राक्षसी प्रतिहिंसात्मक मनोवृत्ति से लो।

अमित — प्रतिहिंसात्मक हूँ मैं ? ह ह ह ह ये शब्द भी क्या है तुम्हारे। इन्हें जीवन का आभूषण वनाता है ' दूसरो पर आरोप लगा कर सुखी वनने की चेष्टा करता है ' मै पूछता

हूँ, क्या तुम प्रसन्न हो ? क्या तुम शिरीष को चाहती हो ? क्या उस के प्रति ईमानदार हो ?

मधु — यह सब प्रश्न बेकार हैं जीवन में मैं ने शिरीष को चुन लिया है और हर चुनी हुई वस्तु के प्रति एक मर्यादा निभानी ही चाहिए मैं उस मर्यादा को निभाना चाहती हूँ

अमित — यह मर्यादा कौन-सी बीमारी है ? मेरी समझ में कुछ नहीं आता, शिरीष मन से शशि को अपना जीवन-साथी चुनना चाहता है, लेकिन उस ने उसे नहीं चुना है फिर भी वह कहता है कि वह शशि से मर्यादा निभाना चाहता है, तुम शिरीष से प्रेम नहीं करती फिर भी तुम ने उसे जीवन-साथी चुन लिया है और तुम भी मर्यादा निभाना चाहती हो मैं पूछता हूँ

मधु — तुम सब कुछ पूछ लेना चाहते हो, शायद तुम आदमी को आदमी की तरह देखना भी नहीं चाहते ।

अमित — मैं आदमी को आदमी की ही तरह देखना चाहता हूँ मधु, लेकिन तुम लोग आदमी को देवता बनाना चाहती हो शिरीष भी आत्मा की दोहाई देता था । कहता था, शशि की आत्मा से उसे प्रेम है लेकिन उस के विरूप चेहरे में शशि की आत्मा खो गयी है । यानी यह कि विरूपता में आत्मा खो जाती है

[सहसा एक धड़ाके की आवाज होती है । मधु चीख पड़ती है, पृष्ठभूमि में ट्रेन का स्वर फ्लैश बैक समाप्त]

मधु — रोको ! रोको ! बचाओ !

अमित — क्या बात है मधु, मधु होश में आओ ।

मधु — [स्वप्न सा में] कौन ? शिरीष तुम

अमित — मैं ... मैं शिरीष नहीं अमित हूँ मधु, मधु होश में आओ, क्या क्या है

मधु जाने क्या बात है अमित, मुझे जब भी हलकी-सी नींद लगती है तो मैं एक भयानक सपना देखती हूँ। लगता है यह ट्रेन एकदम अँधेरी गुफा में चली जा रही, और गिर रही है और उस में मैं हूँ, तुम हो शिरीष है, शशि है सभी एक भयकर रेल की दुर्घटना में घायल पडे है।

अमित तुम फिजूल ही इतनी बातें सोचती हो मैं कहता हूँ भूल जाओ भूल जाओ उस पिछले स्वप्न को।

मधु नही भूल पाती अमित, मेरे सामने वही दृश्य आ जाता है वही, जब रेल-दुर्घटना में घायल हो शिरीष अस्पताल में पडा था उस की आँखे जाती रही थी। वह अन्धा हो गया था, सहसा उसी अस्पताल में तुम ने शशि को नर्स के रूप में देखा था ' तुम चीख पडे थे तुम तुम तुम'''[फिर बेहोश हो जाती है।]

[फ्लैश बैक]

अमित शशि''''शशि तुम ''तुम यहाँ नर्स का काम करती हो''''

शशि [होठ पर अँगुली रखते हुए] श ' श''''श शिरीष बाबू के कान में मेरा नाम न पडने पाये

अमित क्यो ?

शशि उन्हें शॉक लगेगा, उन को दिमागी परेशानी होगी।

अमित क्यो, तुम अब भी शिरीष बाबू को उतना ही चाहती हो !

शशि छोडो इन बातों को। डॉक्टर आ रहे है, मुझे जाने दो।

अमित अजीब बात है, शिरीष कहता है कि विरूपता के बावजूद भी उस के मन में शशि के लिए स्थान है 'शशि कहती है '''

मधु शशि कुछ भी कहे अमित, जाने क्यो मुझे दोनो से भय लगता है' ' जब से शिरीष की आँखें जाती रही है, मुझे उधर देखने

की इच्छा नहीं होती, मुझे चाचाजी के यहाँ पहुँचा दो अमित ।

अमित — तुम होश में तो हो मधु, पति को अस्पताल में छोड़ कर तुम जाओगी, दुनिया क्या कहेगी ।

मधु — दुनिया जो भी कहे अमित, मुझ से यह नहीं सहा जाता

अमित — लेकिन लोग कहेंगे कि मधु अमित के साथ चली गयी

मधु — मैं उस के लिए भी तैयार हूँ, मैं ऊब चुकी हूँ इस जीवन से अमित, मुझे ले चलो....

अमित — ठहरो, उधर सुनो – शिरीष और शशि क्या बातें कर रहे हैं ?

[क्लोज कन्वरसेशन]

शिरीष — नर्म, तुम ने पिछले महीने-भर में मेरी बड़ी सेवा की है ।

नर्म — यह तो मेरा फर्ज था

शिरीष — फर्ज ! नर्म....

नर्म — जी ।

शिरीष — एक बात पूछूँ ?

नर्म — पूछिए ।

शिरीष — तुम्हारा नाम क्या है ?

नर्म — नर्म ।

शिरीष — नर्म, मैं ने तुम्हारा पता नहीं नाम पूछा था ।

नर्म — दोनों में कोई अन्तर नहीं है शिरीष बाबू !

शिरीष — अन्तर ! तुम्हें कैसे बताऊँ नर्म ! अगर आज मेरी आँखें होतीं तो शायद मैं और अच्छी तरह समझ सकता.... काश मैं तुम्हें देख सकता तो यह प्रश्न ही नहीं पूछता !

नर्स — प्रश्न ज्यादा नही पूछना चाहिए, सो जाइए।

शिरीष — नही नर्स, तुम्हें आज अपना नाम बताना होगा। बताओ!

[दूर से आती हुई ध्वनियों में ताँगा आने का स्वर]

शिरीष — कौन ? कौन आया है नर्स ?

नर्स — कोई आया नही है, कुछ लोग जाने वाले है। उन्ही के लिए सवारी आयी है।

शिरीष — किसी मरीज़ को छुट्टी मिल गयी शायद....

नर्स — हां, मरीज़ ही थे।

शिरीष — क्या हुआ था ?

नर्स — यह तो आप ही बता सकते है, क्योकि वे मरीज़ तो आप के साथ आये थे।

शिरीष — तुम्हारा मतलब इस रेल दुर्घटना में ..

नर्स — जी हां।

शिरीष — क्या नाम था, इस लिए कि शकल से तो अब पहचान नही पाऊँगा ?

नर्स — एक का नाम मधु है।

शिरीष — मधु ?

नर्स — जी।

शिरीष — और दूसरे का ?

नर्स — अमित।

शिरीष — और तुम शशि हो न ? बोलो, बोलो तुम शशि हो न ? शशि ' शशि

नर्स — हां, और मै शशि हूं।

शिरीष — और मैं शिरीष ...अन्धा शिरीष, जो तुम्हारी विरूपता नही देख सकता, जो शायद कुछ भी नही देख सकता ' सिर्फ पहचान सकता है पहचान ' !

[फ्लैश बैक समाप्त । मधु फिर चौंक पड़ती है, उठ कर बैठ जाती है]

मधु — अमित !

[कोई आवाज नहीं आती]

मधु — अमित ! अमित ! अमित ! [पुकारते-पुकारते गाड़ी का चेन पकड़ कर खींच लेती है, गाड़ी रुक जाती है, चारों तरफ शोर-गुल बढ़ जाता है, अमित का कुछ पता नहीं चलता]

गार्ड — चेन आप ने खींची है श्रीमतीजी ?

मधु — हां गार्ड, मेरा पति मुझ को छोड़ कर भाग गया है, मैं मरीज हूं गार्ड ! मैं अकेले इस डिब्बे में नहीं रह सकती, मुझे खौफनाक सपने परेशान करते हैं ।

गार्ड — आप को भुआली जाना है न ?

मधु — जी ।

गार्ड — लेकिन गाड़ी अब काठगोदाम पहुंच गयी है, कुछ ही दूर है आप वहीं अपना इन्तजाम कीजिएगा ।

[गार्ड सिगनल देता है, तभी शशि आ जाता है]

शशि — कौन मरीज है गार्ड ? उस की देख-भाल मैं कर दूंगी

मधु — शशि तुम !

शशि — कौन शशि ? तुम्हें वहम हुआ है, मैं नर्स हूं नर्स ।

मधु — लेकिन तुम तो शशि हो ! शशि ! शशि

शशि — सो जाओ, लगता है रात-भर नींद नहीं आयी तुम्हें !

मधु — भयानक सपने जो देखती हूं, पर इस भयानक … अमित भी मुझ से डर गया, आधे रास्ते में छोड़ कर चला गया … चला गया … चला गया

[फेड आउट]

रबर का बबुआ

पात्र

विनय	आयु लगभग तीस वर्ष
सुरेन्द्र	आयु लगभग पैंतीस वर्ष
विपिन	आयु लगभग बीस वर्ष
बड़े बाबू	आयु लगभग पचपन वर्ष
जमादार	आयु लगभग पैंतीस वर्ष
किल्विन	आयु लगभग पैंतालीस वर्ष
छोटे बाबू	आयु लगभग तीस वर्ष

शकुन — आयु लगभग पच्चीस वर्ष
आधुनिका

सुधा — आयु लगभग पच्चीस वर्ष
विनय की पत्नी

अन्य।

[एक गली में दूर से आती हुई ध्वनियाँ। बच्चों का शोर " उस शोर में से ठेले पर खिलौने वेचने वाले की ध्वनि धीरे-धीरे निकट आती जाती है, निकट और निकट। गली का शोर भी बढता जाता है।]

[ठेले वाले की ध्वनि]

ले लो बाबू चार आना
रबर का बबुआ चार आना
सस्ता मद्दा चार आना
नया आदमी चार आना
बिक गया बाबू चार आना
रबर का बबुआ चार आना
बिका आदमी चार आना

बच्चा — ऐ''' ऐ कैसा आदमी है ? देखें'''

ठेले वाला — [रबर का बबुआ बजाता हुआ] यह है आदमी—आँख पर चश्मा, गले में टाई, घिसा-पिटा दफ्तर का बाबू, फटी-चिटी यह छवि है छायी, बोल रहा है—सुन लो भाई !

[आवाज बबुए की]

दूसरा बच्चा — ये चार आने से कम में नही बेचोगे कुछ तो कम करो ?

ठेले वाला — अरे साहबजादे, यह आदमी है आदमी। इस की कितनी कीमत गिरायें ? घास-पात का बना होता तो भी तो इतना सस्ता नही होता, फिर यह तो रबर का है भाई जान रबर का ! [फिर बबुआ बजाता है]

दूसरा बच्चा — चाहे रबर का हो चाहे मिट्टी का और चाहे घास-पात का, पर दाम तो इस का बहुत ज्यादा है। देखो न, यहाँ से इस

का रंग छूट रहा है, इतनी पालिश इस की छूट गयी है और देखो न यहाँ से यह टूट रहा, यह जोड़ भी कुछ दिनों में छूट जायेगा····

ठेले वाला — हो न इस बसन्तपुर मुहल्ले के, तुम लोगों की नस-नस में शरारत भरी रहती है जो भी हो, उस में नुक्स निकालने के लिए तैयार रहते हो अमाँ, यह रबर का आदमी न होता तो इतना सस्ता देता क्यों ? ऐं है। क्या नखरे हैं ले जाओ साहबजादे, आदमी इस से सस्ता नहीं मिल सकता।

पहला बच्चा — हमें आदमी नहीं चाहिए हमें रबर का बबुआ चाहिए बबुआ, चाहें तो टब में बैठा कर नहलायें, चाहें तो नाली में फेंक दें, चाहें तो बादशाह बना कर रोलें और चाहें तो चपरासी बना कर छोड़ दें, क्यों जी, ठीक है न ?

दूसरा बच्चा — ठीक तो कहता है रमेश, आदमी हमें नहीं चाहिए, तुम अपने आदमी को चाहे जिस दाम पर बेचो, पर यह रबर का बबुआ इस का दाम तो बहुत ज्यादा है चार आने, चार आने का कौन खरीदेगा इसे ?

पहला बच्चा — हाँ-हाँ, दो-दो पैसे में, टके-टके में देना हो तो दे जाओ, समझे ?

ठेले वाला — नहीं जी, मैं नहीं बेचूँगा आदमी मेरा है, रबर का हुआ तो क्या, मैं नहीं बेचूँगा आखिर दाम गिराने की भी कोई हद होती है कितनी कीमत गिरा दूँ इस की ?

[बच्चों का समवेत स्वर]

तो चले जाओ हम यह रबर का आदमी नहीं लेंगे, चले जाओ · जाओ

[ठेलेवाला भी चिल्लाता हुआ चला जाता है—]

ले लो बाबू चार आना ऽ ऽ ऽ ।
बिका आदमी चार आना ऽ ऽ ऽ ।
रबर का बबुआ चार आना ऽ ऽ ।

[पाज]

विनय — मानता हूँ दोस्त, तुम भी आदमी कमाल के हो, तमाम जिन्दगी रबर के बबुए बेचने में बिता दिया तुमने भी, क्या कमाल है साहब ! तुम्हारे ऊपर तो एक नाटक लिखा जा सकता है । [जम्हाई ले कर] लेकिन कौन लिखेगा ? मैं ? हूँऽ अगर यही दफ्तर रहा मि० विनय, तो अजब नही कि तुम्हारा जनाज़ा भी दफ्तर से ही निकले । निकलना भी चाहिए मेरे दोस्त !

सुधा — मैं कहती हूँ यह कमरे में किस से बातें हो रही हैं ? शेव का गरम पानी यहाँ ठण्डा हुआ जा रहा है ।

विनय — आ रहा हूँ भाई, क्या बीबी मिली है मुझे भी बिलकुल रेलवे की टाइम टेबिल की तरह, बिलकुल ठीक । चलो मेरे साहब, अर र र, यह तो मैं भूल ही गया खैर कोई बात नही, अभी कहे देता हूँ ।

सुधा — क्या कर रहे हो, उठते नही बनता, मुझे भी जाडा लगता है ?

[विराम]

विनय — अरे, सुधा · सुधा

सुधा — क्या है ? सुबह से ही चिल्ला रहे हो ?

विनय — मुझे आज ऑफिस जल्दी जाना है भाई, फिलिप साहब के साथ बैठ कर एरियर ! [स्वगत] क्या ज़िन्दगी पायी है मैं ने भी, सिर्फ दफ्तर सिर्फ दफ्तर

सुधा — देखो जी, मुझे यह सब बिलकुल पसन्द नहीं है, समझे, बार-

वार याद दिलाते रहने से ही मैं कोई काम नहीं कर सकूँगी, मुझे मालूम है।

विनय : अच्छा-अच्छा देवीजी, क्षमा चाहता हूँ, भूल हुई। मैं नहीं जानता था कि आप को याद दिलाने से इतनी परेशानी हो जावेगी।

[सायकिल की घण्टियों की आवाज लगातार निकट आती जाती है]

विपिन : अरे मैं ने कहा बाबू विनय कुमार बी० ए०, एल० एल० बी०

विनय धत् तेरी की, यह भी इसी वक्त आ टपका, मैं ने कहा, सुधा-जी 'सुधा देवी

सुधा तुम को तो जैसे चेत ही नहीं पड़ती, आ गया है जो ?

विनय मैं क्या बताऊँ, यह देखो विपिन आया हुआ है, जरा दरवाजा खोल दो और यहीं ऊपर भेज दो, कमबख्त कर्ज़ को नौजवान कभी नहीं होना चाहिए। यह फाइलों में भी [illegible] फिरते हैं

विपिन ओ होऽऽ ! वाह हजरत, यह बात है ! वाह साहब, अभी आप सो ही रहे हैं। आठ बज गये हजरत, जानते हैं यहाँ यह जो मलकुल-मौत मुन्शी [illegible] प्रकार [illegible] हैं दर्द बरज़ों के वह बन गए हैं न, [illegible] दाखिल-दफ्तर हो चुके होंगे, और जहाँ हम लोगों में [illegible] वहाँ यह नौजवानों का [illegible] जिन्दगी गुनाहगार।

[illegible] अभी बैठो भी, क्या धरा है इन [illegible]

[illegible] अरे देखो, भई यह [illegible] लगती, चलो चाय पियो और [illegible]

विनय · चाय, नाम मत लेना मेरे दोस्त ! देखो, सुधा जरा अपनी भाभी को आवाज दो।

विपिन — क्यो ?

विनय — इस लिए कि सुवह से मैं सैकडो वार वुला चुका हूँ, रात ही से कुछ पारा चढा हुआ है। ज़रा ड्रामा के रिहर्सल से लौटने मे देरी हो गयी वस ·

विपिन — अच्छा, तो यह वात है, ऊपर से वेचारी भाभी को ही दोष देते हो।

विनय — अर्मा, चुप भी रहो, ज़रा धीमे से चाय की फरमाइश कर दो न !

विपिन — तुम भी क्या कहोगे, विनय वावू ! [आवाज देता है] भाभीजी, मैं ने कहा, मैं आ जाऊँ, थोडी मदद कर दूँ ? यह विनय तो महज़ नालायक है, और आप ने तो इसे वस रवर का ववुआ वना रखा है ववुआ

सुधा — अजी क्या कहते है, हम ही तो आप लोगो को वनाते हैं ! दूध के धोये हुए है आप लोग ? [चाय रखने की ध्वनि, चम्मच और वरतनों की खनक] यह लीजिए चाय।

विपिन — आप भी तो वैठिए भाभीजी

सुधा — मैं क्या करूँगी यहाँ वैठ के, अपने भाई साहव से कहिए शकुनजी को वुला लें, चाय का वक्त है, वात भी वन जायेगी···

विपिन — शकुनजी ! क्या वात करती हैं भाभीजी, कहाँ आप और कहाँ शकुनजी !

सुधा — यह तो अपने भाई साहव से पूछिए।

विनय — [मस्ती के स्वर] हूँ ऽ · वात तो ठीक ही है विपिन, वात यह है कि वीवी

विपिन — वस आगे मत कहना विनय, जानते हो न मुझे ? वह गत

बना देगा कि अरे, भाभीजी तो चली गयी, तुम बड़े शैतान हो विनय !

विनय — मैं शैतान हूँ ? ठीक ही है भाई जान, मियाँ बीबी में से एक को शैतान होना ही चाहिए, दोनों अगर देवता हो गये तो बात बिगड़ जाती है ...।

विपिन — यह भी खूब कही, और अगर बात बिगड़े न तो बनती भी नहीं ...खैर, यह तुम कहते हो लेकिन मैं सोचता हूँ ...

विनय — तुम सोचना बन्द कर दो ! देखो, यह सोचने का मर्ज हर आदमी नहीं पाल सकता, समझे । जल्दी से चाय पियो, फाइल उठाओ और दफ्तर की ओर चल दो ।

सुधा — अभी से दफ्तर ? तुम तो कह रहे थे दस बजे जाओगे ? क्या नौ ही बजे दफ्तर लगने लगा ? कमाल है ! फिर क्या है, मिलने वालों से कहिए बिस्तर भी वहीं लगवा दिया करें ! दिन-रात वहीं रहा कीजिए न आप लोग !

विनय — बात तो ठीक कहती हैं, लेकिन कम्बख्त मानेंगे नहीं ! और कोई बात नहीं, किसी खास मौके पर आप की यह बात कही जायेगी, यकीन मानिए इस पर गौर किया जायेगा !

सुधा — आप तो गौर करते ही, आप को क्या ? [illegible] और आज क्या-क्या ?

विनय — [हँसते हुए] [illegible]

सुधा — [illegible]

विपिन — नही भाभी, यक़ीन मानिए, ज़रा यह नाटक हो जाने दीजिए। अगर यह रास्ते पर नही आया न, तो मारते-मारते धोबी बना दूँगा धोबी।

विनय — अरे विपिन, छोडो इन बातो को। जरा रेडियो ऑन करो। यार, शायद कोई अच्छा भजन ही सुनाई दे जाये···

विपिन — अमां देर हो जायेगी। फिज़ूल के लिए अगर कही भजन की धुन तुम्हें पसन्द आ गयी तो जम कर बैठ जाओगे और यहाँ मौत हो जायेगी।

विनय — लगा भी यार, तू तो पूरा दफ्तरी हो गया है दफ्तरी!

विपिन — ठीक है, लगाये देता हूँ।

[विपिन रेडियो ऑन करता है, कुछ ही सेकेण्ड में स्त्री स्वर में यह भजन आता है ·]

भजु मन राम चरन सुखदायी···
भजु मन राम चरन सुखदायी !

विपिन — सुन लिया न, अब तो चलो।

विनय — भाई, मैं तो बिना पूरा भजन सुने उठने वाला नही हूँ।

विपिन — अच्छा तो हूज़ूर मैं चला।

विनय — अमां, रुको भी!

विपिन — नो सर, नौकरी इज़ नौकरी ·

[रेडियो पर भजन चलता रहता है। सायरन और मिल मशीनों की आवाजें। बाहर कुछ शोर-गुल, कभी कोई गाती हुई ध्वनि सुनाई देती है। कभी बोझ उठाने वालों की ध्वनि 'हैइय्या, हैइय्या' के स्वर, कभी भीड़-भाड़, कभी ठेलेवालों का स्वर ' 'रबर का बबुआ चार आना। ले लो बाबू चार आना।' फ़ोन की घण्टी बजती है।]

रबर का बबुआ

वडे वाबू — हल्लो। पेपर मिल प्लीज 'येस, जी नही, मि० विनय कुमार अभी नही आये हैं ।'''जी, आप का मतलब क्या है ? आप उन से मिलना चाहती हैं तो पेपर मिल का पता बताये देना हूँ, चली आइए न ? अच्छा आप की मरजी · मरजी' ·

[फोन रख देता है]

अजीव मुसीवत है। यह दफ्तर न हुआ, आशिको के पता-ठिकाने का इन्क्वायरी दफ्तर हो गया। जब से आया हूँ तीन वार फोन अटेण्ड कर चुका। अब की वार अगर फिर घण्टी वजी तो ··

[फोन की घण्टी वजती है]

वडे वावू — [खीझ कर] हल्लो·· पेपर मिल यस नही मिस्टर विनय-कुमार का कोई पता नही है, आप कौन हैं ? जी, मिस शकुन, जी नही, मैं आप को नही जानता। मिस्टर विनय कुमार साढे दस वजे आयेंगे। जी नही मेरा दिमाग खराव नही है ·मैं मुन्शी अम्बिकाप्रसाद हेड क्लर्क पेपर मिल्स वोल रहा हूँ, देखिए आप खुद आ कर उन से मिल लीजिए।

[फोन रख देता है]

` वावू — सुना तुम ने विपिन, फिर उसी ने फोन किया है

न — कौन वडे वावू ?

वावू — अरे वही वह छोकरी जो है, क्या नाम है उस का जो साहव के साथ मोटर ड्राइव करती हुई आती है·· ?

मिस शकुन ?

` वावू — हाँ···हाँ, वही· ·मैं ने भी डाँट के कह दिया

विपिन — · क्या कह दिया वडे वावू ?

वडे वावू — यही कि मैं तुम्हारा नौकर नहीं हूँ।

आदमी था ज़हर

विपिन : यह कह दिया आप ने वडे वावू !

[मिस शकुन का प्रवेश]

शकुन : हल्लो वडे वावू···

वडे वावू [कुछ घवरा कर] जी ·जी···यह आप···

विपिन हाँ तो फिर मिस शकुन ने क्या कहा ?

शकुन : ऐंई ·मिस शकुन मैं हूँ ·मैं।

वडे वावू [कॉपती हुई आवाज में] कुछ नहो, कुछ नही शकुन देवी, यो ही। भला मै आप को क्या कह सकता हूँ ?

विपिन · ओह तो आप ही है मिस शकुन ! अभी आप ही का फोन आया था ?

शकुन जी अभी-अभी मै ने ही फोन किया था। आप जानते नही विनय हमारे क्लव का हीरो है !

विपिन हीरो ! क्या मतलव आप का ?

शकुन मेरा मतलव हमारा क्लव एक नाटक कर रहा है, उस नाटक में विनय हीरो का पार्ट कर रहा है ··

वडे वावू हीरो का पार्ट ! तव तो वहुत अच्छा है, हमारे लिए गर्व की वात है। क्यो जी विपिन·

विपिन जी क्यो नही, क्यो नही, आखिर यह हौसले की वात तो है ही।

शकुन यही नहो, देखिए यह टिकिट है। आप लोगो को लेना ही चाहिए।

वडे वावू टिकिट · !

विपिन टिकिट लगा कर ड्रामा होगा क्या ?

वडे वावू यह तो आप लोगो की ज्यादती है।

शकुन ज्यादती क्या है वडे वावू, अव देखिए न, दिसम्वर में वेवी-

शो होने वाला है, उस में इनाम देने के लिए हमें चन्दा लगाना जरूरी पड गया।

वडे वाबू	वेबी-शो ' 'देखिए न कुमारीजी, यह सब वेबी-फेवी-शो मेरे समझ के वाहर की वात है, मैं तो उस ज़माने का हूँ जब वच्चो को काजल लगाया जाता था ताकि उन को नज़र न लगे। मैं तो इस वेबी-शो को पसन्द नही करता।
शकुन	अच्छा नाटक देखना तो आप पसन्द करते हैं, वह जो मि० फ़िलिप्स हैं न, वही तो इसे डाइरेक्ट कर रहे हैं। वह तो आप के मैनेजर हैं, क्या उन के लिए आप इतना छोटा-सा भी काम नही कर सकते ?
विपिन	बडे वाबू, देखिए तो वह फाइल न० न० न०
वडे वाबू	चपरासी चपरासी '
चपरासी	जी हुजूर!
वडे वाबू	वह साहब की मेज़-वेज़ साफ किया कि नही ? तुम लोगो को कोई काम खुद अपने-आप करने नही आता!
शकुन	और देखिए न वडे वाबू, मि० फिलिप्स यानी आप के मैनेजर
वाबू	अबे, यहां से क्या साफ कर रहा है, साहब की मेज साफ कर।
	कुल दो रुपये के तो टिकिट हैं
वाबू	दो रुपये! जमादार ओ जमादार' '
	वडे वाबू!
जमादार	जी हुजूर!
वडे वाबू	अबे, अभी तक साहब के कमरे मे झाड़ू नही लगायी ?
जमादार	लगा चुका हूँ।

बड़े बाबू — फिर से सफाई करो, जानते नही ज़रा-सा कूड़ा रहने पर साहब कितना नाराज़ होते है ?

शकुन — मि० विपिन !

विपिन — बड़े बाबू, वह डिस्पैच रजिस्टर ''

शकुन — [खीझ कर] आप लोगो को ज़रा भी एटिकेट नही आती । मैं एक लेडी हो कर टिकिट के लिए कहती हूँ और आप है कि कर्टसी छू तक नही गयी है ।

बड़े बाबू — देखिए बीबीजी, हम लोग क्लर्क हैं, जानती हैं आप '' सिर्फ़ दो वक्त दाल-रोटी खा कर तीस साल से नौकरी कर रहा हूँ, घी के नाम पर पिछले दस सालो से एक बूँद नही नसीब हुआ है, आप लोगो को ब्रेक फ़ास्ट, लंच, टी, डिनर वगैरह मिलता है, हमारे बच्चे सिर्फ दाल-रोटी । बेबी-शो में पैसा देने से अच्छा तो है कि एक-एक आने हम अपने बच्चो को दें तो बत्तीस दिन तक कुछ खिला सकते हैं । आप जायें हमें टिकिट नही चाहिए ।

शकुन — इस के माने यह हुए कि

विपिन — इस के माने जो कुछ भी है बहुत साफ हैं ।

[शकुन भुनभुनाते हुए चली जाती है]

शकुन — यू, क्लर्क्स ! यू आर डूम्ड टू बी सो ···पिटिऐबल इन्सेक्ट्स ···

[समवेत हँसी]

जमादार — जाव-जाव मेम साहेब, ई गिटिर-पिटिर कै मायाजाल इहाँ न चली ·

चपरासी — आयी रही साहेब कै रोब डारै, हम से कहिन तौ हम कहि दिहा जाओ ऊ साहब पै रोब डारो, हमरे पास का है ?

वडे वावू	यह सारी शरारत उसी विनय की है।
विपिन	अरे नही वडे वावू, टिकिट वेचना आजकल की लडकियो का फैशन है •
वडे वावू	आग लगे ऐसे फैशन को वडी लडकियाँ विना सकोच के निकल पडती हैं....
विपिन	और अपने उस रवर के ववुआ को क्या कहूँ, वडा ही धूर्त है।
वडे वावू	होगा जी, मैं तो इस के सख्त खिलाफ हूँ।
चपरासी	मेज साफ कर दिया वडे वावू !
जमादार	और झाडू भी लग गयी वावू !
वडे वावू	अवे, जा भी, मैं वात टालने के लिए कह रहा था। जा • जा...।
	[घड़ी मे दस का घण्टा वजता है]
सुरेन्द्र	नमस्कार वडे वावू,
वडे वावू	कौन ? सुरेन्द्र ? और आज तुम अपने पडोसी को कहाँ छोड आये ?
सुरेन्द्र	आप का मतलब ?
[illegible]	हाँ-हाँ, वडे वावू का मतलव है रवर का ववुआ कहाँ छोड आये ?
वावू	अच्छा तो अव समझा, तुम भी विपिन मजे के आदमी हो, नाम देने में तुम से ज्यादा शातिर कोई नही मिलेगा।
[illegible]	जी वडे वावू, देखिए न उधर विनय को तो रवर का ववुआ कहना शुरू कर दिया है और इधर आप को मलकुलमौत के नाम से सुशोभित कर दिया है।
वडे वावू	खामोश ! मैं यह सव वदतमीजी नही पसन्द करता। कल के लडके अभी-अभी तो यूनिवर्सिटी से निकले हैं, लेकिन गर्रा है

कि बस ··जानते हो मैं मुन्शी अम्बिकाप्रसाद हूँ अम्बिका-प्रसाद, बडे-बडे अँगरेज़ अफसर मेरा लोहा मानते थे, मौका पडने पर नचा देता था नचा···।

सुरेन्द्र — अजी जाने भी दीजिए बडे बाबू, यह विपिन क्या समझेगा आप को। अभी उस दिन जब साहब को अपना बिल पास कराना था, ऐसा गिडगिडा रहे थे कि लगता था···

बडे बाबू — जी, आप तो थे ही उस दिन, तीन बार उन का बिल वापस आ चुका था, मैं ने भी सोचा कि चलो चलने दो, एक-न-एक दिन तो साहब को भी मेरे पास आना पडेगा। और आये···। आखिर तजरबा भी तो कोई चीज़ होती है।

विपिन — चुप···चुप। वह देखिए · रबर का बबुआ आ रहा है, क्या चाल है · क्या मस्ती है ··क्या अकड है ··! दूर से देखने में लगता है किसी दफ्तर का साहब है साहब।

बडे बाबू — अरे, साहब बनने से क्या हुआ, है तो मेरी मातहत। आज-कल के छोकरे बस यूनिवर्सिटी से निकले कि उन का दिमाग़ खराब हुआ, समझते हैं सारी क़ाबिलियत कपडे पहनने से आ जायेगी।

विपिन — हाँ बडे बाबू, देखिए न, जिस कपडे का साहब ने सूट बनवाया है उसी कपडे का इस ने भी बनवाया है, कह रहा था बडे बाबू, कि इस बार होली में वह आप को एक टोपी भेंट करेगा। कहता था, उफ कितनी चीकटदार आप की यह गोल टोपी है ··

सुरेन्द्र — फिर वही ऊल-जलूल की बात करते हो विपिन, अभी बडे बाबू ने कहा है कि पुरानी चीज़ों की क्या कद्र है, यह मौके-मौके पर पता चलता है, तुम क्या समझते हो, बडे बाबू की यह टोपी ऐसी है जिस के सामने न जाने कितने अँगरेज़ सिर झुका कर चले गये।

विपिन · हाँ जी, पुरैठ होने का वडा असर पड़ता है ·।

वड़े वावू तुम्हें ताज्जुव होगा विपिन कि, यह टोपी मैं ने कर्नल शिपा-नाजेके वक्त खरीदी थी। आज दस साल हो गये लेकिन साहव कद्र-दाँ तो अँगरेज थे, क्या कद्र करते थे, वगैर मुन्शी लगाये नाम नही लेते थे।

सुरेन्द्र वीस साल-यानी कि वड़े वावू के वड़े लड़के के वरावर इस टोपी की उम्र है, देखते-देखते वड़े वावू ने अपने सिर पर एक पीढ़ी उगा ली है।

[विनय का प्रवेश]

विपिन जै रामजी की विनय वावू, यार आज यह गुलाव का फूल भी क्या चमक उठा है रोज़ तो तुम एक नन्ही-सी कली लगाते थे यार, आज यह फूल···

सुरेन्द्र तुम समझे नही विपिन, कली तो इन्होंने परसो लगायी थी, फूल तो आज हो गयी वेचारी! क्यो विनय वावू ठीक है न ··

विनय : तो यह वात है, आज तो वडी मूड में हो यार, कहो तो क्या-क्या तीर मारे ?

पन : [गला बैठा कर धीमे स्वर में] तीर क्या मारता, वड़े वावू की गोल टोपी है न उसी पर निशान लगाया था, वीच ही मे तुम आ धमके।

न्द्र ज़रा-सी देर हो गयी दोस्त, नही तो तुम्हारी हीरोइन भी यहाँ आयी थी।

विनय तुम्हारा मतलव मिस शकुन ·?

वड़े वावू . मिस्टर विनयकुमार वी० ए०, एल-एल० वी०, ज़रा इधर आइए तो!

विनय — क्या बात है बडे बाबू, आप तो इतने आदर से बुला रहे हैं कि डर लग रहा है।

बडे बाबू — बात यह है मिस्टर विनयकुमार, कि मै जरा पुराना आदमी हूँ, मुझे तुम्हारी नये किस्म की नोटिङ्-ड्राफ्टिङ् पसन्द नही आती, भला बताइए बिना अलकाब आदाब के भी कही पत्र लिखा जाता है? अरे साहबजादे, यह सब आप अपने ऑफिसर को भेज रहे हैं न? फिर यह क्या मजाक है? लिखना चाहिए—सर विथ ड्यू रिस्पेक्ट आई बेग लीव टू सब्मिट दि फालोविङ् मेरा मतलब श्रीमान्, सेवा मे विनम्र निवेदन है कि •

विनय — लेकिन इस की कोई जरूरत नही मालूम पडती, बात सीधी क्यो न कही जाये?

बडे बाबू — सो तो ठीक है, लेकिन सीधी बात कहने के लिए नौकरी नही की जाती। क्लर्की करने के साथ सीधी बात कहना मजाक बन जाता है, और क्लर्क जिन्दगी में सिर्फ अपने साथ मजाक करता है यह तुम्हारा नाटक नही है विनयकुमार!

विनय — यह तो मै भी जानता हूँ कि यह नाटक नही है, लेकिन मुझे जिन्दगी-भर क्लर्क बन के नही रहना है बडे बाबू, मैं बी० ए० एल-एल० बी० हूँ, मेरे लिए बहुत से रास्ते है, इस क्लर्की में क्या धरा है, मै ने तो महज वक्त काटने के लिए नौकरी की है

बडे बाबू — यही मिस्टर विनयकुमार बी० ए० एल-एल० बी यही! हर नौजवान अपनी क्लर्की की जिन्दगी इसी उम्मीद से शुरू करता है, मै भी जब इस दफ्तर में आया था तो यही एक सपना लेकर, नायब तहसीलदारी का इम्तहान दिया था। सोचा था जब तक नतीजा नही निकलता इसी दफ्तर में रहूँगा, लेकिन हर इरादे के बावजूद यही रहना पडा। नायब

तहसीलदार से लेकर डिप्टी कलेक्टरी तक का सपना टूट गया और आज महज़ बडे बाबू के नाम से जाना जाता हूँ ।

विनय — मैं तो इस में आप की ही कमज़ोरी मानता हूँ, यदि आप चाहते तो इस दफ्तर से निकल सकते थे ।

बडे बाबू — यदि आप चाहते ? क्या मजाक करते हैं आप जनाब ? जैसे मैं चाहता ही नही था, यह दुनिया बडी अजीब है विनयबाबू, यहाँ बस वही नही हो पाता जिसे हम चाहते हैं और फिर हम बाबुओ की ज़िन्दगी में साहब की सलामी हजार नियामत बन जाती है · खैर, आप यह फाइल्स ले जाइए। फिर से ड्राफ्टिड् कर के दीजिए। और हाँ यह अलकाब-ओ-आदाब दुरुस्त रखिएगा, याद रखिए क्लर्क हमेशा लिखा हुआ डायॅलाग बोलता है, उस के पास अपनी भाषा नही होती, समझे !

[जाने की ध्वनि, विपिन और सुरेन्द्र की व्यग्य-भरी हँसी]

समवेत स्वर — हि···हि ··हि···

विपिन — सुन लिया ? बडे बाबू को भी यार मैं मानता हूँ, कम्बख्त पुराने ज़माने का मैट्रिक पास है लेकिन अँगरेजी वह लिखता है कि बस···देखा न, मिस्टर विनयकुमार बी० ए० एल-एल० बी० की अँगरेजी को भी धता बता दिया !

न्द्र — अमाँ, दो दिन में यह जो दिमाग आसमान पर है न ज़मीन पर उतरता नज़र आयेगा, अभी तो दो-चार रद्दे बाकी हैं, ज़रा पड जाने दो फिर देखना ··

लेकिन यार, जानते हो, मिस शकुन जो साहब के साथ आती है, अरे वही यार जो अकसर मोटर ड्राइव करते हुए यहाँ के लच के टाइम पर आती है ··

सुरेन्द्र — · हाँ · हाँ जानता तो हूँ, लेकिन क्यो, क्या बात है ?

विपिन : यार, लगता है इस विनय ने उस पर भी कुछ जादू-सा

कर दिया है, अब तो वह रोज लच के टाइम पर आती है लेकिन उसे किसी की चिन्ता नही रहती, वह सीधे विनय के कमरे में जाती है, दोनो उठ कर बाहर जाते हैं···जाने क्या-क्या बातें होती है ?

सुरेन्द्र : अमां, होगा यार हमें इस दुनिया के पचरे से क्या काम ? यहां पर लि-देके एक बीवी है सो तो छुट्टी ही नही मिलती कि उस की देख-भाल करूं, फिर यह बिजनेस कौन करे···हां एक बात तो बताओ, इस विनय की तो शादी हो गयी है न ?

विपिन : अच्छा जी, तो जैसे मै ही इस का पडोसी हूँ !

सुरेन्द्र . नही यार, बात यह है कि ये दोनो खूब लडते हैं, बात-बात पर दोनो मे कुछ-न-कुछ हो ही जाती है।

विपिन . हां तुम औरतो को क्या समझते हो, यह सब जानती हैं।

सुरेन्द्र हश श ··श ··चुप-चुप वह देखो···साहब की मोटर आ धमकी।

[मोटर के आने की आवाज, हार्न···बाहर से आती हुई ध्वनियाँ]

फिलिप कम ऑन डियर, ओह ! छोडो भी उसे, तुम ज़रा देर बैठो, मै लच में तुम्हें छोड आऊँगा।

शकुन · थैंक यू, मुझे अभी तक सुरजीत के यहां जाना है, [मोटर स्टार्ट करते हुए] टा टा

फ़िलिप : ऑल राइट···[आवेश में] चपरासी ··चपरासी···

चपरासी जो हुजूर !

फ़िलिप · फाइल्स ले चलो, इडियट····खडा-खडा क्या देखता है ?

चपरासी : कुछ नही, कुछ तो नहीं हुजूर ···।

[जूते की ध्वनि से प्रवेश समवेत]

फिलिप	बडे बाबू बडे बाबू । चपरासी चपरासी । [घण्टियाँ भी लगातार बजाता है]
चपरासी	जी हुजूर ।
फिलिप	बडे बाबू को भेजो ।
बडे बाबू	मै तो खुद ही हाजिर हो रहा था हुजूर, आप नाहक परेशान हो रहें है ।
फिलिप	होने की बात ही नही है, सारा काम एरियर मे पडा है और देखिए अगर आप से काम नही हो सकता तो छुट्टी ले लीजिए मेडिकल लीव आप को ड्यू है न, फौरन लीजिए नहीं तो क्या फायदा साल आध-साल आप को नौकरी करनी है, कही इस बीच मुझ से कुछ लिग-लिखा गया तो दाग लग जायेगा ।
बडे बाबू	जी, जैसी आप की मरजी ।
फिलिप	और हाँ, बडे बाबू बडे बाबू अरे क्या आप को सुनाई नही पडता ?
बडे बाबू	सुन रहा हूँ हुजूर ।
फ़िलिप	क्या सुन रहे हैं आप ? दफ्तर मे घुसते ही चिल्लाना पडता है, विनय को भेजिए तो ज़रा और हाजिरी का रजिस्टर भी यह दफ्तर है कि तमाशा सारे के सारे लोग देर से आते है ? हाँ, उस नये क्लर्क का क्या हुआ ?
बडे बाबू	जी हो क्या सकता है, उस की बीबी बहुत सख्त बीमार है, अस्पताल मे पडी हुई है, दरख़ास्त आयी है ।
फिलिप	हम क्या कर सकते हैं ? टेम्परेरी आदमी, छुट्टी है ही नही, उसे नोटिस भेज दीजिए । समझ में नही आता लोग बीवियो के पीछे इस क़दर परेशान क्यो रहते है ?
बडे बाबू	क्या करें हुजूर, हम क्लर्कों की जिन्दगी मे मदद देने वाली तो

महज़ बीवी है, उस की परेशानी झेलनी ही पड़ती है हुज़ूर !

फिलिप — हूँऽ तो झेलिए खुशी से झेलिए कौन रोकता है। आप लोगों को तो इसी में मज़ा आता है, अपने घाव खोल-खोल कर दिखाने की आदत-सी पड़ी रहती है आप लोगों की। जाइए एक हफ्ते में एरियर समाप्त होना चाहिए। समझे ?

[फोन की घण्टी बजती है ।]

फिलिप — हलो, कौन ? शकुन ! हल्लो डियर तुम उस की चिन्ता छोड़ो, हाँ हाँ अच्छा, अभी तो भूमिका ही बँधी है ˙ सब ठीक हो जायगा [हँसता है] ह ह ह बात यह है शकुन, कि यह जो क्लर्कवर्ग है न, इस से प्रार्थना करने से काम नहीं चलता खैर, [विस्मय से] अच्छा, चलो यह भी ठीक ही हुआ लंच के बाद विनय को ठीक है ˙ [फोन काटकर] चपरासी चपरासी घण्टी बजाता है]

चपरासी — हाज़िर हुआ हुज़ूर !

फिलिप — विनय बाबू को बुलाओ ।

विनय — मैं खुद ही हाज़िर हूँ साहब !

फिलिप — बात यह थी मि० विनय, कि ˙कि तुम्हें एक काम करना है यानी तुम्हें चपरासी ˙तुम यहाँ क्या कर रहे हो ˙ जाओ बाहर बैठो सिर पर सवार रहते हैं बेहूदे ˙˙ ˙ [थोड़ा रुक कर] हाँ तो मि० विनय, तुम्हें नाटक में हीरो का पार्ट मिला है न ?

विनय — जी, वह तो मिला ही है ˙˙

फिलिप — मेरा खयाल है कि नाटक के बाहर तुम्हें हीरो नहीं बनना चाहिए रिहर्सल के बाद तुम्हें अपना पार्ट भुला देना चाहिए, समझे !

विनय : जी, मैं समझ नही पाया आप का मतलब ?

फ़िलिप : समझ नही पाये…खैर, अभी समझ में आ जाता है, नोट्स लीजिए …लिखिए—डियर मैडम, हमें खेद है कि आप को मेरे कार्यालय के सदस्य मि० विनय-द्वारा अपमानित होना पडा, यह एक बहुत बडा जुर्म है, मैं इस की जांच कर रहा हूँ। उचित कारखाई के बाद आप को सूचित किया जायेगा, धन्यवाद। आप का पता लिखिए कुमारी शकुन पॉल, १२ साउथ हॉल …इलाहाबाद।

विनय लेकिन, साहब, यह गलती है।

फिलिप मैं गलत-सही कुछ नही जानता, पूरे आफिस मे तुम्ही एक ऐसे हो जिस के खिलाफ शकुन की शिकायत है, मैं पूछता हूँ क्या यह बात सही है कि शकुन ने वर्थडे पर तुम्हें महात्मा बुद्ध की मूर्ति दी थी ?

विनय जी हाँ …!

फ़िलिप : यह भी क्या सही नही है कि मिस शकुन से यह नाजायज तोहफा ले कर तुम ने क्लब के निमन्त्रण छपवाने के कागज मिल से बिना पैसा दिये भेजवाया था ?

: यह झूठ है, बिलकुल गलत है …!

: खैर यह तो मौका लगने पर पता चलेगा, तुम बहुत ही ज्यादा डिसकर्टियस हो।

: मैं नही जानता कर्टियस होने का मतलब आप क्या समझते है पर …

: सब समझ में आ जायेगा, जाइए और हाँ यह बात मिस शकुन को न मालूम हो, समझे।

[फोन की घण्टी बजती है]

फिलिप । हल्लो…ओह तो तुम हो ! क्या ? तुम आ रही हो ? कोई बात नही, कार अपने ही इस्तेमाल मे रखो, मैं रिक्शे से आ जाऊँगा । चपरासी " रिक्शा बुलाओ, मुझे अभी जाना है ।

[मिल का सायरन बजता है लंच का अवकाश]

विपिन देख लिया बड़े बाबू आप ने ?

सुरेन्द्र अरे देखना क्या है जी, यह सब ताम-झाम मैं ने बहुत देखे हैं, लेकिन बड़े बाबू, हमारी यह निश्चित राय है कि अगर फिलिप साहब का यह व्यवहार है तो हम लोगो से कोई भी टिकिट नही खरीदेगा, यह क्या मज़ाक है ?

बड़े बाबू फिर वही ना-तजुरबेकारी की बात करते हो ! हटाओ, दो-दो रुपये की बात है, दे डालो ' नही तो ··

विनय नही तो फिज़ूल की लड़ाई होगी, यही न ? मैं लड़ाई से नहीं डरता ।

बड़े बाबू फिर वही ना तजुरबेकारी की बात करते हो, तुम जानते नही विनय, वह जो शकुन है न, उस ने जा कर साहब से शिकायत की है और देख लिया साहब का रुख ··

विनय सब देखा हुआ है, लेकिन साहब को इस नाटक से क्या ? यह दफ्तर है यहाँ यह बेजा ज़ोर दबाव

बड़े बाबू : यह सब चलता है मेरे दोस्त, मैं ने तीस साल की नौकरी में घास नही छीली है, ये साहब लोग अपने मन का काम करते हैं, इन की हाँ में हाँ नही मिलाओगे तो यह बिना एरियर का एरियर निकालेंगे, बीबी का गुस्सा तुम पर उतारेंगे, मोटर की खराबी से फाइलें गोड़ेंगे····प्रेमिका से अपमानित होने के बाद तुम्हें अपमानित करेंगे ··

विनय : लेकिन हम इन का अपमान बरदाश्त क्यो करें ?

बड़े बाबू · क्यों करें, तुम अभी बिलकुल ना-तजुरबेकार हो, देखो साहब,

जोर-जिन्दगी मे कुछ कडवी घूँटें भी पीना सीखो, मिट्टी के शेर बनो ' अगर असलियत मे शेर बन गये तो गोली के निशाना बन जाओगे '

विनय — शेर शेर ही होता है बडे बाबू, मिट्टी मिट्टी ही होती है ! आप क्या जानें, मिट्टी का शेर भी कभी-कभी दहाड सकता है, वह भी गरज सकता है, वह भी मौत के मुँह मे जा सकता है '

सुरेन्द्र — शाबाश मेरे मिट्टी के शेर शाबाश ! गरजते जाओ, लेकिन देखना कही टूटना नही मेरे दोस्त, क्या तैश है 'मजाल है कि शिकारी जाल बिछा सके। मिट्टी का ही हुआ तो क्या हुआ, है तो जानदार !

विपिन — और क्या समझ रखा है मेरे रबर के बबुए या तो गरजेगा नही और अगर गरजेगा तो फिर बस इसी तरह

[फोन की घण्टी]

बडे बाबू — हलो'''पेपर मिल स्पीकिंग् ''यस 'कौन ? मि० विनयकुमार ? होल्ड आन , लो विनय, तुम्हारा फोन है

विनय — हल्लो कौन ? शकुनजी, हूँ हूँ लेकिन सुनिए यह क्या मजाक है, मैं इसे पसन्द नही करता, आखिर आप हम लोगो को क्या समझती हैं, कोई बेजान पुतले है जो आप ने जैसा चाहा वैसे ही उठाना शुरू कर दिया क्या कहा जी हाँ, नाटक क्लब का मेम्बर मैं हूँ मिस्टर फिलिप्स हैं न कि मिस्टर फिलिप्स का सारा दफ्तर मैं कुछ नही जानता इस बारे मे मै कोई बात नही कर सकता ! [फोन रखने की ध्वनि]

वडे बाबू — अरे अरे, यह क्या गजब कर दिया तुम ने विनय, शायद तुम जानते नही इस का नतीजा बहुत बुरा होगा ! तुम

तो अभी टेम्परेरी हो, तुम्हारे सिर तो यह बीत जायेगी....

विनय	क्या वडे वावू ' आप भी मुझे ऐसा डराते हैं कि जैसे मुझे निगल जायेंगे साहबजादे, दुनिया में हर चीज सस्ती हो सकती है लेकिन आदमी की जिन्दगी से सस्ती कोई चीज नही है ।
	[फोन की घण्टी]
विनय	हल्लो विनय स्पीकिङ्, जी , आप को मेरे पास फोन करने की क्या जरुरत है, आप मिस्टर फिलिप से कहें, सारा काम ठीक हो जायेगा । ' जी ' जी हाँ हाँ अरे हटाइए भी शकुनजी, आप के वेवी-शो मे तो वेचारे पापा लोगो की मौत हो जायेगी और सुनिए मैं न तो अब ड्रामे में दिलचस्पी ले सकता हूँ और न कर सकता हूँ, पता नही कब आप का अपमान हो जाये मैं ज्यादा वात नही चाहता ..। [फोन रखने की ध्वनि]
वडे वावू	मिस्टर विनय ।
विनय	जी वडे वावू ।
वडे वावू	देखिए साहव, आप के जो जी में आये कीजिए...अब तीस साल इस नौकरी मे खटने के वाद मेरे अन्दर यह वूता नही है कि मैं आप का साथ दूँ, समझे । दो रुपये की बात है, फिलिप साहव की मरज़ी मैं तो दे दूँगा ।
विनय	जी आप जो चाहे करें •लेकिन मैं इस के लिए शकुन को क्षमा नही कर सकता
वडे वावू	यह आप की वात है, आप जानें, मुझे जो कहना था, वह मैं ने कह दिया ।
विनय	ठीक है साहव ।
	[फोन की घण्टी]
विनय	हल्लो मैं ने कह दिया न शकुन, कि मैं इस के वारे में कोई

बात नही करना चाहता···क्या ? एक बार तुम से घर पर मिल लूं ? खैर मेरा इन्तजार करना, आऊँगा ·मैं आज ही आऊँगा · हाँ हाँ, मैं जानता हूं ······।

[शकुनका घर]

शकुन — हल्लो डियर, आज तुम उदास क्यो हो ?

विनय — · बात यह है कि ··यह तुम्हारा घर है, तुम्हें सब कुछ कहने का अधिकार है, चाहो तो मुझे उदास साबित करो या बेहद खुश क्योकि ··

शकुन — कि आज फिलिप साहब तुम लोगो पर बहुत नाराज़ हो गये है···बात दरअसल यह थी विनय, कि वह जो तुम्हारा बड़ा बाबू है न···उस ने मेरी इन्सल्ट कर दी थी· ·

विनय — और आप की इन्सल्ट इतनी बडी चीज़ है कि आप उस के लिए एक आदमी की रोज़ी ले सकती हैं, क्यो यही न ?

शकुन — रोज़ी लेने के लिए तो मैं ने फिलिप से नही कहा था, यो ही बात-बात में मैं ने यह बता दिया था कि तुम्हारे ऑफिस मे कुछ लोग ऐसे है जो मामूली कर्टसी भी नही जानते ·

विनय — देखो शकुन, तुम्हे ले कर अजीब-अजीब तरह की बातें होती हैं, तुम मुझ से रोज़ मिलती हो न, यहाँ · उस दफ्तर मे फिलिप साहब को शायद यह नागवार गुजरता है ··

— ऊँह · छोडो भी इन बातो को, तुम अपने दफ्तर के बारे में इतना ज्यादा क्यों सोचते हो ?

— इस लिए कि मुझे वहाँ नौकरी करनी है, तुम्हारा प्यार तो मेरा पेट नही भर देगा और ·

शकुन — हूं ऽ ·तो यह बात है, कहाँ गयी तुम्हारे जीवन की यह साधना और तपस्या ? तुम तो कहते थे न कि नाटक के विकास के लिए, कला के लिए तुम अपनी जिन्दगी दे दोगे ··।

विनय हूँ ऽ···अब भी कहता हूँ, लेकिन अन्तर महज़ इतना है कि तब मैं जो कुछ भी कहता था उस का मतलब नही समझता था और आज उस का मतलब समझता हूँ···

[मोटर की आवाज, फिलिप शराब के नशे में चूर जीने पर चढता आता है ।]

शकुन फिलिप साहब आ गये, देखो विनय, यह सारी बातें जो हमारे बीच हुई हैं उन्हें फिलिप से मत कहना, समझे !

विनय हर असलियत ज़रूरत से ज्यादा तीखी लगती है, लेकिन असलियत को जानना ही बेहतर होता है।

शकुन यह तुम कह सकते हो विनय, वैसे बात यह है कि तुम ने मुझे समझने की कभी कोशिश ही नही कि·· मेरे बावजूद भी तुम ने सुधा से शादी · सुधा ' जो भद्दी कुरूप हूँ। दिस इज़ योर च्वायस ' खैर

विनय लेकिन तुम्हें उस भद्देपन से क्या मतलब है ? तुम अपना काम करो। अपनी ज़िन्दगी सँभालो जो जोड-जोड से बिखरी जा रही है, जिस के हर बिखराव में एक भयंकर घुटन है एक ऐसी निराशा है जिसे तुम कभी भी अपने से दूर नही कर सकती ·

शकुन और जैसे तुम ने यह घुटन दूर कर ली है, अगर तुम्हारे अन्दर घुटन नही है तो फिर आज इस समय तुम यहाँ क्यो आये हो ?

फिलिप · घुटन कैसी घुटन ! [हिचकियों के साथ] सब्ब बेकार है····नशे में सब लोग जाने क्या-क्या बकते हैं····विनय ·· हूँ ऽऽ··· क्लर्क है मेरे दफ्तर में ' शकुन''' जाने क्या है··· आग है चिनगारी है चिनगारी ··

शकुन मि० फिलिप, यह मेरा घर है

फिलिप — ऐं " यह तुम्हारा घर है •मैं कब कहता हूँ यह मेरा घर है ओ' "तुम्हारा ही घर तो है यह इसी लिए तो मैं यहाँ आया हूँ यह कौन है ऊँ कौन है यह ? विनय !

शकुन — ये मिस्टर विनय हैं।

फिलिप — मिस्टर विनय हूँऽ विनय मिस्टर विनय जिसे मैं अपने कमरे में रोज़ बीसियों बार बुलाता हूँ और फिर कमरे से निकाल देता हूँ

शकुन — यह क्या हो रहा है मिस्टर फिलिप •आखिर

फिलिप — क्या आखिर-आखिर लगा रखा है ? मैं आ गया हूँ विनय यू गेट आउट !

शकुन — तुम खुद क्यों नहीं चले जाते ? क्यों नहीं वापस जाते ?

फिलिप — मैं ? हूँऽ अच्छा-अच्छा मैं ही चला जाता हूँ जाता हूँ [जाते समय गिर पड़ता है, फर्श पर बेहोश हो जाता है]

विनय — मिस्टर फिलिप लगता है बेहोश हो गया है !

शकुन — हो जाने दो, नशे में डूबे हुए आदमी की यही हालत होती है, यह बेहोशी कुछ क्षणों के लिए आदमी से उस की ज़िन्दगी छीन कर बिलकुल निश्चिन्त बना देती है।

न — ऐसी निश्चिन्तता जो मौत से भी भयानक होती है गैर, जाने दो यह बातें, यह बताओ मुझे क्या करना है, मैं अब तुम्हारे इस नाटक में काम नहीं कर सकता !

कुन — इस नाटक में ? फिर किस नाटक में काम करोगे ?

विनय — मैं किसी नाटक में काम नहीं करूँगा, समझी ? तुम तो फिलिप साहब तो बहुत मानते हैं न, तुम उन से मेरी शिकायत भी तो कर सकती हो !

शकुन — शिकायत और मैं, और तुम्हारी शिकायत। क्या बात करते हो विनय? मैं ने ज़िन्दगी को न जाने कितनी शिकायतें पी डाली हैं विनय, इस छोटी-सी बात के लिए मैं तुम से शिकायत न कर के फिलिप से शिकायत करूंगी।

विनय — हूंऽ तुम तो ऐसा बन रही हो शकुन, जैसे मैं झूठ कह रहा हूं। तुम खुद पूछ लेना मिस्टर फिलिप से, वही तुम्हे बता देंगे।

शकुन — [रोकर] तुम मेरी बात क्यो नही मानते विनय, मेरी ज़िन्दगी अधूरी है, मेरे सपने टूट चुके है, शायद ज़रूरत से ज्यादा निर्भीक होने के नाते, वही मुझ में कुछ ऐसा आ गया है जो बडा कटु है, जिसे देख कर लोग मुझे घृणा करने लगते है, लेकिन लेकिन इस शराबी फिलिप और इस शरीफ विनय के बीच ही कही मेरी ज़िन्दगी भी टूट गयी है। बोलो क्या वह मुझे वापस मिल सकती है।

विनय — वापस दुनिया में कोई चीज़ नही होती शकुन। ज़िन्दगी भी दुनिया की ही चीज़ है

शकुन — [रोकर] तो फिर, यह टूटे खिलौने-जैसी ज़िन्दगी, मैं कैसे निदाहूं, लगता है खिलौने के पेच में मोरचा लगता जा रहा इतना गहरा ज़ग इतनी गहरी

विनय — ज़ग भी बाहर से नही आता शकुन, जब अपना लोहा दागी होता है तो उस में ज़ग भी लगता है। लेकिन तुम्हें और हमे यह समझना है कि मैं एक पेपर मिल का क्लर्क हूं, तुम इस नगरी की एक सम्भ्रान्त महिला मैं एक भद्दी कुरूप स्त्री का पति हूं और तुम मिस्टर फिलिप की होने वाली पत्नी मैं एक

शकुन — और भी कुछ? क्या इतना काफी नही है? क्या तुम इस से भी ज्यादा बात कहने की ज़रूरत समझते हो? ज़िन्दगी के

बोझ से दूभर हुआ व्यंग्य कितना कटु होता है…[बहुत धीमे से] मैं ने तुम से अपनी ज़िन्दगी वापस माँगी थी लेकिन तुम ने उस के बदले में मुझे आग देने की कोशिश की है विनय…

विनय : आग ! तो क्या हुआ ? तुम्हारे लिए तो आग की कोई कीमत ही नहीं है, तुम तो स्वतन्त्र हो कर रहना चाहती हो ! ऐसी आज़ादी को आग क्या नुकसान पहुँचायेगी….

शकुन : आग नुकसान नहीं पहुँचाती विनय ? आदमी झुलस कर रह जाता है लेकिन, कह नहीं पाता ! तुम नहीं समझोगे, तुम हरगिज़ नहीं समझ सकते….

[फिलिप को कुछ होश आता है]

फिलिप : [लड़खड़ाती हुई ज़बान से] कौन आग दे रहा है ' हर छलकता हुआ जाम….आग का छलकता हुआ प्याला ही होता है…लेकिन ' लेकिन यहाँ क्या है' ' शकुन के घर में आग दी नहीं जाती….आग लगायी जाती है….आग है आग, पानी नहीं है…

शकुन : और विनय, इतने बड़े व्यंग्य के साथ समझौता मैं कर रही हूँ…इस लिए कि जिसे समाज आदर्श कहता है, जिसे दुनिया आदर्श कहती है, उस का माप अलग होता है ' इसे समझने के लिए, इन्हीं व्यंग्यों के बीच जीना पड़ता है !

५ : लेकिन लेकिन यह भटकाव क्यों ? शकुन ' शकुन ' ! इस उठते हुए तूफान के सामने जाने क्यों मेरे कदम डगमगा रहे हैं ! लगता है, साबित कुछ नहीं बचेगा बचा हुआ भी टूट जायेगा' 'इसे टूटना ही है '

फिलिप : [लड़खड़ाती हुई ज़बान से] कौन टूट रहा उठो 'टूटना ही खुमार है ' नशे का असली मज़ा टूटने में है…ऊँह….टूटने

से डरने से डरने वाले क्या करेंगे, साबित जिन्दगी में क्या है ? खुमार की बदमस्ती ···उस से डरने से फायदा····टूटना भी काम की चीज़ है मेरे दोस्त !

शकुन हूँऽ··वह दिन भी याद आता है विनय, जब मैं ने तुम्हें पहली वार रसजीत के यहाँ देखा था, तुम सोच नही सकते होगे कि मेरी ज़िन्दगी, महज़ एक पहेली बन कर रह जायेगी·· लेकिन आज, वह महज़ एक खोखली पहेली ही रह गयी है ! पता नही, ज़िन्दगी के इन खाली खानो का कोई अर्थ भी होगा···

विनय शकुन····शकुन ! आज से मैं कुछ नही कहूँगा शकुन, मैं नही जानता था····कही तुम्हारे अन्दर इतना गहरा दर्द भी होगा····

शकुन हूँऽ यही तो बात है विनय, तुम नही, सारा ज़माना मुझे यही समझता है। स्त्रियों के लिए और रास्ता ही क्या है, अगर वह आज़ाद बनने की चेष्टा करें तो उन्हें घृणा मिलेगी और अगर वह दबी-बुझी-सी रहें, तो उन्हें प्रतारणाएँ मिलेंगी · ! कितना बडा व्यग्य है यह सब का सब· ·

विनय : होगा, लेकिन मैं इसे नही मानता। मेरे लिए यह सत्य नही है, सच मानो शकुन, मुझे तुम से कोई शिकायत नही है !

शकुन शिकायत का सवाल ही कहाँ उठता है·· 'मैं कहती हूँ जाओ चले जाओ यहाँ से विनय · मेरे लिए केवल यही सच है, यही ज़िन्दगी शराब की गन्ध में शराबोर फिलिप और उस का व्यग्य·

[दूर से आवाज आ रही है]

बिका आदमी चार आना,
हर माल मिलेगा चार आना।

विनय : हूँऽ जाने क्या हुआ है सुधा को ! पचास बार कहा कि यहाँ

इस घडी के ऊपर यह रवर का बबुआ मत रखो लेकिन मानती ही नहीं। सुधा ' सुधा ।

सुधा — क्या है ? हर मिनिट पर सुधा-सुधा की रट लगाने की आदत कहाँ से सीख ली है ? मै कहती हूँ कोई और काम नही रह गया है क्या ?

विनय — काम क्या करूँ ? दिमाग तो एक मिनिट भी शान्त रहने वाला नही। मैं ने पचास बार कहा कि इस घडी के ऊपर रबर का बबुआ मत रखा करो, यह जगह महात्मा बुद्ध की मूर्ति की है, वही शोभा देती है लेकिन तुम को जाने क्या सूझी है। बुद्ध की मूर्ति हटा कर के तुम्हे यह भद्दा कुरूप टूटा हुआ बबुआ यहाँ रखने में जाने क्या मजा मिलता है ?

सुधा — ओह ? यह बात है। लेकिन महात्मा बुद्ध की मूर्ति यहा नही रखी जायेगी, समझे ?

विनय — लेकिन आखिर क्यो, क्या इस लिए कि वह मुझे पसन्द है ?

सुधा — हाँ हाँ, इसीलिए कि वह तुम्हे पसन्द है उस शकुन को इस घर में नही चलने पायेगी समझे। उस को दी हुई बुद्ध की मूर्ति आँख के सामने से हटी नही कि बस तुम्हारा दिमाग खराब हो गया। आज मे वह बुद्ध की मूर्ति इस कमरे मे नही आयेगी ' नही आयेगी '!

विनय — तो ठीक है, मै भी इस कमरे मे नही रहूँगा, समझी ! तुम समझती हो तुम्हारा मजाक बडे काम का है और मै कुछ नही हूँ ?

सुधा — आप कुछ क्यो नही है ! आप खुद जो रबर के बबुए है इसीलिए तो आप को यह बबुआ पसन्द नही आता इसे देख कर आप को खुद अपनी याद आने लगती है मैं याद आने लगती हूँ !

— [दूर से आती हुई आवाज]

सुरेन्द्र — क्या बात है विनय भाई, आज सुबह से ही यह चखचख चल रही है ? ओह, भाभीजी आप हैं ! नमस्ते ! नमस्ते जी !

सुधा — [कुछ गुस्से में] नमस्ते ···

सुरेन्द्र — बात दरअसल यह है भाभी, कि हर क्लर्क और खास कर नौजवान क्लर्क अपना भाई-बिरादर देख कर थोड़ा परेशान हो जाता है। विनय भाई जो है न, बस, यह समझो कि यह भी रबर के बबुए के समान हैं, इन का अपना कुछ नही है, सब दूसरो का है, दिमाग़ ' फिलिप '' मेरा मतलब फिलिप सुपरिण्टेण्डेण्ट है न दफ़्तर का 'उस का है, दिल शकुन का है, घर आप का है, क़लम ससुराल की है, मिज़ाज अल्लाह का है इन की बातो से तुम क्यो परेशान हो जाती हो भाभी ?

सुधा — बस बस, रहने दो, तुम लोगों का कुछ पता नही रहता, कब किस समय क्या करोगे इस का कोई ठिकाना नही। तुम सब एक हो जाते हो मौक़ा पड़ने पर। मुझे अभी बाहर जाना है नही तो तुम्हारी भी कलई अभी-अभी खोलती।

सुरेन्द्र — तो यह बात है ! यानी कि आप को मेरे ऊपर भी यकीन नही है, रहा यानी कि मैं भी विनय भाई के समान हूँ ··· यानी कि विनय भाई और मैं दो ही [दूर हटकर] जाओ भी भाभी, तुम किस से कम हो।

[घड़ी ने नौ की घण्टी बजती है। सुरेन्द्र विनय से]

अरे विनय भाई, तुम किस चिन्ता में पड़ गये हो, नौकर-पेशा आदमियों को इतना नही सोचना चाहिए। हमारी तो बड़ी छोटी ज़िंदगी होती है। कमरे सजाने के लिए बस दिवाली में लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति ख़रीद ली, वही काफी है, लेकिन नही, तुम मेरी बात थोड़े ही मानोगे, तुम्हें तो फिलिप साहब

की नक़ल करनी है। अगर उन के यहाँ ईसामसीह की मूर्ति है तो तुम्हारे यहाँ महात्मा बुद्ध की होनी जरूरी है।

विनय : क्या तुम भी छोटी बातें करते हो सुरेन्द्र!

सुरेन्द्र : अच्छा जी, मैं छोटी बातें करता हूँ। विनय भाई, अपनी छोटी बात बड़े काम भी होती है। देखो न वह जो दिवाली के दिन में लक्ष्मी-गणेश खरीदता हूँ न, उस से बड़े-बड़े काम निकलते हैं। लड़के खिलौने के लिए रोने लगे, उन्हें दे दिया। थोड़ी देर तक उन्होंने उस के साथ खेला, जी बहल गया, फिर अपनी जगह पर रख दिया। श्रीमतीजी ने पूजा-पाठ के वास्ते पूजा भी कर ली, और अब यार दोस्त आये तो उन्होंने उसे देख कर यह भी समझ लिया कि मैं शौकीन आदमी हूँ, मैं भी अपने कमरे में मूर्तियाँ रखता हूँ।

विनय : अच्छा, तुम्हारा नुस्खा तो बड़ा सस्ता है, एक मूर्ति और छूमन्तर दवा की तरह काम करती है, सिर दर्द, जुकाम, बुखार से लेकर साँप बिच्छू काटने तक में काम ही देता है। क्या कमाल किया है तुम ने!

सुरेन्द्र : एक क्लर्क, विनय भाई, हमेशा कमाल करता है। साठ रुपये में नौकरी शुरू कर के एक सौ बीस तक में तमाम जिन्दगी बिता देना क्या यह कम कमाल का काम है। अगर यह छूमन्तर वाली दवाइयाँ न हों तो हम तो दो ही दिन में घुट-घुट कर मर जायें।

[illegible] लेकिन हार मानने की क्या जरूरत है। क्या साठ रुपया पा कर भी हम विचारों में ऊँचे नहीं हो सकते।

सुरेन्द्र विचार, और हम क्लर्कों के लिए! टी० बी० हो जायेगी, टी० बी०! विनय भाई, हर साठ रुपये वाला हमारे यहाँ उस का शिकार होता है। विचार किया नहीं कि मरे। अभी तुम नये-नये आये हो न, इस लिए तुम्हें पता नहीं है। [illegible]

से मैं यह क्लर्की कर रहा हूँ भाई जान, यहाँ तो बस एक ही गुर है—जो साहब कहे बस हाँ, विचार किया कि मारे गये।

विनय — मैं नही मानता, मै तो जिस दिन सोचना छोड दूँगा, बस मर जाऊँगा।

सुरेन्द्र — सोचने का भी वक्त आता है विनय भाई, लेकिन वह सोचना दूसरे किस्म का होता है। यानी यह कि कौन-सी तरकीब करें कि बनिये का कर्ज चुकता हो जाये, कौन-सी तिकडम करें कि बीवी-बच्चो के पास जाडे के कपडे हो जायें, कौन-सी तरकीब करें कि साठ रुपये का रबर—मेरा मतलब तनख्वाह बढ कर पैंसठ हो जाये।

[दरवाजे पर थपकियाँ]

सुरेन्द्र — कौन, कौन है ?

शकुन — मैं हूँ, शकुन।

सुरेन्द्र — ओह हो, आप शकुनजी, आ गयी, अभी आप ही का जिक्र हो रहा था। आओ-आओ कहो तुम्हारा नाटक कब हो रहा है ?

शकुन — हो ही जायेगा सुरेन्द्र बाबू, अभी तो रिहर्सल्स हो रहे हैं रिहर्सल्स। अरे हाँ भाभीजी कहाँ गयी ? हल्लो सुधा, नमस्कार।

सुधा — [गुस्से में] नमस्कार, कहिए आज भी कही जाना है ?

शकुन — जायेंगे कहाँ, देखिए अभी नाटक का रिहर्सल है न, मैं जरा देर के लिए विनय को लेने आयी हूँ।

सुधा — लिवा न जाइए। सुधा को क्या पडी है कि वह आप के और इन के बीच आये। खूब नाटक होने दीजिए। सारी जिन्दगी ही नाटक है।

शकुन — अरे सच भाभीजी, आप तो बुरा मान गयी। देखिए, अगर आप इन्हे खुशी से मेरे साथ न जाने देंगी तो मैं इन्हें साथ न ले जाऊँगी।

सुधा — मैं कहती हूँ, आप को सिवा नाटक के और कोई काम नही है ?

शकुन — देखिए भाभीजी, आप पिछले तीन दिनो से इन्हें जाने दे रही हैं, और

विनय — देखो शकुन, मैं अब नाटक में पार्ट नही कर सकता।

शकुन — लेकिन क्यों ?

विनय — इस लिए कि मैं अब यह महसूस करने लगा हूँ कि एक क्लर्क की जिन्दगी में रुपया ही सब से बडा धन्धा है। यह कला, यह साहित्य, यह सब का सब बडे लोगो की चीज है। रोज ऑफिस में चख-चख मची रहती है। बडा बाबू ऐरियर के नाम पर रोज दो बातें सुनाता है। फिलिप साहब अपना अलग रोब जमाते रहते हैं। घर पर सुधा को भी बुरा ही लगता है। मुझे लगता है यह सब साधारण जीवन के साथ नही चल सकेगा

शकुन — तुम भी तो विनय रबर के बबुए की तरह हमेशा दूसरो के दबाने पर आवाज निकालते हो। मै कहती हूँ, तुम खुद अपनी आवाज क्यो नही पैदा करते ?

व। — मेरी आवाज तो उसी दिन खत्म हो गयी शकुन, जिस दिन मैं ने पेपर मिल्स में नौकरी की। तुम्हारा नाटक मेरे बस का नही है, मैं नही कर पाऊँगा।

शकुन — सोच लो विनय, बात बहुत आगे बढ चुकी है, आप के पेपर मिल के मालिक सेठ सांवरियादास इस का उद्‌घाटन करेंगे, और इस नाटक में यदि आप ने भाग लिया तो सम्भव है आप को तरक्की मिल जाये ?

विनय — तरक्की। हटाओ इन बातो को शकुन, चलो कही घूम आयें।

सुधा — मैं कहती हूँ, शकुनजी जो कुछ कहती हैं उसे मान क्यो नही लेते ? सेठजी का मन अगर आ जायेगा तो क्या कुछ नही हो सकता ?

विनय — यह तुम कह रही हो सुधा, तुम ! जिसे पिछले तीन साल से सिवा मेरे पढने-लिखने, कला, साहित्य के प्रेम की आलोचना के कुछ और काम नही था। विश्वास नही होता। मेरे कान मुझे धोखा तो नही दे रहे हैं।

शकुन — सो बात नही है विनय बाबू, सुधाजी की बात में बहुत बडी सच्चाई है।

विनय — सच्चाई, सच्चाई मैं जानता हूँ शकुन, अभी तक इन्ही सुधा का यह मत था कि तुम्हारे साथ मुझे नाटक में भाग नही लेना चाहिए। अभी कुछ घण्टो पहले इन्होने मुझे शिक्षा दी थी कि मेरी जिन्दगी की असलियत रुपया है। कला, नाटक, यह सब महज मजाक है। इस में कुछ नही धरा है। सच्ची मेरी नौकरी है और सच्चा है मेरा उन का विवाह। समझी ?

सुधा — हाँ-हाँ, मै अब भी यही कहती हूँ। सच्ची सिर्फ तुम्हारी नौकरी है। नौकरी से बढ कर कोई भी सच्ची चीज नही है। सेठ को प्रसन्न करने की बात है। क्या धरा है इस में—नाटक में अभिनय करने में।

विनय — बस-बस, आगे कुछ मत कहना। मेरे लिए नाटक में अभिनय करना पैसे से सम्बन्धित नही है। मै अपनी जिन्दगी में कही बिना कीमत के भी कोई चीज रख छोडना चाहता हूँ। कही कोई जगह तो ऐसी हो जिसे मैं बिना पैसे के देख सकूँ....

शकुन — खैर, छोडो इस बात को। इस समय तुम बहुत ज्यादा परेशान मालूम पडते हो। ज्यादा सोचना बेकार है। तुम्हारा जो चाहे नाटक में पार्ट करना, जी चाहे मत करना।

विनय — हूँ, तुम भी बुरा मान गयी शकुन, लेकिन देखो न, यह दुनिया भी कितनी अजीब है। हर चीज़ को पैसे की तराज़ू पर तोलती है।

शकुन — पैसा भी एक बहुत बडी सच्चाई है, इसे क्यो भूलते हो विनय, मैं तो पैसे का काफ़ी अहमियत देती हूँ। तुम्हें क्या मालूम मेरी ज़िन्दगी क्या है। पैसो का महत्त्व, मुझ से पूछो। खैर छोडो इन बातो को जी चाहे कल से रिहर्सल में आना, जी चाहे मत आना।

विनय — सब झूठा है—कला, साहित्य, नाटक। ज़िन्दगी की असलियत है यह पचासी रुपये, जो मुझे महीने-भर खटने के बाद मिलते है। कोई तो नही बरदाश्त कर पाता मुझे। दफ्तर मे साथियो का व्यग्य चलता है, क्योकि मैं कीमती कपडे पहन कर उस पचीस रुपये वाली कुरसी पर बैठता हूँ। मि० फिलिप का व्यग्य अलग चलता है, क्योकि मै उन के साथ साथ क्लब का मेम्बर हूँ। बडे बाबू का व्यग्य भी कितना कटु होता है, क्योकि उन्होने अपनी सारी ज़िन्दगी खटाकर जो असलियत पायी है वह है फ़ाइल्स, नोटस्, ड्राफ्ट्स।

[दरवाजे पर दस्तक, फिर आवाज़]

बडे बाबू — अरे मि० विनयकुमार, मि० विनयकुमार !

विनय — कौन है ?

बडे बाबू — अरे भाई मैं हूँ, मुन्शी अम्बिकाप्रसाद। आओ भी नीचे, अमाँ जल्दी करो !

विनय — क्या बात है बडे बाबू, इतनी रात गये आप। और यहाँ ?

बडे बाबू — बात दरअसल यह है विनय बाबू, कि अभी-अभी फिलिप साहब मेरे घर आये थे। मुझे यह दो खत तुम्हारे नाम दे गये हैं। एक में तो यह लिखा है कि कल से आप की ड्यूटी लीव दी

जाती है। जब तक ड्रामा समाप्त न हो जाये तब तक के लिए ऑफिस से छुट्टी है।

विनय — हूँ, तो इस के माने यह हुए कि मैं नाटक करने की नौकरी करूँ। मैं ऐसा नही करूँगा। मै सिर्फ पेपर मिल्स में नौकरी करना चाहता हूँ, मुझ से नाटक और नाटक के रिहर्सल से कोई मतलब नही है।

बडे बाबू — लेकिन यह साहब का हुक्म है, इसे मानना ही पडेगा।

विनय — लेकिन साहब को क्या पडी है, मै जिस काम के लिए नौकर रखा गया हूँ वही करूँगा।

बडे बाबू — सोच-समझ लो। फ़िलिप साहब का गुस्सा बडा तेज़ होता है।

विनय — तो तेज़ी से क्या हुआ। क्या वह मुझे नौकरी से निकाल देंगे ? ऐसी धमकियाँ मैं ने बहुत सुनी है बडे बाबू, मुझे नाटक में पार्ट नही करना है। मुझे सिर्फ पेट के लिए कमाना है। सिर्फ

बडे बाबू — तो फिर सुनिए, अगर आप ड्रामे में पार्ट नही करेंगे तो यह आप का डिसमिसल लेटर है। आप के खिलाफ जुर्म यह लगाया गया है कि आप ड्रामे और साहित्य में दिलचस्पी रखते है इस लिए आप की वजह से ऑफिस के काम में बडी रुकावटें पडती है।

विनय — क्या मज़ाक है बडे बाबू, जिस ड्रामे मे भाग लेने के कारण मुझे नौकरी से अलग किया जा रहा है उसी ड्रामे में भाग लेने के लिए मुझे ड्यूटी लीव भी दी जा रही है। ज़रा आप ही सोचिए बडे बाबू, इस तरह की बात में कोई तथ्य है ?

बडे बाबू — मेरी बात मानिए मिस्टर विनय, आजकल नौकरी बडी मुश्किल मे मिलती है। लगी हुई रोज़ी कोई यूँ ही नही छोड देता। ज़रा-सी बात है, साहब का मन रख लीजिए।

विनय — इस का मतलब साहब का मन मेरे मन मे बडा है ? वह साहब कहलाते हैं इस लिए जो चाहें वह करें, मेरी कोई आवाज़ नही, मेरी कोई हस्ती नही, यह नही हो सकता बडे बाबू, यह नही हो सकता। अपने मन का मालिक मैं हूं, मुझ से यह मत छीनिए।

बड़े बाबू — हर नौकर सब से पहले अपने मन की ही बाजी हारता है। बाबू विनयकुमार बी०ए०एल-एल०बी०, तुम अभी नये हो इस लिए तुम्हें यह खलता है, लेकिन सच मानो हमे यह बिलकुल नही खलता। मेरा मन न तो इन के हुक्मो से बदलता है और न बनता है।

विनय — बदलने और बनने का सवाल अगर इतना सस्ता है तो मेरे पास क्या बचता है! लाइए बडे बाबू, मैं अपना इस्तीफा दे दूं। कही ऐसा न हो कि मैं महज एक जीता-जागता कीडा ही रह जाऊं।

सुरेन्द्र — क्या बात है विनय भाई, इस रात को भी तुम क्या बहस कर रहे हो ? अरे कौन, बडे बाबू! तो क्या साहब ने आप की भी बात नही मानी ?

बाब — हूं, मेरी बात वह क्यो मानेगा। उस का दिमाग तो वह छोकरी भरती रहती है। क्या नाम है उस का

म — शकुन, आप का मतलब मिस शकुन से है ?

बाबू — हां हां मेरा मतलब उसी से है। ऐसी आग लगायी है कि बाप रे बाप, जानते हो सुरेन्द्र, आज फिलिप साहब ने खुल के कह दिया

सुरेन्द्र — क्या कह दिया।

बडे बाबू — यही कि तुम लोगो ने शकुन का इन्सल्ट कर दिया है, और यह इन्सल्ट हमें बिलकुल पसन्द नहीं है।

सुरेन्द्र	तब आप ने क्या कहा ?
बडे बाबू	मैं ने भी कसके कह दिया—देखिए साहब, यह रुपये को ले कर आप को नाराज नही होना चाहिए। आप की खातिर तो हम अपनी जान तक दे सकते हैं लेकिन यह शकुन के लिए
सुरेन्द्र	हम कुछ नही कर सकते। और इतना कह कर आप ने दो रुपये उन की मेज़ पर रख दिये ?
बडे बाबू	क्या करता। भाई, नदी में रह कर मगर से बैर कैसे करता। मैं ने सोचा चलो दो वक्त बच्चे वग़ैर तरकारी के ही रह जायेंगे। अन्नदाता के चरणो पर इतना ही सही।
सुरेन्द्र	इस के माने कल हमें भी दो रुपये देने है ? वाह बडे बाबू, आप से यह नही कहते बना कि साहब, आप को मिस शकुन की बेइज्जती तो बहुत खल गयी लेकिन उस दिन जब हम सब एक साथ सुरेश के लिए चन्दा लेने गये थे तो साहब बगलें झाँकने लगे थे।
बडे बाबू	जाने भी दो, यह बडे लोग है, जो चाहे करें। हाँ एक मुसीबत लगी रह गयी।
सुरेन्द्र	वह क्या ?
बडे बाबू	यही विनय की फज़ीहत। साहब ने कहा देखिए बडे बाबू, मैं कुछ नही जानता, सेठ साहब के इस नाटक में अगर विनय ने अभिनय नही किया तो फिर उन के लिए इस पेपर मिल में जगह भी नही है।
विनय	नौकरी ! जगह ! बडे बाबू, यह सारी की सारी व्यवस्था, यह परम्परा, यह रोग लगता हमें तोड ही डालेगा। लेकिन मैं नही टूटूँगा, मैं हरगिज़ नही टूटूँगा !!
बडे बाबू	लेकिन फिर जिन्दगी कैसे चलेगी फाकाकशी, उपवास, बीमारी, रोग, निराशा और हताश, इन स्थितियो से बचने का कोई

विनय — इस का मतलब साहब का मन मेरे मन से बड़ा है ? वह साहब कहलाते हैं इस लिए जो चाहे वह करें, मेरी कोई आवाज नही, मेरी कोई हस्ती नही, यह नही हो सकता बड़े बाबू, यह नही हो सकता। अपने मन का मालिक मैं हूँ, मुझ से यह मत छीनिए।

बड़े बाबू — हर नौकर सब से पहले अपने मन की ही बाजी हारता है। बाबू विनयकुमार बी०ए०एल-एल०बी०, तुम अभी नये हो इस लिए तुम्हे यह खलता है, लेकिन सच मानो हमे यह बिलकुल नही खलता। मेरा मन न तो इन के हुक्मो से बदलता है और न बनता है।

विनय — बदलने और बनने का सवाल अगर इतना सस्ता है तो मेरे पास क्या बचता है! लाइए बड़े बाबू, मैं अपना इस्तीफा दे दूँ। कही ऐसा न हो कि मैं महज एक जीता-जागता कीड़ा ही रह जाऊँ।

सुरेन्द्र — क्या बात है विनय भाई, इस रात को भी तुम क्या बहस कर रहे हो ? अरे कौन, बड़े बाबू! तो क्या साहब ने आप की भी बात नही मानी ?

हूँ, मेरी बात वह क्यो मानेगा। उस का दिमाग तो वह छोकरी भरती रहती है। क्या नाम है उस का

शकुन, आप का मतलब मिस शकुन से है ?

हाँ हाँ मेरा मतलब उसी से है। ऐसी आग लगायी है कि

बाप रे बाप, जानते हो सुरेन्द्र, आज फिलिप साहब ने पुल के कह दिया

क्या कह दिया।

बड़े बाबू — यही कि तुम लोगो ने शकुन का इन्सल्ट कर दिया है, और यह इन्सल्ट हमें बिलकुल पसन्द नही है।

सुरेन्द्र — तब आप ने क्या कहा ?

बड़े बाबू — मैं ने भी कसके कह दिया—देखिए साहब, यह रुपये को ले कर आप को नाराज़ नही होना चाहिए । आप की खातिर तो हम अपनी जान तक दे सकते हैं लेकिन यह शकुन के लिए ·

सुरेन्द्र — हम कुछ नही कर सकते । और इतना कह कर आप ने दो रुपये उन की मेज़ पर रख दिये ?

बडे बाबू — क्या करता । भाई, नदी में रह कर मगर से बैर कैसे करता । मैं ने सोचा चलो दो वक्त बच्चे बगैर तरकारी के ही रह जायेंगे । अन्नदाता के चरणो पर इतना ही सही ।

सुरेन्द्र — इस के माने कल हमें भी दो रुपये देने हैं ? वाह बडे बाबू, आप से यह नही कहते बना कि साहब, आप को मिस शकुन की बेइज्ज़ती तो बहुत खल गयी लेकिन उस दिन जब हम सब एक साथ सुरेश के लिए चन्दा लेने गये थे तो साहब बगलें झाँकने लगे थे ।

बडे बाबू — जाने भी दो, यह बडे लोग हैं, जो चाहे करें । हाँ एक मुसीबत लगी रह गयी ।

सुरेन्द्र — वह क्या ?

बडे बाबू — यही विनय की फ़ज़ीहत । साहब ने कहा देखिए बडे बाबू, मै कुछ नही जानता, सेठ साहब के इस नाटक में अगर विनय ने अभिनय नही किया तो फिर उन के लिए इस पेपर मिल में जगह भी नही है ।

विनय — नौकरी ! जगह ! बडे बाबू, यह सारी की सारी व्यवस्था, यह परम्परा, यह रोग लगता हमें तोड ही डालेगा । लेकिन मै नही टूटूँगा, मै हरगिज़ नही टूटूँगा ॥

बडे बाबू — लेकिन फिर ज़िन्दगी कैसे चलेगी फ़ाक़ाकशी, उपवास, बीमारी, रोग, निराशा और हताश, इन स्थितियो से बचने का कोई

भी चारा नही है। टूट कर भी यदि आदमी मे कुछ भी शेष रह जाये तो बडी गनीमत है बडे बाबू, विनयकुमार बी० ए० एल-एल० बी०।

विनय — ग़नीमत! टूटने के बाद जो कुछ भी आदमी के पास बच रहता है वह एक जिन्दा मज़ाक है। आप ही तो कह रहे थे, नौकरी हज़ार नियामत है, आप ने ही कहा था—सपने देखने से एक क्लर्क की जिन्दगी में बेचैनी पैदा होती है। आप ने ही कहा था—यह नाटक तमाशा छोडो। 'फिर क्यो, मुझे सिर्फ़ क्लर्क क्यो नही रहने देते?

बडे बाबू — इस लिए कि आज यह नाटक तुम्हारी नौकरी की शर्त बन गया है विनय!

विनय — यह भी कितना बडा व्यंग्य है! जब मैं नाटक मे पार्ट करने के लिए उत्सुक था तब नौकरी उस मे रुकावट थी, आज नाटक में भाग नही लेना चाहता तो भी नौकरी उस मे रुकावट पैदा कर रही है!

सुरेन्द्र — यही होता है मेरे रबर के बबुए! जिन्दगी इन्ही मज़ाकों मे झेली जाती है। इन से रूठ कर जाओगे कहाँ?

। — नही, मुझ से यह नही होगा। आप मिस्टर फ़िलिप से कह दीजिए। अगर वह आदमी को इतना गिरा हुआ समझते है तो फिर मुझे नौकरी की भी जरूरत नही है।

बाबू — मरज़ी तुम्हारी। सोच लो? इस पेपर मिल की नौकरी में सेठ की मरज़ी, साहब के इशारे, फाइल्स का लेखा-जोखा, यही सब से बडा सत्य है। अगर तुम इसे सच नही मानते तो लो यह डिसमिसल का आर्डर। और

सुरेन्द्र — एक बार फिर सोच लो विनय, मैं फिर कहता हूँ जिन्दगी में इन जोशों से काम नही चलेगा। असलियत है साहब की

मरजी, सेठ की खुशी, नौकरी की सलामती। और हम, तुम उन के इशारो पर नाचने वाले रबर के बबुए हैं, बबुए!

रबर का बबुआ चार आना
ले लो बाबू चार आना
बिका आदमी चार आना
ले लो बाबू चार आना

खिलौने वाला ही ठीक कहता है विनय, चार आने के बबुए की औकात क्या? सगमरमर की ठण्डी मूर्तियो के सामने सिर झुकाना ही पड़ेगा, नहीं तो भूखा परिवार, रोते बच्चे, भूख, खुदकुशी

विनय — भूख, खुदकुशी, नौकरी, यह सब छोडो सुरेन्द्र, मैं हूं विनयकुमार बी० ए० एल-एल० बी०। 'नौकरी न कर के मै कुछ और कर सकता हूं, कुछ और लड सकता हूं।

सुरेन्द्र — यह सब बकवास है। तुम किस-किस से लडोगे। सब कुछ तो अधूरा है। अब भी समय है, बडे बाबू दूर नही गये हैं विनय, आवाज दो, डिसमिसल का खत वापस कर दो। नाटक करने वाला खत ले लो। जाओ, जाओ, जाओ!

[बैक ग्राउण्ड मे रबर का बबुआ चार आना। सस्ता मदा चार आना। बिका आदमी चार आना। ले लो बाबू चार आना। चार आना। चार आना। ह, ह, ह, ह,]

विनय — बडे बाबू। बडे बाबू, ठहरिए बडे बाबू। ठहरिए बडे बाबू!

बडे बाबू — अब क्या है मिस्टर विनयकुमार बी० ए० एल-एल० बी०।

विनय — क्या होगा, बडे बाबू। यह लीजिए डिसमिसल का खत वापस ले लीजिए। दीजिए, मुझे ड्यूटी लीव वाला आदेश दीजिए। मै नाटक मे अभिनय करूंगा। कितना बडा नाटक

है ? चलने दीजिए। बडे बाबू, नाटक से छुट्टी मिलना मुश्किल है। यह तो चलता रहेगा।

बडे बाबू हिम्मत मत हारो साहबजादे, इस घुटन के पीछे नयी रोशनी विलमिला रही है। चलो, चलो।

सुरेन्द्र विनय !

विनय सुरेन्द्र, मैं ने डिसमिसल का कागज वापस कर दिया। क्योंकि सब झूठ है, बिलकुल झूठ। असलियत है नौकरी। असलियत है पचासी रुपया। लाइए मैं नाटक में पार्ट करूंगा। कितना बडा नाटक है ? कितना भयकर पार्ट है ? समझौते, जिन्दगी, उम्मीद, लडाई, सघर्ष और यह गूंज !

रबर का बबुआ चार आना
ले लो बाबू चार आना
टूटा - फूटा चार आना
सस्ता मद्दा चार आना
ह, ह, ह, ह, ह, ह !



परतों की आवाज़

पात्र

मि० जैक्सन

डॉ० मदन

रोहित

दारोगा

मि० किटी

रश्मि

अरना

[एक दर्द-भरी आवाज़ से रह-रह कर पूरा जैक्सन-विला गूँज जाता है। आवाज़ की गूँज से यह साफ पता चलता है कि जैसे मकान की नीवँ में से ज़मीन के नीचे से आवाज गूँज-गूँज कर आ रही है।

दूर से महानगर की हलचल, जाग संगीत, आधुनिकतम नगर की सम्पूर्ण सामूहिकता को व्यजित करने वाली खोखली व्यग्यात्मक ध्वनियाँ, हँसी, शोर ओ गुल, संघर्ष, दौड़-धूप, चहल-पहल, सूखी हँसियाँ]

[गूँजती हुई आवाज़]

उंह, उंह, उंह, कबतक भटकूँ ? ' ओ, अरे-ओ, मैं कबतक भटकूँ ! सुनो, अरे ओ सुनो, कोई तो सुनोऽऽऽ। कोई नही सुनता—जैसे सब मुरदे हैं—महज मुरदे। आदमी ही नही बसते जैसे इस बस्ती में। जिन्दा दफन हूँ मैं। ओ, अरे-ओ बस्ती वालो, मुझे भूलो मत, मुझे भूलो मत, ओ ' अरे ओ !

[आवाज़ धीरे-धीरे विलीन हो जाती है]

रश्मि [आतंकित स्वर में] सुनते हो, सुनते हो रोहित, आज फिर यह आवाज गूंज रही है। जाने कैसी आवाज है ? मेरा दिल धड़क जाता है रोहित !

रोहित [परेशान-सा] लेकिन यह आवाज किस की है ? आठ दिनो से पुलिस वाले भी परेशान है। कौन है यह आवाज ?

रश्मि मैं कहती हूँ यह घर छोड़ दो रोहित, छोड़ दो। हर आध घण्टे पर यह आवाज यहाँ इसी तरह उभरती है। मैं चारो ओर ढूँढती हूँ, कही कोई नही दिखलाई देता। लेकिन, लेकिन यह आवाज '

रोहित — मैं इस का पता लगाऊंगा रश्मि, मैं पता लगाऊंगा। यह आवाज़ किसी भूत-प्रेत की नहीं है। इस आवाज में मुझे किसी का दर्द उभरा हुआ सुनाई देता है। कौन है यह जिन्दा आदमी, कौन है?

[सहसा बाहर से दस्तकों की आवाज आती है और रश्मि चीख कर रोहित से लिपट जाती है। दस्तकें लगातार आती रहती हैं।]

रश्मि — कोई आ रहा है। कोई आ रहा है। बिलकुल मेरे दरवाजे पर कोई दस्तकें दे रहा है।

रोहित — देने दो। इस आधी रात को यहां कौन आयेगा। यह तुम्हारा वहम है बिलकुल वहम।

[सहसा फिर दस्तकों की आवाज आती है]

रश्मि — देखो-देखो रोहित, वही आवाज़, वही दस्तकें, वह जो पड़ोस में मिस किटी रहती है न? वह आज दिन में आयी थी। वही, नहीं न हो?

रोहित — [कुछ तेज़ स्वर में] कौन है? मुंह से बोलता क्यों नहीं?

[वही नीचे से आती आवाज]

"कोई नहीं सुनता! कोई नहीं सुनता! कबतक भटकूं? यह गन्दी नालियों का पानी! यह रेंगते हुए लोग? तहखानों में कैद हस्तियां? सूखी हँसियां, रूखी जिन्दगियां यह पेचदार गलियां और अँधेरी पुतलियां। ओ, अरे ओ, कोई तो सुनो! कोई नहीं सुनता! जैसे सब मुरदे हैं, महज़ मुरदे।"

[एक सेकेण्ड का सन्नाटा और फिर दस्तकों की आवाज]

रोहित — कौन है? यह कौन दस्तकें दे रहा है?

रश्मि कितनी भयावनी रात है रोहित,""दिन मे कोई आवाज़ नही सुनाई देती, " रात होते ही यह आवाजें क्यो सुनाई देने लगती हैं ? यह देखो, फिर कोई दस्तकें दे रहा है ? कौन हो सकता है ?

[फिर दस्तकों की आवाज]

मि० किटी [बाहर से ही बोलती है] खोलो, दरवाजा खोलो मि० रोहित, ' मैं हूँ मि० किटी, दरवाजा खोलो ।

[रोहित दरवाजा खोलता है । मि० किटी छड़ी टेकती हुई प्रवेश करती है]

मि० किटी आज फिर पूरी इमारत की रोशनी गुल है । जाने क्या हुआ है इस शहर के पावर-हाउस को ? पिछले आठ दिनो से रोशनी गुल हो जाती है । और इस रोशनी के साथ-साथ यह आवाज़ । बिलकुल मि० जैक्सन की-सी आवाज ! वैसी ही जैसी वह अँधेरी रात में कैन्सर की पेन से बेचैन हो कर आवाजें लगाया करता था । जब-जब उस का नर्वस ब्रेक डाउन हो जाता था, वह इसी तरह चिल्लाता था । यही आवाज होती थी पागलो जैसी । जैसे अन्दर से टूटे हुए आदमी की काँपती-भटकती आवाज़ । वही जैक्सन की आवाज़

रोहित जैक्सन ? यह जैक्सन कौन थे मिस किटी ?

मि० किटी तुम्हें नही मालूम ? [कुछ सोच कर] ओह, तुम तो अभी परसों आये हो इस मकान में ! मि० जैक्सन का ही यह बँगला है । तुम को तो यह मकान का हिस्सा सरकार ने दिलाया है, इस लिए तुम क्या जानो मि० जैक्सन को । पिछले आठ दिनों से पता नही है । सुना है सरकार ने यह ऐलान कर के कि उस का कोई वारिस नही है मकान अपने कब्जे में ले लेना चाहा है । क्या मज़ाक है ? जिस का

कोई वारिस नही होता उस का वारिस सरकार हो जाती है [हँस कर] लेकिन लावारिसो के लिए उस के दिल मे कोई दर्द नही होता। हुँ, मेरा यकीन है कि मि० जैक्सन अभी मर नही सकते, मर नही सकते, हरगिज नहीं मर सकते।

रोहित — तो फिर सरकार ने यह क्यो समझ लिया है मिस किटी ?

मि० किटी — इस लिए कि लोग मुझे इस घर से निकालना चाहते हैं। पिछले आठ दिनो से जैक्सन का कोई पता नही है। कुछ कहते हैं आदिवासियो की बस्ती मे चला गया, कुछ कहते हैं कैन्सर दर्द से परेशान हो कर उस ने अपनी आत्म-हत्या कर ली है। लेकिन यह सब गलत है। मैं जैक्सन को अच्छी तरह जानती हूँ। वह यह सब कुछ नही कर सकता।

रोहित — तो फिर यह आवाज किस की है मिस किटी ? यह दर्द-भरी आवाज जो अपनी गूंज से मन के अन्तिम तहो को गुँजा देती है परतो को बेधती हुई चली जाती है ?

[कुछ देर खामोश रह कर] सुनिए, सुनिए, यह धीमी-धीमी आवाज। लगता है जैसे वह इस मकान की नीव से बोल रहा हो। जैसे इस की नीव के साथ-साथ यह आवाज भी दफन तो कर दी गयी है, लेकिन उस को बेधती यह यहाँ तक आ ही जाती है। सुनिए, सुनिए।

[वही दर्द-भरी आवाज]

"अहँ, अहँ। मैं एक भटकती हुई आवाज हूँ, सुनो, अरे ओ सुनोऽऽऽ! कोई नही सुनता? कोई तो सुनो? मैं जिन्दा दफन हूँ। यह नालियो का पानी, यह [illegible], यह [illegible], यह घुटन!...अहँ, अहँ, अरे ओ सुनो, सुनो, कोई तो सुनोऽऽऽ!

मि० किटी — [कुछ सोच कर] इसी लिए तो मैं कहती हूँ मि० रोहित, मि० जैक्सन मरे नही हैं। मौत इतनी आसान [illegible] नहीं

होती। उसे खुदकुशी करनी होती तो आज से चालीस साल पहले करता जब—जब किसी ने उसे ठोकर दी थी—ऐसी ठोकर कि उस के लिए ज़िन्दगी का मतलब ही दूसरा हो गया था।

रश्मि ठोकर मिस किटी, कैसी ठोकर ?..

मि० किटी [पुरानी स्मृति की मूड में] बात आज से चालीस वर्ष पुरानी है—चालीस वर्ष। मि० जैक्सन को मैं ने पहली बार एक शाम को एक गिरिजाघर में देखा था। प्रार्थना हो रही थी। समूचे गिरिजाघर में एक अजीब पवित्रता का वातावरण छाया था। क्रिसमस का दिन था। मेरी बग़ल में ही जैक्सन आ कर बैठ गया था। अजीब उलझा-उलझा-सा व्यक्तित्व, बिखरे बाल, एक अजीब खोयी-खोयी-सी मुद्रा। सब प्रार्थनाएँ कर रहे थे, लेकिन वह खामोश था—बिलकुल खामोश। उस की खामोशी में भी जाने कैसा जादू था। मैं बार-बार उस की तरफ देखती। सहसा उस ने नज़र उठायी और जाने क्यों मेरी तरफ घूर-घूर कर देखने लगा। और जब शाम को प्रार्थना समाप्त हो गयी तो वह चुपचाप बाहर जा कर खड़ा हो गया। और कि तब से मैं उसे रोज़ देखती। रोज़ शाम को प्रार्थना समाप्त होती। गिरिजाघर का गजर बजने लगता.. और जब मैं बाहर निकलती आर्यर्ड में आ कर खड़ी होती तो जैक्सन भी आ कर वहीं खड़ा हो जाता। उसी हालत में परेशान, बोझिल, खामोश, खोया-खोया-सा। धीरे-धीरे जान-पहचान हुई। जैक की लापरवाहियों में उस की गहरी उदास आँखों में जाने कैसी कोशिश थी जो मुझे बलात् बाँधे ले रही थी। एक दिन उस ने कहा

[फ्लैश बैक]

मि० जैक्सन देखती हो किटी, यह फूलों से भरा लान और इस में

	यह सांझ की रंग-बिरंगी धूप, जाने क्यों इसे देख कर मुझे घुटन मालूम होती है। लगता है यह सब मेरी सांसें रोके हैं।
मि० किटी	लेकिन क्यों ? इन फूलों में तो कहीं भी घुटन नहीं दिखाई देती। कहीं भी किसी तरह का दोग नहीं दिखता ?
मि० जैक्सन	जाने क्या बात है किटी, इतनी सुन्दरता एक साथ में सहन नहीं कर पाता। लगता है जैसे में—जैसे मैं
मि० किटी	तुम्हें जो कुछ भी लगता है जैक, वह तुम्हारे भीतर की घुटन से पनपता है। चलो भी, इन रंगीन शामों में यह मनहूसियत भली नहीं लगती।
मि० जैक्सन	मनहूसियत ! पता नहीं यह मेरे अन्दर है, या बाहर है ! हर सुन्दर को जब मैं किसी असुन्दर के साथ देखता हूं तो लगता है जैसे मैं नहीं मेरी सारी जिन्दगी ही बोझ बन गयी है—बोझ—महज़ बोझ !
मि० किटी	लेकिन इतनी बोझिल जिन्दगी को भी हँस कर गुज़ारा जा सकता है जैक ! चलो, मेरे साथ चलो।
मि० जैक्सन	मैं यहाँ इस गिरिजाघर में एक शान्ति ढूंढने के लिए आया हूं। किसी ने मुझ से कहा है कि इस की छाया में सुकून मिलता है। लेकिन हर छोटी गजर की हर आवाज़ मुझे बेचैन कर देती है। मेरे दिल की धड़कनें खुलने लगती हैं। लगता है मैं घुट-घुट कर मर जाऊँगा। ये फूल, यह रंग-बिरंगे फूल, ये मटमैले, सुनहले, सुरमई फूल—यह सब हज़ार-हज़ार आँखों से मुझे घूरने लगते हैं।

मि० किटी — लेकिन जैक, तुम जो इतना सब सोचते हो, इतनी सारी बातें गुनते हो, उस से मुझे भी घुटन होने लगती है। जैक, मुझे यह घुटन नही, ज़िन्दगी चाहिए—ज़िन्दगी।

मि० जैक्सन — मैं तुम से तुम्हारी ज़िन्दगी छीनना नही चाहता किटी, मैं तुम से तुम्हारी हँसी भी नही छीनना चाहता। लेकिन—लेकिन मैं तुम से कैसे कहूँ कि जब मैं तुम्हें देखता हूँ, तुम्हारी इन बडी-बडी आँखो मे उदास मछलियो की प्यास देखता हूँ तो लगता है तुम्हारी इन पुतलियो में बादलो का एक तूफान चला आ रहा हैं। लगता है तुम्हारी पुतलियो के घने बादल सारा उजाला, सारी रोशनी पी जाना चाहते है। वह सुनो, यह आवाजें यह दुनिया की आवाज़ेंऽऽऽ।

[सुपर इम्पोजिशन]

पहली आवाज़ — दुनिया में क्या नही खरीदा जाता मियाँ, चलो, यह हुस्न, यह इश्क सब फ़रेब है।

दूसरा आवाज — ला यह गुलाब का फूल मुझे दे दे। देख तो मेरे जूडे में यह भला लगता है ?

तीसरी आवाज़ — कसम खुदा की। गुलाब हुस्न पर ही खिलता है। उधर देख—उधर।

चौथी आवाज़ — *उन के देखे से जो आ जाती है मुँह पै रौनक,*
वह समझते है कि बीमार का हाल अच्छा है।

पाँचवी आवाज़ — *इधर शर्म हायल इधर खौफ़े माना,*
न वह देखते है न हम देखते हैं।

छठी आवाज़ — हमे क्या ठोकर मारेगा, मै ज़माने को ठुकरा के बढा हूँ।

[धीरे-धीरे यह कथोपकथन नेपथ्य में चलता रहता

परतो की आवाज़

है। इस के ऊपर किर्टी का कथन सुपर इम्पोज़ होगा]

मि० किर्टी — तुम को तो रह-रह कर जाने क्या हो जाता है। इन आवाज़ों को क्यों सुनते हो जैक! चलो, चलो। और आगे चलो। यहाँ से बिलकुल दूर, जहाँ यह आवाज़ें बिलकुल ही न सुनाई पड़ें।

[गजर की ध्वनियों के साथ फेड आउट]

[फ़्लैश बैक समाप्त]

मि० किर्टी — और वह उठता, मेरे साथ चला जाता। लेकिन उस की उदासी वैसी ही रहती। उस की खामोशी भी निहायत ही गमगीन, निहायत दुखी हुई। मैं पूछती क्या बात है जो इस क़दर परेशान रहते हो, लेकिन वह कुछ नहीं बोलता। मैं ने चाहा कि मैं उस का साथ छोड़ दूँ, उस से दूर चली जाऊँ, लेकिन वह जैसे मेरी जिन्दगी की एक बहुत बड़ी मजबूरी बन गया था। एक रात वह मेरे सोने के कमरे में आया—शराब के नशे में चूर, मदहोश। लड़खड़ाते क़दमों से वह बार बार जैसे गिरा जा रहा था।

[फ़्लैश बैक]

मि० जैक्सन — तुम रोज़ मुझ से पूछती हो न कि मुझे क्या हो गया है। मैं आज तुम्हें बताने आया हूँ।

मि० किर्टी — जैक, जैक, तुम्हें क्या हो गया है? तुम आज इस हालत में यहाँ क्या आये हो?

मि० जैक्सन — महज़ इस लिए कि तुम मुझ से नफ़रत करने लगो। और—और मैं तुम से दूर चला जाऊँ। यह शराब, यह मदहोशी, यह खुमार

मि० किर्टी — लेकिन क्यों? यह सब क्या है? तुम मुझ से दूर क्यों

जाना चाहते हो ? तुम मुझ से जान-बूझ कर घृणा क्यो करना चाहते हो ।

मि० जैक्सन — ताकि तुम्हारे सौन्दर्य को, तुम्हारे रूप की इन लपटो से मुझे छुटकारा मिल जाये और मै जिन्दा रह सकूँ। इतना सौन्दर्य मै नही सँभाल सकता। लगता है इस रूप के सामने मै घुट-घुट कर मर जाऊँगा।

मि० किटी — लेकिन क्यो जैक, आखिर क्यो ?

मि० जैक्सन — क्योकि मेरे चारो तरफ असुन्दर-ही-असुन्दर है किटी, चारो तरफ गन्दगी-ही-गन्दगी, बिकती हुई जिन्दगियाँ, भ्रष्ट सौन्दर्य, खनकती हुई आवाजें, मुरदा हँसी, खामोश दीवारें, मजबूरियाँ, मजबूरियो में घुटती हुई साँसें है

मि० किटी — [व्यग्य मे] और शराब पीने से, उन गन्दगियो को ओढ लेने से जैसे तुम पाक हो जाते हो, क्यो ?

मि० जैक्सन — पता नही क्या हो जाता है मुझे। पीने के बाद लगता है वह तसवीरें वह गन्दी अपाहिज तसवीरें जो अभी-अभी मेरे सामने उभर कर आयी थी धुँधली पड गयी है। अब बिना किसी भय के मै तुम्हें देख सकता हूँ, छू सकता हूँ तुम से बातें कर सकता हूँ।

मि० किटी — लेकिन यह चारो ओर की जिन्दगी तुम से इतनी लिपटी हुई क्यो रहती है जैक ? क्यो नही तुम होश में उसे दूर फेंक देते ? क्यो नही तुम उस से दामन छुडा कर मेरे पास रहते मेरे पास

मि० जैक्सन — [व्यग्य की हँसी हँसते हुए] तुम्हारे पास हूँ हूँ हूँ—मैं किसी के पास नही रह सकता किटी, जाने क्यो मुझे अपने से ही छुटकारा नही मिल पाता।

किटी, मेरी तरफ़ देखो, मेरी आँखो मे देखो किटी, तुम्हारा जिस्म जो मेरी पुतलियो में है जाने क्यो इस मे तुम्हारी सुन्दरता बिलकुल बर्फ़-सी ठण्डी लगती है। लेकिन यह है इस लिए क्योकि मैं अपने होश में नहीं हूं·

मि० किटी — तो फिर इस बेहोशी की हालत को तुम ओढ़ लेना चाहते हो ? अपने से इस तरह भाग कर तुम आखिर करना क्या चाहते हो ?

मि० जैक्सन — ख़ुदकुशी। मैं जीना नही चाहता—बिलकुल जीना नही चाहता। ज़िन्दगी ने अपने साये से मुझे दूर फेंक दिया है। मैं भी ज़िन्दगी को दूर फेंक देना चाहता हूं। · लेकिन मैं फेंक नही पाता। बिलकुल फेंक नही पाता।

मि० किटी — तुम्हारे इस पागलपन ने मुझे भी पागल बना दिया है। तुम बार-बार कहते हो

[सहसा फिर वही नीव में दफन आवाज़]

"आह, आह, आ—आ—आह। कब तक भटकूं। ओ, अरे-ओ, सुनते हो! सुनो, सुनो, सुनो। कोई तो सुनोऽऽऽ। कोई नही सुनता मै जिन्दा दफ़न हूं। आह, आह आह!—

फिर वही आवाज है। लगता है जैसे कोई प्रेत बोल रहा हो।

[र]ोहित — मुझे फोन करना पडेगा मि० किटी! इस मकान मे कोई तहखाना है क्या ?

[मि]० किटी — नही तो। यह आवाज तहखाने की नही है। यह आवाज—यह आवाज मैं पहचानती हूँ। यह जैक्सन की आवाज है।

उसी जैक्सन की। कैन्सर के दर्द से परेशान हो कर वह ऐसा ही कराहा करता था—ठीक ऐसा ही।

रोहित — फिर उस के गायब हो जाने के बाद यह आवाज़ कहाँ से आ रही है ?

रश्मि — लगता है वह यही कही है यही कही आस-पास। ••

मि० किटी — आज भी उस की आवाज़ में वैसा ही दर्द है, वैसी ही घुटन, वैसी ही ऊब, वैसी ही परेशानी, वदहवासी 'जैसी उस दिन थी जिस दिन वह नया गुनाह कर के आया था।

रश्मि — नया गुनाह ? क्या मतलव इस नये गुनाह से ?

मि० किटी — वह नया गुनाह भी एक दिलचस्प क़िस्सा है उस दिन शाम को जब जैक्सन मेरे पास आया तो उस की आँखो में आँसू ये। वह वेहद वेचैन था। और उसी परेशानी की हालत मे बोला

[फ्लैश बैक]

मि० जैक्शन — हाँ, मै कह रहा था कि सौन्दर्य को देख कर मुझे एक घुटन-सी मालूम होती है। आज फिर मुझे एक घुटन-सी ही मालूम हो रही थी। लगता मैं उसी के बीच घिरा एकदम सिर से पैर तक जल रहा हूँ। इसीलिए मै ने आज फिर थोडी-सी पी ली है। इस पीने के वाद लगता है मै सब कुछ भूल गया हूँ। मेरे चारो ओर का वातावरण, सारी फ़िज़ा हलकी हो गयी है। अव मैं साँस ले सकता हूँ।

मि० किटी — जैक, तुम आज फिर ख़ूब पी कर आये हो। जवरदस्ती वहाना वनाना चाहते हो। जैक, यह पीना वन्द क्यो नही कर देते।

मि० जैक्सन — इसलिए कि जिन्दगी मुझ पर भारी पड रही है किटी,

मुझे कही सुकून नही मिल पाता। कही आराम नहीं मिल पाता। मैं जब तुम्हारे साथ होता हूँ तो ज़िन्दगी भटकी हुई-सी मालूम पडती है। लगता है मैं किसी ज्वालामुखी के बीच ज़िन्दा सुलग रहा हूँ सारी फ़िजा से यह रेंगनेवालो के हँसी, क़हक़हे और व्यग्य मुझे घेर लेते है। मेरा दम घुटने लगता है।

[सुपर इम्पोजिशन]

[नेपथ्य से धीरे-धीरे कुछ स्वर क्रमश उभर कर नज़दीक आ जाते है]

पहली आवाज़ *तुर्शी मे शराब रिन्दगी है,*
तलखिए हयात ज़िन्दगी है।

दूसरी आवाज़ *यह दुनिया वाले जीना क्या जाने,*
ये मरने से घबराते हैं।

तीसरी आवाज़ *यहाँ हर चीज नीलाम होती है,*
सुनो, सुनो यहाँ हर चीज नीलाम होती है

चौथी आवाज़ *यह हुस्न, यह इश्क़, यह दर्द, यह*
दवा, यह खुश्क हसी, यह सब लोग

[समवेत स्वर में एक व्यग्यात्मक सूखी हँसी]

[फ़्लैश बैक]

मि० जैक्सन सुना, सुना तुम ने किटी, आज वह सुनहली झील, वे काले पहाड, वह झोपडियो की बस्ती सब के सब नीलाम हो गये हैं। सब की कीमत लग गयी है। वह जो जगली बस्ती थी उसे बाहरवालो ने साफ कर दिया है। वहाँ अब मशीनें लगेंगी। नये आदमी ढाले जायेंगे। आदमी और ढाले जायेंगे [कुछ देर चुप रह

कर] सुनो, सुनो वह दूर से आती हुई नीलाम की डुगडुगी सुनती हो ?

[दूर से उठती हुई नीलाम की आवाज़]

नीलाम की आवाज़ — यह सुनहली झील, यह काली पहाड़ियाँ, यह झोपडियो का देश बहुत सस्ते जा रहे हैं, लीजिए, लीजिए —हज़ार रुपये, दो हज़ार, चार हज़ार, चालीस हज़ार, लीजिए, लीजिए, लीजिए। एक , दो ' लीजिए, लीजिए तीन।

मि० जैक्सन — सुना, सुना तुम ने किटी ? यह आवाजें

मि० किटी — तुम पागल तो नही हो गये हो जैक ! उन बस्तियो में तुम्हारा क्या धरा है तुम क्यों परेशान होते हो ? चलो, भूल जाओ इस सब को।

मि० जैक्सन — भूल जाऊं ! किटी, कैसे भूलूँ। मेरी माँ उसी बस्ती की थी। मैं ने बचपन उसी बस्ती में बिताया है। उसी असुन्दर के बीच में जिया हूँ, जिन्दा रहा हूँ। लेकिन आज—आज वे हम से दूर हैं—बहुत दूर।—याद आता है तो लगता है सब सपना था—महज़ सपना !

[फिर वही नीलाम की आवाज़ और नगाड़े की चोट]

मि० किटी — तो तुम्हें उन जंगलियों से ज्यादा प्यार है ? उन को तुम ज्यादा पसन्द करते हो ?

मि० जैक्सन — नहीं किटी, तुम मुझे गलत मत समझो मुझे अपने बचपन की जब याद आती है तो लगता है वह जिन्दगी ज्यादा अच्छी थी—बहुत ज्यादा अच्छी। मेरी माँ विधवा थी। मेरे पिता मेरे जन्म लेने के पहले ही मर चुके थे। गाँव वाले माँ को वनिता दीदी कहते थे। •

मेरे पिता एक सम्भ्रान्त ईसाई थे। प्रभु ईशू मे उन की अटूट श्रद्धा थी।··माँ गाँव की स्त्रियो में सेवा का काम करती थीं। पिता जी दवा बाँटते थे। सुनहली झील के सामने मेरा घर था। वह फूलों से भरा रहता। सुन्दर सपने थे—तितलियों के पीछे-पीछे दौड़ने वाले रंगीन सपने। उन्हीं में मेरी एक बचपन की साथी थी अरुना। वह रोज़ आती थी मेरे घर। हम दोनों उन्हीं तितलियों के साथ दौड़ते-दौड़ते उसी सुनहली झील के किनारे आ जाते थे। और एक रोज़··

[फ्लेश बैक नं० २]

अरुना — नहीं नहीं नहीं जैक, नहीं नहीं नहीं ऽऽऽ।

मि० जैक्शन — नहीं अरुना, आज मैं तेरे जूड़े में यह फूल लगा ही दूँगा।

अरुना — नहीं जैक, गाँववाले मुझे मार डालेंगे। इस सुनहली झील मे न जाने कितनों ने इसी कारण डूब कर अपनी जानें दी हैं जैक, नहीं नहीं नहीं

मि० जैक्सन — क्यों नहीं ? मैं इस फूल के साथ तुम्हें देखना चाहता हूँ। चाहता हूँ तुम्हारी इस अमोल सुन्दरता को एक दम तुम्हारे पास बैठ कर देखूँ। ओठों से लगा कर इसे पी लूँ। अरुन, यह फूल

अरुना — तुम जानते नहीं जैक, हमारी जाति में जूड़े मे फूल सिर्फ दो दिन लगाये जाते हैं एक तो विवाह के दिन और एक दिन जब सोहागिन मरती है··जानते हो दोनों दिन जूड़े में पति ही

	फूल लगाता है। एक फूल जिन्दगी का और दूसरा मौत का।
मि० जैक्सन	तो क्या हुआ—जब तू मरेगी तो मैं फिर यह फूल लगा दूँगा।
अरुना	तुम नही मानोगे जैक ! लो लगा दो
मि० जैक्सन	लेकिन तुम उदास क्यो हो गयी ? खामोश क्यो हो अरुना, 'अरुना '
अरुना	कुछ नही जैक, कुछ नही। लो लगा दो यह फूल।
मि० जैक्सन	इस रूप पर यह कपूरी रग का गुलाब—लगता है सगमरमर खिलखिला कर हँस पडा हो। लगता है जिन्दगी मुसकराने के पहले सजीदा हो गयी है, लेकिन उस के ओठो की चचलता उस के काबू में नही रह गयी है।
अरुना	लेकिन जैक, शायद तुम्हें नही मालूम है कि तुम ने जलते हुए अगारे रख दिये है। ऐसा नश्तर चुभो दिया है कि मेरी आँखें आँसू भी उगल रही है और खून भी जैक ! 'जैक, [सिसकियाँ भरती हुई] जैक !
मि० जैक्सन	मै नही जानता अरुना, मै ने यह फूल क्यो लगा दिया है। मैं नही जानता, बिलकुल नही जानता। तुम इसे निकाल दो अरुना, इसे निकाल कर फेंक दो। मै, मै निकाल कर फेंक देता हूँ।
अरुना	नही, नही, नही [चीख कर रोते हुए] यह तुम ने क्या किया जैक वनदेवी नाराज हो

जायेगी इस फूल को मैं लगाये रहूँगी इसे मुझ से कोई नही अलग कर सकता कोई नही ' कोई नही ।

मि० जैक्सन — तो लो मैं इसे मसल कर फेंक देता हूँ। मैं, खुद ही फेंक देता हूँ।

अरुना — नही, नही—नहीऽऽऽ जैक ! ऐसा मत करो जैक ? ऐसा मत करोऽऽऽ !

[फ्लैश बैक न० २ समाप्त]

मि० जैक्सन — और सुनती हो किटी, मैं ने उस के जूड़े मे फूल निकाल कर फेंक दिया, पैरों तले कुचल दिया। वह रो रही थी, लेकिन मैं ने उस की एक बात भी नही सुनी। वह रोती रही-रोती रही। मैं उसे रोती छोड कर अपने घर वापस चला गया। • फिर वह कई बार आयी लेकिन मैं उस से नही मिला। मा ने मिलने को कहा, फिर भी मैं नही मिला। मेरा अहम्—झूठा अहम् जो मुझ से बडा था। और एक दिन की बात है ··ठीक आधी रात को मुझे लगा कि जैसे उस सुनहली झील से मुझे कोई बुला रहा है। अजीब दर्द-भरा स्वर था। मैं विवश हो कर उधर जाने लगा। उस अंधेरी सन्नाटी फ़िज़ा में रात जैसे मुझे बुला रही थी। लगता था जैसे सारा वातावरण कांप रहा हो। सारी पहाडियाँ जैसे एक साथ गा रही हो। मैं देख रहा था—मेरे आगे आगे अरुना चली जा रही है। मैं ने उसे बुलाया, लेकिन वह एक अजीब हँसी हँसती हुई पहाडियो की चोटियो पर चढ़ी चली जा रही थी। मैं ने उसे पकड लिया। सहसा उस की घबरायी आँखो से आँसू ढुलक गये। उस का अजीब

रूप था किटी, खुले हुए वालो के बीच माँग मे उस ने सिन्दूर लगा रखा था। जूडे मे वैसा ही सफेद गुलाव, माथे पर विन्दिया, हाथो में फूलो के कगन। और जव मै ने उस का हाथ पकडा तो उस की साँसो की गति तेज़ हो गयी। उस की पलकें झुक गयी। लगा मदल के जिस्म पर चाँदनी अभी-अभी नाच कर सो गयी है। उस ने कहा

[फ्लैक वैक न० २]

अरुना — तुम आ गये जैक! लेकिन यह देखो—यह मेरे शरीर पर कोडे पडे हैं। वावू नही माने। उन्होने पहले तो मुझे वहुत प्रताडित किया, फिर मुझे घर से निकाल दिया। मैं तुम्हारे पास गयी। तुम नही मिले—विलकुल नही मिले!

मि० जैक्सन — लेकिन मैं अव आ गया हूँ अरुना! अव—अव जव कभी भी तुम मुझे बुलाओगी मैं आ जाऊँगा—हमेशा आ जाऊँगा!

अरुना — आ जाओगे न!, हमेशा आ जाओगे न? सच, जव-जव मै बुलाऊँगी तव तव तुम आ जाओगे न?

मि० जैक्सन — हाँ मै आ जाऊँगा अरुना! [सहसा चौक कर] लेकिन यह क्या अरुना, यह तुम्हारा जिस्म ठण्डा क्यो पड रहा है? क्यो क्यो ठण्डा पड रहा है?

अरुना — आज मैं वनदेवी के मन्दिर में गयी थी। मै ने प्रार्थना की—वडी प्रार्थना की लेकिन वनदेवी कुछ नही वोली। मै ने प्रसाद माँगा तव भी कुछ नही वोली। किसी ने इन धतूरे के फलो

को चढ़ाया था। मैं ने वनदेवी से उन फलो को जबरदस्ती ले लिया। फिर, फिर मैं ने शृंगार किया।' देखते हो न देखते हो मेरा शृंगार? और फिर-फिर वनदेवी का प्रसाद मैं पी गयी। सच मानो जैक, मैं पी गयी।

मि० जैक्सन — वह क्यो अरुना! तुम ने जहर क्यो पी लिया? क्यों-क्यो अरुना?

अरुना, — इसलिए कि मुझे इस सुनहली झील में जाना था। हमारे इस गांव में जिस भी क्वांरी लडकी ने मेरी तरह ब्याह रचाया है, वह इसी चोटी पर आ कर झील मे कूद गयी है। तुम मुझ से नाराज हो न? फिर भी क्या? मैं तुम से खुश हूं जैक—बिलकुल खुश।

[धीरे धीरे आवाज़ के साथ पगध्वनियाँ ऊपर की ओर सुनाई देती है।]

मि० जैक्सन — अरुना ऽऽऽ! अरुना ऽऽऽ! अरुना ऽऽऽऽ!!

[धीरे-धीरे अरुना और जैक्सन दोनों की ध्वनियाँ अरुना के ऊपर से झील में कूद जाने की ध्वनि के साथ विलीन हो जाती है।]

[फ्लैश बैक न० २ समाप्त]

मि० जैक्सन — और तब से मैं सौन्दर्य से डरने लगा हूं। किटी, मुझे लगता है हर सुन्दर चीज मे एक छिपी हुई आग है जो जब दूसरो को नही जला पाती तो खुद को जला लेती है। अब भी उन्ही पहाडियो पर गूंजती हुई नीली झील की आवाजें मुझे बुलाती है! और मैं जैसे जाने के लिए विवश हो जाता हूं—बिलकुल विवश!

मि० किटी — लेकिन उस वस्ती को छोडे हुए तो तुम्हें वरसो हो गये जैक, अभी तक तुम इस एक छोटो-सी घटना को भूल नही पाये ?

मि० जैक्सन — नही किटी, उसी को भूलने को कोशिश में मैं उस आदिवासियो की वस्तो से वहुत दूर, हजारो मील दूर, यहाँ पर आ गया हूँ। मेरे जीवन में सफलता ही सफलता है। •मैं ने सिर्फ़ अपने वूते पर ठेकेदारी में इतनी रकम पैदा को है यह घर, यह मोटर, यह पैसा, यह यश क्या नहो मिला लेकिन इस से भी कोई आराम न मिला। अव भी जब-तव लगता है झील की वही आवाजें मुझे वुला रही हैं।

[सुनहली झील की आवाजों की गूँज]

मि० किटी — और इसीलिए मैं कहती हूँ रोहित, जैक मरे नही हैं, वह जिन्दा हैं।

[दरवाजे पर दस्तकों की ध्वनियाँ]

रश्मि — फिर कोई दस्तकें दे रहा है मि० किटी। फिर वही आवाजें गूँज रही हैं। वही वेतरतीव, वेलौस वही कराहने की आवाजें। •

[फिर वही दफन हुई आवाज]

"आह, आह, आह। कब तक भटकूँ। ओ, अरे ओ। ओ, ··· मैं कब तक भटकूँ। सुनते हो। • सुनो, सुनो, कोई तो सुनो। कोई तो सुनो, अरे ओ।

[धीरे-धीरे कराहने की ध्वनियाँ समाप्त हो जाती हैं]

[दरवाज़ों पर दस्तकों की आवाजें]

रश्मि — लगता है कोई और आया है कौन होगा यह ? कही वह तो नही आज सुबह जिस का तार आया था ?

मि० किटी	तार ...? किस का तार आया था रश्मि ?
रश्मि	पता नही कोई डॉक्टर मदन हैं, उन्ही का तार था। था तो वह किसी के नाम नही, सिर्फ जैकविला ही लिखा था लेकिन डाकिया ज़बरदस्ती मेरे यहाँ डाल गया।
रोहित	होगा कोई ? मैं दरवाज़ा खोल कर देखता हूँ।
	[दरवाज़ा खोलता है और उस मे एक बिलकुल वृद्ध व्यक्ति का प्रवेश]
मि० किटी	यस, कम इन प्लीज़ !
डॉ० मदन	ओह यू आर हियर ? आई एम एन ओल्ड, फ्रेण्ड ऑव जैक्सन—ए फ्रेण्ड ऑफ कोर्स।
रोहित	लेकिन हम लोग न तो आप को जानते हैं और न मिस्टर जैक्सन को ?
डॉ० मदन	नेवर माइण्ड। आप मुझे अभी जान जायेंगे। तशरीफ रखिए, बैठिए। यस किटी, हाउ डू यू डू ?
मि० किटी	वट हू आर यू प्लीज़ ? ए फ्रेण्ड ? ऐम्स्ट्रेन्जा ?
डॉ० मदन	मुझे लोग डाक्टर मदन कहते हैं।
मि० किटी	मदन ? आर यू मदन ? क्या तुम जिन्दा हो ?
ॅ० मदन	जिन्दा ही हूँ। जिन्दगी एक जोंक की तरह मुझ से चिपकी हुई है। छूटती ही नही।
.० किटी	लेकिन मदन ..[कुछ घबराते हुए] तुम
ॉ० मदन	घबराओ नही मि० किटी, मैं जैक्सन का वही पुराना दोस्त हूँ जिसे आप ने एक दिन इसी बँगले से निकाल दिया था। महज़ इसलिए कि मैं जैक्सन को सीधे रास्ते पर ले जाना चाहता था।.. उस की जिन्दगी की न्यूरासिस को दूर करना चाहता था। और क्योकि आप उस न्यूरासिस को बनाये

रखना चाहती थी। असत्य की कहानी मैं उस के दिमाग से निकाल देना चाहता था, लेकिन तुम उस कहानी को ज़िन्दा रखना चाहती थी। मैं उसे उस भयानक रोग से मुक्त करना चाहता था और क्योंकि तुम उस याद को ताज़ा बना कर उस के दिमाग़ को पागल बना देना चाहती थी !···

मि० किटी ह्वाट नानसेन्स ! मदन, बुढापे के साथ-साथ तुम्हारा दिमाग भी ख़राब हो गया है ?

डॉ० मदन : [एक दबी हँसी हँसते हुए] हूँ···हूँ··हूँ। क्यो नही। मेरा ही दिमाग ख़राब होगा ? शराब के साथ मिला कर जैक्सन को क्या देती थी मिस किटी ? बोलो, बोलो न ?

मि० किटी मैं ने कभी कुछ मिला कर नही दिया। जैक शराब पीता था खूब पीता था ··बुरी तरह पीता था।

डॉ० मदन और कैन्सर का रोग था उसे—कैन्सर ऑव लिवर। दर्द से बेचैन और परेशान हो कर वह हमेशा जान देने की कोशिश में भटकता था, लेकिन तुम ने उस वक्त तक उसे मरने नही दिया जब तक उस ने यह मकान तुम्हारे नाम नही लिखा। मैं तुम से यही कहने आया हूँ कि यह उस की वसीयत है। उस ने इस मकान और अपनी जायदाद को तुम्हारे नाम लिख दिया है, तुम उस की लाश मुझे वापस दे दो

मि० किटी लेकिन मैं नही जानती उस की लाश को। इधर जब-जब उस का दर्द बढता था वह अपने बिस्तर से उठ कर भागने की कोशिश करता था। रोज़ सुबह वह कभी इस अहाते में, कभी उस कूचे मे, कभी सडक पर पडा हुआ मिलता था। लोग उसे उठा कर यहाँ तक लाते थे। यहाँ सुला देते थे। लेकिन रात मे वह बराबर बिस्तर से भागता था। कहता था, सुनहली झील की पहाडियाँ उसे बुला रही है।

डॉ० मदन — लेकिन किटी, वह मरा नही है, वह अब भी जिन्दा है, और तुम जानती हो वह कहाँ है। अधमरी हालत में भी वह कहाँ पड़ा है यह भी तुम्हें मालूम है। मैं ने पुलिस को खबर कर दी है। उस के आने के पहले तुम मुझे बता दो वरना '

मि० किटी — वरना क्या डॉ० मदन ? तुम तो ऐसा कह रहे हो जैसे मैं ने ही उस की जान ली है ?

डॉ० मदन — तुम्ही ने उस की जान ली है किटी ? जैक्सन ने तुम्हे कभी भी नही चाहा—कभी भी तुम से प्यार नही किया। वह बराबर कहता था कि तुम्हारे हुस्न में जाने कैसी तेजाबी जलन है। लेकिन तुम ने बराबर अपने प्रेम का जाल बिछा कर उसे फँसाये रखा। उस ने तुम से शादी नही की, लेकिन तुम ने उस की बीवी बनने का नाटक बराबर किया। क्यो ? आखिर क्यो ?

मि० किटी — वह इस लिए कि वह मेरी मजबूरी थी। वह इसलिए कि मैं ने उसे हमेशा से—पहले दिन जब मेरी उस की भेंट गिरजाघर में हुई थी तभी से उसे अपनी क्वाँरी प्यास दी थी। मैं उस के वश में थी। उस से अलग रहना मेरे लिए मुश्किल था। दुनिया मुझे यही कहती है, जो तुम कहते हो। लेकिन दुनिया मेरी मजबूरी नही समझती—बिलकुल नही समझती। [सिसकने लगती है]

डॉ० मदन — मै इन आँसुओ से डरने वाला नही हूँ किटी। जैक्सन मेरा दोस्त था। मैं ने उस के लिए तो कुछ नही किया लेकिन मैं आज जो कुछ भी हूँ उसी जैक्सन का बनाया हुआ हूँ। उस ने मुझे केवल दया का पात्र ही समझा। यह नही समझ सका वह कि मेरे दिल में उस के लिए एक दयावान् से अधिक दोस्त का महत्त्व है। जब-जब मैं ने उसे अपना समझ कर

अपनाना चाहा उस ने मेरी दोस्ती को दवा दिया। वह दुनिया में बेलौस रहना चाहता था 'ठीक वैसे ही जैसे एक मुसाफिर एक मुसाफिरखाने में रहता है। लेकिन तुम ने जबरदस्ती उसे उस के चुने हुए रास्ते से अलग कर दिया। पहले तुम ने उस से उस की शराब छीन लेनी चाही। फिर मिलावट की शराब दे-दे कर उसे रोगी बनाया। बोलो यह सच है या गलत ?

मि० किटी — गलत बिलकुल गलत।

डॉ० मदन — तो लो, यह है जैक्सन का खत, पढ लो इसे, पढो वह क्या लिखता है।

मि० जक्सन के स्वर में — "डियर मदन, मैं जानता हूँ मेरा रास्ता एक जबरदस्त आत्म-हत्या की ओर बढ रहा है, लेकिन इस आत्म-हत्या में भी मेरा दोष है। जैसे किसी जख्म में खुजली उठना उस जख्म की मजबूरी है उसी प्रकार किटी मेरे जख्म की मजबूरी है। मैं जानता हूँ कि शायद वह शराब में मुझे कुछ मिलाकर देती है। मैं देखता हूँ, लेकिन मैं उसे रोक नही सकता, क्योकि यह भी सच है कि वह मेरी मजबूरी है—बहुत बडी मजबूरी है। "

मि० किटी — तो मैं क्या करती मदन! कैन्सर के दर्द से जब वह कराहता था तो मैं उसे अपने हाथ से शराब पिलाती थी। तेज शराब—बेहद तेज, ताकि उसे नीद आ जाये। और सच वह सो जाता था, जाने किस नीद में सो जाता था। लेकिन जब वह उठता था तो फिर जैसे का तैसा बेचैन हो जाता था। लगता था वह जिन्दगी को जल्द खत्म कर देना चाहता था। लेकिन जिन्दगी उस की मुट्ठियो से छिटक कर उस से

मज़ाक करती जाती थी। सुनो, सुनो फिर वही आवाज़ उठ रही है, बड़ी बेचैन—बेलौस आवाज़!

[मकान की नींव से आती हुई आवाज़]

"आह, आह, कब तक भटकूँ! ओ, अरे ओ! मैं कब तक भटकूँ! सुनते हो, सुनो सुनो ओ, अरे ओ, सुनो, कोई तो सुनो। कोई नहीं सुनता, जैसे सब मुरदे हैं, महज़ मुरदे। आदमी ही नहीं बसते जैसे इस बस्ती में! ज़िन्दा दफ़न हूँ मैं! ··ओ, अरे ओ बस्ती वाले, मुझे भूलो मत मैं ज़िन्दा दफ़न हूँ—ज़िन्दा!

[आवाज़ धीरे-धीरे दब जाती है]

डॉ० मदन यह जैक्सन की आवाज़ है। उस के दिल की परतों में जो दर्द है मैं सुन रहा हूं, किटी, तुम नहीं सुन रही हो? इस अँधेरी रात में मैं उसे कहाँ ढूँढ़ूँ। लगता है वह सचमुच ज़मीन में ज़िन्दा दफ़न है—ज़िन्दा दफ़न है। बोलो, बोलो किटी, तुम्ही ने उसे कहीं ज़िन्दा दफ़न किया है। वह जो बार-बार कहता था कि तुम्हारे रूप में उसे आग की लपटें दीखती थीं, सही कहता था। लेकिन किटी, जब तुम ने उसे इस कदर जलाया था तो अधजला कर के छोड़ क्यों दिया? बोलो, बोलो?

तो क्या मिस किटी ने जैक्सन की हत्या की है!

मिस किटी आप ने?

[दूर से कहीं ग्रामोफोन की एक स्वरलहरी]

पहला स्वर *यह शमा जो जलती है, है लाश परवाने की*

दूसरा स्वर *यह रोशनी दफ़न है उलझन है ये दीवाने की*

तीसरा स्वर *ज़ालिम ज़माना माने न माने।*

चौथा स्वर किस को सुनाऊँ गम के फसाने…

पहला स्वर यह शमा जो जलती है, है लाश परवाने की

[एक समवेत हँसी के साथ बेलौस सूखी आवाज़]

डॉ० मदन मैं जानता हूँ मिस क्रिटी, यह सारा दोष तुम्हारा है। तुम्ही ने उस की जान ली है। तुम्ही ने उस की हत्या की है। तुम्ही ने उस की अधमरी लाश छिपा रखी है।

मि० क्रिटी [सिसकती हुई] मैं ने ही यह सब किया है ? ··क्या मैं ने ही यह सब किया है ?

[दरवाज़ों पर दस्तकों की आवाज]

रोहित फिर वही दस्तकें हैं। फिर अभी वही आवाज सुनाई देगी।·· फिर वही बेलौस आवाज उठेगी। रश्मि, रश्मि !

रश्मि मैं तो थक गयी हूँ रोहित ! लगता है सुबह की रोशनी होगी ही नही ! कितना लम्बा—कितना भयानक अँधेरा है। हर सिमत से वही भयानक सूखी हँसी। वही · वही

[समवेत हँसी की सूखी बेलौस आवाज़ें]

इन्सपेक्टर दरवाजा खोलो ? खोलो दरवाजा ?

रोहित कौन है ? मैं इस वक्त दरवाजा नही खोल सकता।

इन्सपेक्टर मैं पुलिस इन्स्पेक्टर हूँ। दरवाज़ा खोलो नही तो मैं तोड कर अन्दर आऊँगा।

रोहित ठहरो, खोलता हूँ।

डॉ० मदन पुलिस आ रही है। सच-सच बता दो क्रिटी, अब भी बता दो ?

मि० क्रिटी नही, नही—नही ! मैं नही जानती।

इन्स्पेक्टर मिस क्रिटी, मिस्टर जैक्सन की लाश कहाँ है ?

मि० किटी — आइए आइए इन्स्पेक्टर, मुझे आप से ही काम था। इन्स्पेक्टर, मैं नही जानती कि जैक्सन या जैक्सन की लाश कहाँ है। मैं समझ नही पाती इन्स्पेक्टर, मुझ से यह बेहूदा सवाल पूछा क्यों जा रहा है ?

इन्स्पेक्टर — महज इसलिए कि मि० जैक्सन आप के साथ रहते थे।

मि० किटी — मेरे साथ जैक्सन नही, उस की बीमारी रहती थी—उस की मजबूरी रहती थी, उस की बेबसी रहती थी।

इन्स्पेक्टर — आप ने उस की हत्या की है ?

मि० किटी — [डॉटकर] नही। ...जैक्सन ने आत्म-हत्या की कोशिश की है। वह आत्म-हत्या कर नही सकता था, इस लिए उस की वह कोशिश नाकाम रही है।

इन्स्पेक्टर — लेकिन मि० जैक्सन ने कहाँ आत्म-हत्या की ? क्यों आत्म-हत्या की ? कैसे आत्म-हत्या की ?

मि० किटी — यह मैं नही जानती। मैं महज इतना कह सकती हूँ कि वह जिन्दा है। उस की आवाज अब भी यहाँ गूँज रही है।

इन्स्पेक्टर — इस मकान में कोई तहखाना है।

मि० किटी — जी नही।

स्पेक्टर — कोई ऐसी जगह है जहाँ आप लोग न जा सकें।

किटी — नही।

फिर वही आवाज आ रही है रोहित। वही आवाज वही दर्दनाक आवाज।

"आह, आह, आह, कबतक भटकूँ। ओ अरे ओ, मैं कब तक भटकूँ ? सुनते हो। सुनो, ओ, अरे ओ, सुनो। कोई तो सुनो।' कोई नही सुनता। जैसे सब मुरदे हैं—महज मुरदे। आदमी ही नही बसते जैसे इस बस्ती में। जिन्दा

दफन हूँ मैं ! ओ, अरे ओ वस्ती वालो ! मुझे भूलो मत, मुझे भूलो मत । 'ओ, अरे ओ, ओ !"

[आवाज़ धीरे-धीरे विलीन हो जाती है]

डॉ० मदन — सुनते हैं मिस्टर इन्स्पेक्टर ! यह आवाज़—यह आवाज़ मि० जैक्सन की है ।

मि० किटी — मैं कब कहती हूँ कि यह आवाज़ मि० जैक्सन की नहीं है ।

इन्सपक्टर — लेकिन यह कहाँ छिपी है ? कहाँ से आ रही है ?

डॉ० मदन — इस का राज मि० किटी के पास है । यही बता सकती हैं ।

इन्स्पेक्टर — बतला दीजिए मि० किटी, नहीं तो आप बेकार आफत में फँस जायेंगी ?

डॉ० मदन — तुम्हें बतलाना ही पड़ेगा ।

रोहित — कम से कम दिमाग तो साफ़ हो जायेगा ।

मि० किटी — लेकिन जैक्सन ने कहा था इसे किसी से मत बतलाना ।

[काँपती हुई आवाज से] फिर भी बताती हूँ । आज से आठ दिन पहले की बात है । जैक्सन कैन्सर के दर्द से तड़प रहा था । मैं ने पिछले कई दिनों से उस की शराब बन्द कर दी थी । उस रात शराब के लिए बेचैन वह मेरे कमरे में आया उस ने दरवाजा खोला

[फ्लैक बैक]

मि० किटी — कौन है ?

मि० जैक्सन — मैं हूँ किटी, ··मुझे बहुत तेज दौरा है—बड़ा तेज़ दर्द है । शराब चाहिए शराब । केवल एक घूँट !

मि० किटी — मेरे पास शराब नहीं है, नहीं है, नहीं है !

मि० जैक्सन — लेकिन मुझे थोड़ी-सी चाहिए वही, उतनी ही तेज जो मुझे मुरदा बना दे, मुझ से मेरी जिन्दगी दूर हटा दे ।

	यह ज़िन्दगी, यह सांसें, यह दर्द तो मुझ मे मेरे जिस्म से बेहद चिपके हुए हैं।
मि० किटी	लेकिन डॉक्टर ने मना किया है, मैं तुम्हारी जिद्द पर बराबर देती रही हूं, लेकिन अब नही दूंगी।
मि० जैक्सन	[दर्द से लड़खड़ा कर फर्श पर गिरता हुआ] लेकिन, लेकिन मैं क्या करूं, किटी, मैं बड़ी दूर से भटकता हुआ आ रहा हू। आज रात फिर कुहासे से लदी सुनहली झील की पहाड़ियो से आवाज़ आ रही थी। अरुना बुला रही थी।…उस की वही दर्द-भरी आवाज़—वही
मि० किटी	तुम ने फिर अरुना का नाम लिया। जैक, मेरे सामने उस बदतमीज़, जाहिल, गंवार औरत का नाम मत लो।
मि० जैक्सन	खैर, तुम उसे चाहे जो कहो, मेरे लिए वह आज भी वही है, जो उस दिन थी। मुझे अक्सर लगता है, जैसे उस की आत्मा भटक रही है। मुझे आज भी लगा वह बुला रही है। मैं गया। इस अंधेरी रात में मैं भटकता गया, चलता गया, चलता चला गया। लेकिन जाने क्या बात थी किटी, काफी चलने के बाद जब मैं ने पीछे मुड़ कर देखा तो मुझे लगा, मैं इसी अहाते में पड़ा हूं। काफी देर तक अपनी पहचानी हुई आवाज़ भी मुझे अपरिचित-सी लगती रही—आह, आह, यह दर्द—यह दर्द न तो मेरी जान ही लेता है और न मुझे मुक्त हो कर के छोड़ता है। किटी, एक घूंट दे दो। दे दो किटी, शायद मुझे नींद आ जाये, नींद, नींद किटी।
मि० किटी	[गम्भीर स्वर में शराब उंडेलते हुए] लो, लेकिन

अब फिर मत माँगना। दुनिया समझती है मैं तुम्हें जहर पिला रही हूँ। दुनिया समझती है कि मैं यह सब इस लिए करती हूँ, क्योंकि मुझे तुम से—तुम्हारी जायदाद से बडी मोहब्बत है, उस से बडी लालच है। ' और तुम—तुम समझते हो कि मै और मेरे रूप मे तुम्हारी आत्मा को शान्ति देने की क्षमता नही है। तुम हमेशा यही समझते थे—शायद अब भी यही समझते रहे हो और समझते रहोगे। मुझे कोई रास्ता ढूँढना पडेगा रास्ता।

मि० जैक्सन — मैं ने रास्ता ढूँढ लिया है। एक रास्ता है—एक। आओ—आओ मेरे साथ।

[दोनो की पगध्वनियाँ र बाद]

मि० जैक्सन — देखो, देखो यह मैन होल है। यह रास्ता है। मैं इस के भीतर जा रहा हूँ। महज इस लिए जा रहा हूँ किटी, कि मुझ मे आत्म-हत्या करने की ताकत नही है। मैं इस मैन होल में कूद जाता हूँ। तुम ऊपर से इस लोहे के तवे को लगा दो। मैं जिन्दा दफ़न हो जाऊँगा। मेरी आवाज तुम तक नही पहुँचेगी।

मि० किटी — नही जैक्सन ? यह कर नही सकती जैक, बिलकुल नही रर

मि० जैक्सन — जल्दी करो, जल्दी करो, किटी, अभी मुझ मे हिम्मत है। कही दर्द का दौरा फिर तेज न हो जाये। और अगर ऐसा हुआ तो निश्चय ही मैं फिर कायरता का शिकार हो जाऊँगा। चलो, जल्दी करो। चलो-चलो किटी।

मि० किटी — नही, नही तुम्हे जिन्दा रहना है। चलो जैक, तुम

दरवाज़े की आवाज़

वापस चलो। मैं तुम से कुछ नही कहूगी—कुछ नही कहूँगी, कुछ नही कहूगी जैक्सन, वापस चलो।

मि० जक्सन — अब मैं वापस नही जाऊँगा किटी। यह जिन्दगी जो मुझ से आज चालीस सालो से चिपकी हुई है, मैं इस सब से ऊब चुका हू। यह दर्द, यह नशा, यह शराब जो मुझ से मेरी एक-एक साँस का हिसाब ले रही है, मैं इस से ऊब चुका हूँ किटी, बिलकुल ऊब चुका हू।

मि० किटी — लेकिन इस तरह मरना कमज़ोरी है जैक, चलो, वापस चलो।

[धीरे-धीरे ध्वनियाँ मद्धिम होती है]

मि० किटी — और मैं उसे जबरदस्ती वापस ले आयी। उसे उस के कमरे तक पहुँचा आयी। लेकिन वह बडी देर तक अपने कमरे में पडा सिसकियाँ भर-भर कर रोता रहा। मैं रात-भर उसे उठ-उठ कर देखती रही। लेकिन सुबह को जब मैं आखिरी बार उस के कमरे में गयी तो वह नही था। मुझे फौरन शुब्हा हुआ कि वह हो-न-हो उसी मैन होल में गिर गया होगा। मैं वहाँ गयी, उस लोहे के तवे को उठवाया, उसे ढुँढवाया, लेकिन उस का कोई पता नही चला।

…र — तो तुम्ही ने उसे उस मैन होल में ढकेल दिया होगा?

…० मदन — मेरे पास उस का सबूत है यह जैक्सन का आखिरी ख़त।

० किटी — तुम सब यही तक समझ सकते हो, क्योंकि इस के आगे तुम्हारा दिमाग़ काम भी नही कर सकता। मैं जैक्सन के साथ पिछले तीन सालो से हूँ। मैं ने उस से शादी नही की, क्योंकि वह शादी करना नही चाहता था। मैं ने उस से प्रेम नही किया क्योंकि वह प्रेम करना नही चाहता था। मैं ने उस से नफरत की क्योंकि वह चाहता था कि मैं उस से

नफरत करूँ। · मैं ने वही किया जो वह चाहता था। मैं ने सिर्फ यही नही किया कि उसे मैन होल में वन्द कर दिया। मैं खुद वन्द कर देती ? और तुम समझते हो मैं ने और कुछ नही किया है सिर्फ उस की हत्या ही की है ? शायद तुम जो सोच रहे हो गलत होते हुए भी सही हो ? तो मुझे मजूर है।···वोलो मैं क्या करूँ ? ·

डॉ० मदन	मि० इन्स्पेक्टर, इन्हे कैद कर लिया जाये। जैक्सन की हत्या का पता मि० किटी से ही लगेगा। यही-सिर्फ यही उस रहस्य को जानती है।

मि० किटी	और तुम से डॉ० मदन—तुम जो मुझ से शादी करना चाहते थे, तुम जो जी से जैक्सन को नफरत करते थे, लेकिन ऊपर से कृतज्ञता प्रकट करते थे, क्योकि तुम जैक्सन की दया के वोझ से दवे हुए थे—तुम ?

इन्स्पेक्टर	इस का फैसला यहाँ नही हो सकता मि० किटी, आप हिरासत में हैं, चलें।

मि० किटी	लेकिन मेरा जुर्म ?

इन्स्पेक्टर	मि० जैक्सन की हत्या !

डॉ० मदन	मैं भी चलता हूँ इन्स्पेक्टर, मेरा अव यहाँ कोई काम नही है।

[पुलिस वैन के स्टार्ट की ध्वनि धीरे-धीरे विलीन हो जाती है]

[सहसा दरवाजे पर फिर दस्तकों की ध्वनि]

मि० जैक्सन	खोलो, दरवाजा खोलो। मैं हूँ, मैं मैन होल से वापस आ रहा हूँ। हूँ हैं हैं 'अरे, सव वापस चले गये। कोई नही है।

रोहित	कौन ? कौन हो तुम ?

मि० जेक्सन	. मैं, मैं जैक्सन हूँ। [रश्मि की तरफ इशारा करते हुए] तुम, तुम कौन हो ?
रश्मि	मैं, मैं रश्मि हूँ।
मि० जेक्सन	रश्मि ? [ग़ौर से सोच कर] रश्मि, नहीं नहीं। तुम रश्मि नहीं हो ? तुम—तुम ठीक अरुना-जैसी हो—अरुना
रश्मि	[डर कर] रोहित, रोहित, देखो यह क्या कहता है ?
मि० जैक्सन	मैं मैं बिल्कुल ठीक कहता हूँ, तुम—तुम अरुना हो अरुना! ··अरुना, जल्दी करो जल्दी। मेरी साँसें टूट रही हैं। मेरी आँखों के सामने धुँधलका छाया जा रहा है। आठ दिनों तक इस अन्धकार में लगातार भटकने से मेरा दर्द मुझ से रूठ गया है अरुना, अरुना, अरुनाऽऽ। आओ मेरे नज़दीक आओ अरुना! मैं चल नहीं सकता अरुना, यक़ीन मानो अरुना!! ·
रोहित	जाओ, नज़दीक जाओ रश्मि!
मि० जैक्सन	[कराहते हुए] आठ दिनों तक लगातार भटकने से मुझे एक नयी रोशनी मिली है। शायद पहचानने की ताक़त इस अन्धकार में ही होती है। आओ, मेरे नज़दीक आओ अरुना।··
रश्मि	लेकिन मैं अरुना नहीं रश्मि हूँ—रश्मि
रोहित	फिर भी क्या हुआ रश्मि, जाओ, शायद किसी मरते हुए व्यक्ति के जीवन में भ्रम के माध्यम से ही तुम कोई सत्य दे सको, जाओ।
मि० जैक्सन	कौन कहता है मैं मर रहा हूँ · देखो, देखो, मेरी तरफ़ देखो, मेरा दर्द मुझ से अलग है। इस नयी रोशनी में मैं मर नहीं सकता। अरुना, मेरे सिर पर हाथ रखो, झिझको नहीं, डरो

नहो, मै मुरदा नही हूँ, मै प्रेत नही हूं, मैं जिन्दा आदमी हूं, आदमी ।

[धीरे-धीरे कर के उस की साँस समाप्त हो जाती है]

रश्मि — [चीखकर] रोहित, रोहित यह क्या हो गया रोहित ! मि० जैक्सन, मि० जैक्सन

मि० जेक्सन — [बेहोशी की हालत में] यह फीकी हलकी रोशनी जो मुझे पिछले आठ दिनो की भटकन मे मिली है ' मै उस से अलग नही हो सकता ।

रोहित — [फोन करते हुए] डबल थ्री फ़ोर फाइव प्लीज, यस'''पुलिस थाना, यस ' मि० जैक्सन इज हियर—यस ही इज हियर डेड ।

मि० जैक्सन — कौन कहता है मै मुरदा हूं ? अरुना, अरुना, मुझे रोशनी मिल गयी है अरुना, रोशनी ' रो ऽऽऽ श ऽऽऽ न ऽऽ ी ऽऽऽ ।

[धीरे-धीरे साँसें समाप्त हो जाती है]

■ ■